मैथिलीक नव कविता

सम्पादक

रामकृष्ण झा 'किसुन'

मैथिलीक नव कविता

सम्पादक

रामकृष्ण झा 'किसुन'

किसुन संकल्प लोक

सुपौल

मैथिलीक नव कविता
सम्पादक : रामकृष्ण झा 'किसुन'

पहिल संस्करण : जनवरी, 1971

दोसर संस्करण : 2022

मूल्य : 200/- टाका

आवरण : (कोलाज : कविक हस्ताक्षर)

संयोजन : केदार कानन
रमण कुमार सिंह

प्रकाशक :
किसुन संकल्प लोक, किसुन कुटीर, गुदरी बाजार, सुपौल-852131
E-mail : kedarkanan3@gmail.com
मो. : 09471062706 / 7004917511

ले-आउट : हर्ष कंप्यूटर्स, दिल्ली-86 (मो. 7011503212)

मुद्रक : आर.के. ऑफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

पुस्तक प्राप्ति स्थान :
- किसुन कुटीर, गुंदरी बाजार, सुपौल-852131 (बिहार)
- शेखर प्रकाशन, प्रथम तल, भुवनेश्वर प्लाजा, न्यू मार्केट, पटना-800001

MAITHILIK NAV KAVITA : A Collection of Maithili Poems
Edited by Ramkrishna Jha 'Kisun'
Rs. 200/-

मैथिलीक
असाधारण प्रतिभावान कवि
राजकमल चौधरीकें
जनिक अन्तिम साहित्यिक मंच
सुपौल रहलनि।

एकावन बर्खक बाद मैथिलीक नवकविता

मैथिलीक नवकविताक सेमिनार फरवरी, 1967 मे सम्पन्न भेल छल। ई सेमिनार सुपौलक ऐतिहासिक विलियम्स उच्च विद्यालयक प्रांगण मे भेल छल। द्विदिवसीय कार्यक्रम। अस्वस्थ आ अनेक तरहें व्यस्त रहितो रामकृष्ण झा 'किसुन' अगस्त, 1966 सँ निरन्तर एहि सेमिनार, नवकविता संकलन आ नवकविताक व्याख्यामूलक निबंध संकलनक विषय मे सोचि रहल छलाह। मैथिली मे ई एक नव घटना घटित भ' रहल छलैक। अद्‌भुत तँ ई थिक जे यात्रीजी पर्यन्त एहि विषय मे तखन नहि सोचि रहल छलाह, जखन किसुनजीक मानस मे एहि प्रकारक चिन्तन-मनन चलि रहल छलनि।

प्रत्येक साँझ पं. रामानुग्रह झा किसुनजी लग अबैत छलाह। ई हुनक नियमित कार्यक्रम छलनि। नियमित साहित्यिक गोष्ठी। कोनो ने कोनो विषय पर विचार-विमर्श आ बहस। सभक मूल मे मैथिलीक उत्कर्ष, मैथिलीक विकास-भावना। नवकविता सेमिनारक विषय मे जतेक पक्ष छल, सभ पर विचार विमर्श भ' रहल छल। नव कविलोकनि केँ चिह्नित कयल जा रहल छलनि आ सम्पर्क करबाक निर्णय आ तकरा बाद सघन पत्राचार आरंभ कयल जा रहल छल।

23 सितंबर'66क अपन एक पत्र मे किसुनजी जीवकान्तजी केँ लिखलनि- 'एम्हर मिहिर मे श्री मायानन्दक आधुनिक कविता पर एक टा निबंध गेलनि अछि। 28.9 केँ रेडियो सँ 'मैथिली कविताक नवीन दिशा' पर हमर वार्त्ता अछि। ओकर विस्तार क' मिहिर मे देबाक विचार अछि। श्री रामानुग्रहक 'बिम्ब' पर निबंध तैयार भ' रहल अछि। नवकविता पर अहूँक एक टा निबंध चाही। प्रत्येक मास एहि तरहक निबंध रहय ई आवश्यक।'

किसुनजी जाहि टीम-भावनाक संग नवता आ ओकर सांगोपांग व्याख्याक संग जुड़ल छलाह से हुनक दूरदृष्टिक प्रमाण थिक। ओ एक्के संग अनेक कवि आ लेखक केँ एहि विषय मे पत्र द्वारा चरिअबैत रहैत छलाह। किसुनजीक

एहि पत्रक उत्तर मे जीवकान्तजी अपन 26 सितंबर'66क पत्र मे लिखलनि—'नवकविताक व्याख्या आ विश्लेषण हेबाक चाही। हमरो विश्वास अछि जे नवकविता आब आत्म-रक्षा आ हीन-भावनाक लहरि सँ बहार भ' गेल अछि। मुदा ओकर प्रवृत्ति, मूल भावना आ विशेषताक व्याख्या आ मूल्यांकन हैब बांकिए छैक...से आब हेबाक चाही, तकर क्षण आबि गेल छैक।...नवकविताक विश्लेषण-यज्ञ मे अपने हमरो आह्वान करैत छी, से हमरा नीक लागल अछि। मुदा, एखन हमरा एकदमे फुर्सति नहि अछि। ओना हमर अपन बड्ड सेहन्ता अछि जे गंभीरतापूर्वक नवकविताक विश्लेषण-मूल्यांकन करी ... तें एक टा एहन मुहूर्त्तक प्रतीक्षा मे छी जखन अपन सेहन्ता पूरा क' सकब आ नवकविताक मूल्यांकनक प्रति जे अपन दायित्व अनुभव करैत छी, ताहि सँ मुक्त भ' सकब।'

प्रत्येक साँझ किसुनजीक संग एहि पर अनेक प्रकारक विचार-विमर्श मे पं. रामानुग्रह झा सम्मिलित रहैत छलाह। एहि नवकविता-सम्मेलन पर भेल विमर्शक प्रभाव ग्रहण क' रामानुग्रहजी जीवकान्तजीक अपन 29 सितंबर'66क एक पत्र मे लिखैत छथि—'मैथिलीक हेतु नवकविता आ कथा पर किछु आलोचनात्मक कार्य करबाक हेतु प्रयत्नशील छी। श्री किसुनजी सँ ज्ञात भेल जे एहि मे अपनेक सहयोग हमरालोकनि केँ भेटत। हमरालोकनि नवकविताक पक्षधर कविलोकनि सँ (यथा सर्वश्री राजकमल, जे सम्प्रति गामहि छथि तथा सोमदेव, मायानन्द, धीरेन्द्र, बालेश्वर प्रभृति सँ) एतद्विषयक पत्राचार कयने छी आ आशा जे ओहो सब अपन सहयोग देबे करताह। हमरा जनैत नवकविताक एक टा प्रतिनिधि संकलनक बड़ आवश्यकता छैक। ओ जँ नवकविक काव्य-विषयक वक्तव्य सँ युक्त हो, तँ से नीक। कारण जे, अनर्गल आ प्रहेलिकामूलक कविताक दुखद बाढ़ि एतावता नियंत्रित भ' सकैछ। दोसर गप ई जे तथाकथित परम्परावादीक हेतु जे नव युगबोधक समस्या, तकर न्यूनाधिक समाधान आ नव साहित्यक उचित आलोचनाक बाट प्रशस्त भ' सकतैक। आ ई काज अपरम्परावादिये सँ संभव। विशेष योजनाक यथासमय आशा करी, से निवेदन।'

स्मरणीय थिक जे रामानुग्रह जीक ई पहिले पत्र छल जीवकान्तजीक नामे। इहो ध्यान देबाक थिक जे रामानुग्रहजीक सासुर ड्योढ़े छलनि आ सम्बन्धें जीवकान्तजी ससुर सेहो लगैत छलखिन।

28 सितंबर'66क एक पत्र मे जीवकान्तजी किसुनजी केँ लिखैत छथि—'...सुनल अछि जे सुपौल मे नवकविता पर एक टा परिगोष्ठी आयोजित भ' रहल अछि। जँ ई समाचार सत्य, तँ ई अपनेक संयोजन हैत, से निर्विवाद...नीक विचार अछि। नवकविताक शक्ति जे विकेन्द्रित छैक आ नवकविताक विषय मे जे कुहेसावृत्त संस्कार छैक, से सभ दूर भ' सकत। परिगोष्ठीक पूर्ण विवरण जनबाक लेल उत्सुक छी।'

ई 28 सितंबर बला पत्र तावत हुनका नहि भेटल छलनि। एहि बीच 30 सितंबर' 66केँ एक पत्र मे किसुनजी जीवकान्त जी केँ नवकविता सम्बन्धी योजनाक विषय मे लिखलनि—'हमर विचार अछि जे सुपौल मे मैथिलीक नवकविता लिखनिहार कवि लोकनि एक मंच पर समवेत होथि आ एक टा संकलन सवक्तव्य प्रकाशित होमक चाही, तकर योजना बनय, कार्यान्वयन हो। विश्वास अछि, अहूँ एकर आवश्यकताक अनुभव करैत हैब। श्री राजकमल गामहि छथि। कनेको नीक होइतहि हम भेंट करबनि। श्री धूमकेतु, श्री धीरेन्द्र, श्री सोमदेव, श्री रामदेव प्रभृति केँ सेहो पत्र देलियनि अछि। श्री रामानुग्रह सँ सेहो चर्चा कैल तँ ओहो सहमत छथि। अहाँक पूर्ण आ सक्रिय सहयोग एहि मे भेटत से स्वाभाविके।'

25 सितंबर, 1966क लगपास ओ अपन एक शिक्षक सहयोगी श्री विद्यानन्द प्रसाद सिंहक संग मोटर साइकिल सँ शिक्षक संघक कार्य समितिक बैसक मे सहरसा गेलाह। सहरसा सँ घुरला पर सुखपुर मे, जे सुपौलेक एक टा गाम थिक, मोटरसाइकिल दुर्घटनाग्रस्त भ' गेल आ विद्यानन्द बाबूक संगहि किसुनजी सेहो खसि पड़लाह। ठेहुनक हड्डी तँ नहि टूटल रहनि मुदा चोट एतेक गंभीर रहनि, जे लगभग एक-डेढ़ मास धरि ओछाइन धयने रहय पड़लनि।

3 अक्तूबर'66क एक पत्र मे जीवकान्तजी किसुनजी केँ लिखलनि—'गत 3.9 केँ हम लहेरियासराय गेल रही। ओहिठाम सोमदेवक बासा पर प्रो. रामदेव सँ सेहो भेंट भेल। ईहो दुनूलोकनि अहाँक नवकविता सँ सम्बधित वार्त्ता रेडियो पर सुनलनि। दुनू गोटे अहाँवला कार्ड देखौलनि : नवकविताक परिगोष्ठीक विषय मे। ओहि सँ पूर्व सोमदेव हमरा लिखने छलाह, एहि परिगोष्ठीक विषय मे। हम तँ प्रस्तुत छीहे, ओहो लोकनि प्रस्तुत छथि। विस्तृत कार्यक्रमक विवरणक प्रतीक्षा मे छी। वास्तव मे एहन वस्तुक

आवश्यकताक अनुभव हमहूँ करैत छलहुँ। अपनेक संयोजनक कष्ट लेल धन्यवाद।.... मोटर साइकिल दुर्घटना मे अपनेक कष्टभोगक लेल सहानुभूति अछि, आशा अछि आब स्वस्थ हैब।'

जीवकान्त जीक दू-तीन गोट पत्रक उत्तर दैत किसुनजी 6 अक्टूबर'66कें लिखलनि—'नवकविताक विश्लेषण-यज्ञ-वस्तुत: ई बड़ उपयुक्त संज्ञा अहाँ अपना पत्र मे देल अछि—हमरा बुझने आब बड़ आवश्यक अछि। एकर अध्वर्यु अहूँ होइ, अहूँ छी, तें एहि लेल पलखति तँ बहार करहि पड़त।... आब चाही पूर्ण व्याख्या, स्वीकार आ तकर विश्लेषण, संस्थापन-मूल्यांकन। से सब गोटय जाधरि मिलि-जुलि क' नहि करब ताधरि पथ-प्रशस्त कोना हैत? हमरा तँ ई पढ़िये क' भरोस भ' गेल जे नवकविताक मूल्यांकनक प्रति अपन दायित्वक अनुभव क' लेने छी। सेहंता पूरा करबाक मुहूर्त्तक प्रतीक्षा अहाँक संगे आब हमरो भ' गेल अछि।'

जीवकान्तजी एहि पत्रक उत्तर दैत अपन 11 अक्तूबर'66क पत्र मे किसुनजी कें लिखैत छथि—'अपनेक योजना आ संकल्प पर विश्वास अछि जे आब परिगोष्ठी भैये क' रहत। एहि मे एक टा विषय-सूची बनबाओल जाय आ विषय सभ कें बाँटि देल जाय अथवा परिचर्चा जकाँ एक टा प्रश्नावली घुरा देल जाय। संगे सभ प्रतिनिधि कविक कम सँ कम तीन-तीनटा कविता ल'क' संकलन तैयार कयल जाय, वक्तव्य सहित। ई प्रयास आ ग्रंथ ऐतिहासिक महत्त्वक होयत।'

पुन: 1 नवम्बर'66क पत्र मे जीवकान्तजी किसुनजी कें लिखैत छथि—'...गोष्ठी। कोनो आवश्यक नहि जे गोष्ठी काल्हिए भ' जाय। होअय अवश्य आ होअय नीक जकाँ, ठाठसँ... भने एहि मे चारि-छौ मास लागि जाय। कर्तृत्वक महत्त्व छैक, दू-चारि मासक कोनो महत्त्व नहि।'

किसुनजी आनो कविलोकनि सँ एहि प्रसंग निरन्तर पत्र द्वारा सम्पर्क क' रहल छलाह। एहि प्रसंग धूमकेतु जी अपन 7 अक्तूबर'66क पत्र मे किसुनजी कें लिखलनि—'आयोजनक विचार हमरा बड्ड पसिन्न पड़ल। समय नवम्बरे नीक। जाड़-ठाड़ सेहो ने आ सभ कें छुटियो। जनवरी त हमरा अनुकूल नहि हयत। कार्यक्रमक विषय मे, कनेक विस्तार सँ जान' चाहैत छी। हमर कोन तरहक 'सक्रियता' सँ अपने कें सन्तोष हयत? डाकक मार्फत आगू गप्प चालू राखल जाय।'

सोमदेव जी अपन 5 अक्तूबर'66क पत्र मे किसुनजी कें पत्रोत्तर दैत लिखलनि—'मैथिली कविताक नव दिशा सम्बद्ध कोनो तरहक सम्मेलन मे हमर सभ तरहक सहयोग (जौं एकर अर्थ उपयोग नहि हो!) सर्वदा अपनेक चरण तल मे प्रस्तुत रहत। समय निश्चित क' शीघ्र सूचित करू। रूपरेखा पठाउ।

राजकमल, धीरेन्द्र, हंसराज, ताराकान्त प्रकाश, बालेश्वर, धूमकेतु, अणु (बहेड़ा), रामानन्द रेणु, जीवकान्त, मायानन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रामदेव झा आर किछु नव नाम कें सूचना अवश्य पठा देल जाओ। आर विवरण पठाउ, तखन हम अपन आर विचार देब। मुदा, कोनो तरहक सम्मेलन पूर्ण प्रतिनिधि सम्मेलन हो आधुनिक मैथिली कविताक।'

नवकविक रूप मे अनेक कविक नामावली किसुनजी लग अबैत छलनि। ओ प्रत्येक नाम पर गंभीरतापूर्वक सोचैत छलाह, आत्ममंथन करैत छलाह। मुदा अंतिम निर्णय ओ अपन विवेक सँ कयलनि। ओहि संकलित कवि मे सँ बाद मे जा कए अनेक कवि अपन दिशा बदलि लेलनि, ई अलग बात थिक।

मोटर साइकिल दुर्घटनाक समाचार जखन सोमदेवजी कें भेटलनि तँ ओ 16 नवम्बर'66कें एक पत्र किसुनजी कें पठौलनि—'अपनेक समाचार सुनि दुख भेल, कोनो आश्चर्य नहि—कारण आधुनिक कविताक उपासक मोटर साइकिल सँ नहि टकराओत तँ कि बैलगाड़ी सँ ओझराओत?

जहिया अपने सम्मेलन करी, हम तत्पर रहब। मात्र 25 दिन पूर्व सूचित क' देब, जाहि सँ किछु लिखि सकी।'

एहि तरहें किसुनजी सभतरि पत्राचार करैत रहलाह आ आयोजनक तैयारी मे निरन्तर व्यस्त रहलाह। अपन 14 जनवरी'67क पत्र मे कार्यक्रमक सूचना अन्य अनेक कविक संग जीवकान्तजी कें सेहो पठौलनि—'कार्यक्रमक सूचना जा रहल अछि। अपन विचार लिखी से अनुरोध। निबंधक विषय-सूची पठा रहल छी—मैथिली नवकविताक उद्‌भव ओ विकास, नवकविताक परिवेश आ युगबोध, नवकविक सामाजिक दायित्व, नवकविता मे चित्रित मनुष्य, नवकविता मे बिम्ब-विधान, नवकविता मे प्रतीक विधान, नवकविता मे सौन्दर्य-बोध, परम्परा आ प्रयोग, नवकविता पर पाश्चात्य प्रभाव, नवकविता मे प्रकृति-चित्रण, नवकविता मे प्रणय-चित्रण, नवकविता मे भाषा आ शब्दप्रयोग,

नवकविता मे पछिला पीढ़ीक योगदान, नवकविताक साधारणीकरण, रसवाद, नवकविताक मूल्यांकनक समस्या, नवकविताक वर्तमान आ भविष्य आदि-आदि। एहने विषय पर निबंध अपेक्षित अछि।

सर्वश्री यात्री, राजकमल, मायानन्द, अहाँ, धूमकेतु, धीरेन्द्र, रामदेव, सोमदेव, हंसराज, रवीन्द्रनाथ, मधुकर गंगाधर, कीर्त्तिनारायण मिश्र, बालेश्वर, ताराकान्त प्रकाश, श्रीकान्त मिश्र, रमानन्द रेणु, मार्कण्डेय प्रवासी, रघुपति राघव केँ पत्र द' रहल छियनि। जँ कोनो नाम छूटि गेल हो तँ से लिखी। आरो जे विचार-सुझाव एहि प्रसंग हो शीघ्र लिखू।'

एहि कार्यक्रमक आमंत्रण-पत्र एहि तरहें छल—'राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला समितिक तत्वावधान मे ओकर सांस्कृतिक उपसमितिक आयोजनानुसार दिनांक 5.2.67, रवि केँ मैथिली कवि-सम्मेलन तथा 6.2.67, सोम केँ सर्वभाषा कवि-सम्मेलनक आयोजन अछि। विनीत निवेदन जे एहि मे सम्मिलित भ' एहि राष्ट्रीय ओ साहित्यिक आयोजन केँ सफल बनयबा मे सहयोग देल जाय। कृपया शीघ्र अपन स्वीकृति पठौल जाय।

सांस्कृतिक विभाग केँ बहुत अल्प टाका छैक तें यातायात मार्गव्ययक संक्षिप्त प्रबंध अछि। साधन अल्प मनोरथ बेसी। मार्ग-व्यय एत्तहि देल जायत।

विनयावनत—श्री रामकृष्ण झा, संयोजक, सांस्कृतिक उपसमिति।'

स्मरणीय जे तखन राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला, सुपौलक पदाधिकारीगण रहथि- श्री आर.सी. प्रसाद, आइ.ए.एस, जिलाधिकारी, सहर्षा- अध्यक्ष, श्री शिवप्रिय, अनुमंडलाधिकारी, सुपौल-उपाध्यक्ष, श्री आनन्द मोहन दास, अधिवक्ता, मंत्री, श्री गोपाल चन्द्र पुगलिया, सचिव, व्यापार संघ आ श्री गोपाल चन्द्र प्रसाद, अधिवक्ता-संयुक्त मंत्री, श्री रामकृष्ण झा 'किसुन' - सहायक मंत्री, श्री लक्ष्मण चौधरी, अवैतनिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणी, श्री लक्ष्मी प्रसाद सिंह, अवैतनिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणी-सह-उपाध्यक्ष, अधिसूचित क्षेत्र, श्री कमलनारायण झा. अधिवक्ता, श्री वीरवरनारायण सिंह, अधिवक्ता आ डॉ. सुधीर कुमार मुखर्जी- कार्यसमितिक सदस्य तथा श्री मोती प्रसाद अग्रवाल, सचिव, व्यापार संघ-अंकेक्षक।

एहि आमंत्रणक संग किसुनजी जीवकान्तजी केँ एही तिथि मे एक आरो

पत्र देने रहथि, जाहि मे कार्यक्रमक विषय मे विस्तृत सूचना छल। ओ पत्र एना अछि—'मेला दिस सँ निमंत्रण पठा रहल छी। हमर विचार अछि जे मैथिली मे नवकविता लिखनिहार समस्त कविगण एक मंच पर समवेत होथि आ एक टा ऐतिहासिक महत्त्वक कार्य करक आयोजन हो। तें हम अपना दायित्व पर नवकविता लिखनिहार सब कवि केँ अयबाक आग्रह क' रहल छियनि।

अनुरोध जे 4.2.67क साँझ धरि सुपौल अवश्य पहुँचि जाइ।

कार्यक्रम निम्नलिखित अछि—5.2.67 तथा 6.2.67केँ - दिनुका 8 सँ 11 बजे धरि- मैथिलीक नवकविताक सम्बन्ध मे निबंध पाठ। दुपहरियाक 2 सँ 4 धरि-निबंध संकलन, प्रकाशन आदिक प्रसंग विचार गोष्ठी। साँझक 7 बजे सँ कवि-सम्मेलन।

हमर ई विशेष आग्रह जे यथासंभव एक टा अनतिदीर्घ निबंध गोष्ठी मे पाठ करक हेतु लिखि क' नेने आबी, जाहि मे मैथिलीक नवकविताक सम्बन्ध मे अपन विचार आ दृष्टिकोणात्मक वक्तव्य स्फुट हो। जँ नहि हो तथापि आबी धरि अवश्य।

पत्रोत्तर, सुझाव आ स्वीकृति अविलंब पठौल जाय। कार्यक्रम पसिन्न कि ने? जँ कथंचित कोनो अनिवार्य कारणवश नहि आबि सकी तँ अपन संदेश धरि अवश्य आ शीघ्र पठाबी।'

श्री रमानन्द रेणु अपन 18 जनवरी'67क पत्र मे किसुन जी केँ लिखलनि—'सांस्कृतिक आयोजन आ नवकविताक संदर्भ मे, अत्यन्त हर्षक विषय। पूर्व सूचना भेटत, तखन कोना नहि आयब? आयब आ अवस्स। अपनेक निर्देशानुसार सभ वस्तुक संगहि आयब।

मातृभाषा मैथिली मे, नवकविताक सम्बन्ध मे वस्तुस्थितिक स्पष्टीकरण होयब बड़ आवश्यक छल, तें एहि आयोजनक हेतु अपनेक आभार। विचार संकलनक प्रकाशन स्तुत्य। समग्ररूपें विचार-विनिमय क' सामीप्यक प्रयास अनिवार्य छैक। आ से नहि भ' रहल छल।'

अपन 19 जनवरी'67क पत्र मे सोमदेवजी सेमिनार मे सम्मिलित नहि भ' सकबाक कारणक उल्लेख करैत लिखैत छथि—'अपनेक निमंत्रण भेटल। धन्यवाद। हम सम्मिलित नहि होएब'—लिखैत कष्ट भ' रहल अछि, किन्तु हर्षक विषय जे 5 तारीख केँ हमर बहिनक विवाह निश्चित भेलनि अछि।

तदर्थ, हम अपन विचार संक्षेप मे पठा देब।

एहि बेरक गोष्ठीक बाद प्रयास करू जे एक टा नव कविता संकलन 'तार सप्तक' जकाँ बहार भ' सकय। व्यक्ति, विचार, कविता। तीनू। अपनेक प्रत्येक डेग मे हमर आस्था अछि, अपनेक कर्मठता गुणें।'

तहिना 20 जनवरी'67क पत्र मे श्री कीर्त्तिनारायणजी लिखलनि—'मैथिली मे नवकविता लिखनिहार समस्त कविगण केँ एक मंच पर समवेत करबाक अपनेक प्रयास केर हम हार्दिक सराहना करैत छी। एहि ऐतिहासिक महत्त्वक अनुष्ठानक लेल हमर पूर्ण सहयोग अपने केँ प्राप्त हैत। आत्यन्तिक रूप सँ व्यस्त रहितो हम अपनेक आयोजन मे भाग लेबाक निश्चय कए चुकल छी। राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला समिति द्वारा आयोजित कवि-सम्मेलन मे तँ हम भाग लेबे करब, मैथिली नवकविताक परिवेश आ युगबोध पर निबंध पाठ सेहो करब।'

नवकविता सेमिनार 5 आ 6 फरवरी'67 केँ सफलतापूर्वक सम्पन्न भेल। सुपौलक बौद्धिक जनसमुदायक अद्भुत भागीदारी छल एहि आयोजन मे। जीवकान्त जी 18 फरवरी 67 केँ अपन एक सर्वेक्षण मे, एहि नवकविता सेमिनारक विषय मे टिप्पणी करैत लिखैत छथि—'...एहि ऐतिहासिक अनुष्ठानक श्रेय भेटल ओहिठामक राष्ट्रीय सार्वजनिक मेलाक आयोजक लोकनि केँ आ ओहि मे सब सँ बेसी श्री रामकृष्ण झा किसुन केँ, जे सहरसा जिलाक समस्त राष्ट्रीय आ सांस्कृतिक जागरणक प्रतीक आ ओकर मशाल छथि। ओहि सम्मेलन मे श्री धीरेन्द्र एकबेर बजलाह जे जे आयोजन दरभंगा, मधुबनी, पटना अथवा कलकत्ता मे नहि भ' सकल, से आइ सुपौल मे भ' रहल अछि। एहि सेमिनार मे मैथिलीक नवकविता लिखनिहार कवि समान रूपें सहयोग देलनि। एहि मे भाग लेलनि श्री राजकमल चौधरी, प्रो. धीरेन्द्र, जीवकान्त, श्री रमानन्द रेणु, श्री कीर्त्तिनारायण मिश्र, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, श्री वैद्यनाथ झा आ श्री रामकृष्ण झा 'किसुन'। कविलोकनि नवकविताक स्थापना करैत अपन-अपन भिन्न-भिन्न आलेख पढ़लनि। नवपीढ़ीक सशक्त आलोचक श्री रामानुग्रह झा अपन विशिष्ट निबंधक पाठ कयलनि ... आ जे कवि नहियो आबि क' समस्त आयोजन केँ अपन उपस्थितिक बोध करबैत रहलाह, से छलाह कवि धूमकेतु। हिनक कविता 'ई नहि, हे प्राण बन्धु!' प्रो. धीरेन्द्रक मुहें सुनि समस्त श्रोता दू-दू बेर कानल।... एक नवीन संभावनाक

जन्म भेल जे समस्त साहित्यिक लोकनि एक्के कुटुम्बक अंग छथि, तें ने कोनो औपचारिकता, आ ने छल, आरोपण, हाथी-दाँतक कोनो मीनार नहि। साधारण लोक, साधारण व्यवहार। स्वाभाविकता, सहजता।

ई सेमिनार मैथिलीक नवकविताक जतेक विश्लेषण क' सकल, ओहि सँ बेसी मैथिली-साहित्यक प्रचार कयलक। मैथिलीक लेल एक टा आह्लाद आ आकर्षण उत्पन्न क' सकल। संगहि, मैथिली पुस्तक-प्रदर्शनी मैथिलीक आन्दोलनक एक अविभाज्य अंग छल। ओतुक्का जनता मैथिलीक नवकविता पर निबंधे नहि सुनलक, वरन मैथिलीक अनेकानेक प्रकाशन उदारतया कीनिक' एहि प्रकारक सभ आयोजन मे भाग लेनिहार लोकक मार्ग प्रदर्शन कयलक।'

एहि नवकविता सेमिनारक द्विदिवसीय आयोजन मे समस्त नवकविलोकनिक वक्तव्यक संग प्रतिनिधि कविताक संग्रह आ नवकविताक स्थापना सम्बन्धी वैचारिक निबंधक एक संकलन प्रकाशित करबाक निर्णय लेल गेल। राजकमल चौधरी आ रामकृष्ण झा 'किसुन'क सम्पादन मे एकर प्रकाशन हो—तकर निर्णय कयल गेल छल।

मुदा, कालक निर्णय केँ के टारि सकैत अछि? एहि आयोजनक चारि मासक बादे राजकमल चौधरीक असामयिक निधन भ' गेलनि। समस्त साहित्य-संसार शोकाकुल भ' उठल। आब दू सम्पादक मे सँ एक बचल रहथि किसुनजी। किसुनजी प्राणपण सँ दुनू पोथीक प्रकाशनक ओरिआओन मे लागि गेलाह। फेर सघन पत्राचार प्रारंभ कयलनि आ लगभग 1969क अंत आ 1970क प्रारंभ धरि हुनका समस्त प्रकाशन-सामग्री भेटि सकलनि।

समारोहक बाद अपन 11 फरवरी'67क पत्र मे सोमदेवजी किसुनजी केँ लिखलनि—'रेणुजी सँ समारोहक सफलताक पता चलल, बधाइ स्वीकार करू। हम विवाह मे ततेक व्यस्त भ' गेलहुँ जे रचनो नहि पठा सकलहुँ। यथाशीघ्र सभ वस्तु पठा देब। दुनू पोथी छपब अत्यावश्यक।

कोनो अति नवीन गीति व्यक्तित्व अथवा छद्मवेशी परम्परावादी केँ कथमपि सम्मिलित नहि करब। नवीनतावादीक बीच एक टा लीडर केर कमी छल, से आब अहाँक नेतृत्व सँ पूर्ण भ' गेल अछि। हमर सभ तरहक सहयोग तथा अनुगमन समर्पित अछि।'

नवकविता सेमिनारक बाद जीवकान्तजी सुपौल सँ गेलाक बाद किसुनजी

केँ एक पत्र 13 फरवरी'67 केँ पठौलनि—'एखन निरमली प्रतीक्षालय सँ लिखि रहल छी। .....ई यात्रा, जाहि मे साहित्य, धर्म, कुटुम्ब आ संगे-संग लेखकक परिवारक संभावना उदित भेल अछि, आजन्म स्मरण रहत। महानाशक छाउर सँ जनम लैत नवीन सहरसाक जन्म भ' रहल अछि। अपनेक स्नेह आ सौहार्द्र चिरकाल धरि स्मरण रहत।'

एकर उत्तर दैत किसुनजी अपन 18 फरवरी' 67क पत्र मे जीवकान्तजी केँ लिखैत छथि—'निरमली प्रतीक्षालय सँ लिखल स्नेह पत्र भेटल। कोना गाम पहुँचल हैब से चिन्ता बनल छल। हमरालोकनि एक्के परिवारक छी—ई बोध एहि आयोजन मे सभ सँ बेसी भेल। तें ने श्री धूमकेतुक 'ई नहि' कना देलक?'

यात्रीजी अपन 22 मार्च'67क एक पत्र मे किसुनजी केँ लिखलनि—'सुपौल बला समारोह बड़ बढ़िया भेल से समाचार हमरा धरि दरिभंगे मे पहुँचि गेल छल। ई सबटा अहींक तपस्याक फल छल। हमरा नहि जा भेल, तकर कचोट रहबे करत। निबंधावली जेना-तेना अविलंब प्रकाशित हो, तदर्थ आयास अहाँक रहबे करत...।'

पुनः ओ अपन 5 दिसंबर'68क पत्र मे लिखलनि—'विशेष आहे-माहे पछाति लिखब। तत्काल सूचनार्थ एतबे लिखबाक अछि जे 'मैथिलीक नवीन साहित्य' वला संकलन मे हमरा तूरक कोनो साहित्यकारक रचना नहि रखिअइ। हमर ई निश्चित विचार। फेर लिखब।'

एहि सेमिनार केँ सफल बनयबा लेल स्थानीय मेलाक मंत्री आनन्द मोहन दास (प्रसिद्ध मदन बाबू)क योगदान केँ किन्नहु नहि बिसरल जा सकैत अछि। ओ जँ उदारतापूर्वक किसुनजीक एहि आयोजन मे सहयोग नहि करितथि तँ एकर सफलता संदिग्ध रहैत। ओहि सेमिनार, कवि-सम्मेलन आ मेलाक एहन अनेक मनोरंजक संस्मरण सभ अछि जे मैथिली मे विभिन्न ठाम प्रकाशित अछि।

एहि तरहें ई सम्मेलन सम्पन्न भेल आ 1970 मे 'मैथिलीक नवकविता' नामक पोथीक पांडुलिपि सुपौलक जनसहयोग प्रेस मे प्रकाशनक निमित्त गेल। कम्पोजिटर रहथि मल्लिकजी, ओ मुंशी रघुनन्दन दासक नाति रहथि। ओ अपन संपूर्ण जीवन सुपौले मे बिता देलनि। ओ कम्पोजिंगो करथि आ मशीनो चलबथि। ओ द्रुतगतियें काज करबाक अभ्यासी रहथि।

किसुनजी लगभग सभटा काज क' लेने रहथि, प्रूफक किछु काज मात्र बचल छलनि। तावत महाकाल हुनको हमरा सभक बीच सँ उठा लेलक आ अन्ततः पं. रामानुग्रह झाक प्रयाससें 1971 मे पोथी बहरा सकल। नवकविता पर केन्द्रित निबंधक संकलन कालक गर्भ मे रहिए गेल....।

ई प्रथमतः एक हजार प्रति छपल छल, जनवरी 1971 ई. मे। मूल्य छलैक चारि टाका मात्र। एकर प्रकाशक छल सांस्कृतिक विभाग, राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला समिति, सुपौल। एकर मुद्रक छल जनसहयोग प्रेस, सुपौल आ पोथीक विक्रय-केंद्र शिक्षा सदन, शिक्षा मंदिर, सुपौल आ ग्रंथालय, दरभंगा। दुर्भाग्यवश आब ने जनसहयोग प्रेस अछि ने एकहु टा उल्लिखित विक्रय केन्द्र। मुदा प्रेससँ ल' क' विक्रय केन्द्र ऐतिहासिक महत्वक रहल। एक समयमे जनसहयोग प्रेस उठान पर छल, भारत सेवक समाजक सहयोगसँ स्थापित एहि प्रेसमे एक सँ एक महत्वपूर्ण आ ऐतिहासिक किताब सभक प्रकाशन भेल। मल्लिकजी सन कर्मठ, इमानदार आ अपन काजक प्रति समर्पित व्यक्तित्व एहि प्रेसकें प्राप्त छल। ओ श्रेष्ठ कम्पोजिटर रहथि, मशीनमैनो तेहने। एतेक विशाल भवन, तेहने विशाल मशीन सब, ट्रेडिल मशीन आ तकर जंजाल। अद्‌भुत लगैत छल प्रेस। ठीक तहिना छल सुपौलक शिक्षा सदन आ शिक्षा मंदिर। मैथिलीक किछु किताब शिक्षा मंदिरसँ प्रकाशित भेल छल। ग्रंथालय, दरभंगाक रमेन्द्रनारायण चौधरी सँ के अपरिचित हेताह...।

हमरा होशोहवाश मे, हमरा पुस्तकालयमे लगधग साठि-सत्तरिटा ई पोथी छल। सबहक कवर समसल। किछु पोथीकें दिवार चाटि लेने छल। हम 1991-92 मे एकर कवर नव ढंगे छपाओल। एहि पोथीक मुखपृष्ठ पर कविलोकनिक हस्ताक्षरक कोलाज छल, हमरा जनतबमे एहि तरहक प्रयोग पहिल बेर भेल छल। किसुन जी अपन एहि कल्पनाकें साकार करबाक लेल, सम्मिलित कविलोकनिक पत्र सभसँ हुनक हस्ताक्षर बहुत कलात्मक ढंगे काटि क' रखैत छलाह आ स्वयं पटना जाक' ब्लॉक बनबौने रहथि। नव कवरमे जखन पोथी तैयार भेल छल तँ सम्मिलित अनेक कविकें हम मैथिलीक नवकविता पठौने रहियनि, ओ लोकनि बहुत आत्मीयताक संग अपन प्रतिक्रिया प्रकट कयने छलाह।

1966 सँ आरंभ भेल नवकविताक ई अभियान अन्ततः 1971क जनवरीमे समाप्त भेल। पोथीक रूपमे जखन ई प्रकाशित भेल तँ नवकविलोकनिमे एक

अद्‌भुत ऊर्जाक संचार भेल। नवताक ई वातावरण आइ अपन चरम पर अछि, उत्कर्ष पर अछि। ओहि समयमे परम्परावादी कविता आ नवकविताक बीच होइत दूतरफा वैचारिक प्रहारक आब कोनो अर्थ नहि रहि गेल अछि, जखन कि तकरा सभकें एकट्ठा क' अध्ययन करब एखनो विस्मय आ छगुन्तासँ भरि सकैत अछि। तथाकथित परम्परावादी आब ततेक बेरल-कतिआयल छथि, तकर चर्चा करब प्रासंगिक नहि।

हमरा एकबेर मोन भेल छल जे ओहि तमाम लेख, कविता आ चिट्ठी-पत्री कें एकट्ठा करी आ किताबक रूपमे तकरा आनी। ओहि ऐतिहासिक साहित्यिक संघर्षक अद्‌भुत पोथी होइत ओ। नवताक पक्षमे ठाढ़ जीवकान्तक प्रफुल्लित चेहरा पता नहि कियैक, एखन स्मरण भ' रहल अछि। ओ निरन्तर परम्परा पर प्रहार करैत रहल छलाह। अस्तु, कथा-उपकथा बहुत अछि।

मुदा एखन एकटा दुखद प्रसंग एहि पोथीसँ सम्बन्धित मोन पड़ि आयल अछि। सुपौलमे जहिया (फरवरी 1967) नवकविता सेमिनार आयोजित भेल छल, सुपौलक प्रतिष्ठित अधिवक्ता आनन्द मोहन दास मेला समितिक यशस्वी सचिव रहथि। हुनक अप्रतिम सहयोग एहि सेमिनारकें भेटल रहनि। 'आखर'क राजकमल अंक एकर साक्षी अछि।

मेला कार्यालय मे बंडलक बंडल ई पोथी उपेक्षित राखल छल। एकदिन रामानुग्रह झा हमरा कहलनि जे कोहुना ओ पोथी सब ल' आनह। हम प्रयत्नशील भेलहुँ। आनंद मोहन दास प्रसिद्ध मदन बाबू लग एहि आशयक एक आवेदन पत्र ल' गेलहुँ। ओ वर्तमान सचिवक नामे महत्वपूर्ण अनुशंसा कयलनि जे सभटा किताब आवेदक कें द' देल जानि। तखन सचिव छलाह कमलनारायण झा, मुख्तार साहेब। ओ ततेक विकट आ अकठ प्रश्न सब केलनि जे थोड़ेक काल लेल तँ जेना हमर वाक्हरण भ' गेल। ओ कहलनि जे पोथी सभक पाइ चाही समितिकें, से के देत ? हम निराश भेल घुरि अयलहुँ। मदन बाबूकें सब खेरहा कहलियनि, ओ बहुत दुखी भेलाह आ हमरा तइयो आश्वस्त कयलनि। अस्तु, आइ ओ दुनू एहि दुनियामे नहि छथि। दुनूक प्रति मौन श्रद्धांजलि।

पछिला अनेक बर्खसँ एहि पोथीक दोसर संस्करण लेल प्रयत्नशील छलहुँ। नवकविताक ऐतिहासिक दस्तावेज कें प्रकाशित करैत आइ स्वभावतः प्रसन्नताक अनुभव करैत छी। एकावन वर्षक बाद ई पोथी सुधी आ विज्ञ पाठक समाजक बीच आबि रहल अछि। एहिमे संकलित कविलोकनि मे सँ

अधिकांश एहि नश्वर संसारमे नहि छथि मुदा हुनका लोकनिक शब्द बचल अछि आ से बचल रहत।

पोथीक कवरकें यथावत राखबाक चेष्टा कयल अछि। संकलित कविलोकनिक हस्ताक्षरक कोलाज सँ बढिया कवर की भ' सकैत अछि...।

एहि पोथीमे संकलित एक कवि श्रीकांत मिश्रक मूल नाम सुधाकांत दास थिकनि। सुधाकांत सँ श्रीकांत बनबाक जे हुनक दुखद-दारुण साहित्यिक यात्रा रहलनि, तकरा विषयमे हम एक पैघ सन संस्मरण लिखने छी।

आइ एहि पोथीक प्रकाशनक समयमे सभसँ बेसी बाबूजी मोन पड़ि रहल छथि। एहि पोथी लेल हुनक विकलता, गाम आ पटनाक दौड़-भाग, निरन्तर पत्राचार, संपादकीय दायित्व आ कविलोकनि मे सँ चयन करबाक गुरुत्तर भार, जनसहयोग प्रेसक चक्कर, प्रूफ संशोधन, मेला समितिक वित्तीय सहयोग आदिक झमेला सँ अस्वस्थ रहितो ओ जूझि रहल छलाह मुदा अन्ततः प्रकाशित पोथीकें स्वयं नहि देखि सकलाह। रामानुग्रह भाइक प्रयास सँ ई पोथी आबि सकल छल।

शैलेन्द्र कुमार सिंह (सस्ता साहित्य मंडल) आ राजेश्वर अकेलाक प्रति विशेष आभार।

रांची, फरवरी 2022

—केदार कानन

सम्पादकीय संदर्भ

स्वातंत्र्योत्तर मैथिली साहित्यमे नव कविताक विकास एक टा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थिक। स्वातंत्र्य-संग्रामक समय लोककें जे एक टा 'सब्ज-बाग' देखाओल गेल छलैक, जन-मानसमे भविष्यक संभावनाक जे स्वरूपोन्मेष भेल छलैक, से सब अप्रत्याशित रूपें समाप्त भ' गेलैक। जनमतक वास्तविक निर्णय-अक्षमताक असामर्थ्यसँ अनुचित लाभ उठा क' राजनीतिक संगठन सभ लोक-शोषणमे लागि गेल। स्वतंत्रताक संगहि देशक विभाजन, रक्तपात आ हिंसाक धमगज्जर नग्न-नृत्य तथा जातीयता, प्रांतीयता, साम्प्रदायिकता आदिक अ'ढ़मे एक ठाम सत्ता आ पूँजीक केन्द्रीकरण भेलासँ धनिक औरो बेसी धनिक आ गरीब औरो बेसी गरीब होइत गेल। भयंकर महगी, दमतोड़ू मूल्यवृद्धि आ आन देशक भीख पर आश्रित रहबाक विवशता एहि देशक लोककें युद्धक विभीषिकाक अपेक्षा अधिक कष्टकर भेलैक अछि। सार्वभौम-सत्ता-सम्पन्न-लोकतन्त्रात्मक गणराज्यक (एहने आकर्षक आ ललितगर शब्दसँ अलंकृत) एहि देशमे पंचवर्षीय योजनाक जे मोह-जाल पसारल गेल, तकर पारिणामिक अनुशीलन स्पष्ट करैछ जे ओकर यत्किंचितो लाभ भाइ-भतीजावादक मुनहरमे अटकि गेल आ समाजक अधिकाधिक व्यक्ति यथास्थितिक व्यामोहमे कुहरि रहल अछि; एखनो ओकर रोजी-रोटीक समस्या ओहने भयंकर अछि। शिक्षाक अनिर्धारित वा परिवर्त्तमान प्रयोग आ विश्वविद्यालय सभक स्थापनाक प्रतिद्वन्द्विता खूब भेल, जाहिसँ डिग्रीधारी सभक मूड़ पर मूड़ पड़' लागल आ एम्हर दोग-दागसँ अपन गोटी लाल कयनिहार 'चतुरानन' व्योंत लगा क' सुविधाक अलगट्टे भोग करैत अपनासँ भिन्न अभागल अभोगी सभकें कबदबैत रहलाह। आधुनिक भारतक तीर्थ-निर्माणक हेतु तथा नोकरीक लेल कोंढ़-करेज तोड़ि देनिहार खोज-बीज आ कोशिश-पैरवी करक हेतु

नव पीढ़ीकें विवश कयल जाइत रहल, आ नव पीढ़ी भूखल पेटें, नांगट देहें अतीतक भ्रामक तथा बाँझ गौरव सँ उन्मत्त बना देब' बला त्याग ओ आदर्शक हफीम खा-खा क' चुप्प, शांत आ सहनशील रहबाक आर्षोपदेश पीबैत रहल।

समाजक सर्वाधिक संवेदनशील प्राणी कवि अपन स्वातंत्र्योत्तर परिवेशक उपर्युक्त परिस्थितिसँ प्रभावित, क्षुब्ध, आक्रोशी आ विद्रोही भ' गेल, जे नितान्त स्वाभाविक। दिन-राति दौड़ैत-पड़ाइत जाइत संसारमे श्रान्त-क्लान्त व्यक्ति सभक जीविका, जीवन आ अस्तित्त्वक संघर्षमे आत्मरक्षार्थ व्यग्र प्रयत्न, आर्थिक मारि, राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक कठोरता, परम्पराक अरगड़ा, ऑटोमेटिक मशीनक प्रतिद्वन्द्विता आ मानवीय विवशता, अभाव, कुंठा, बेकारी-बेगारी, चाटुकारिता, अवसरवादिता, बॉसिज्म, मानसिक आ शारीरिक कृत्रिमता, धक्कमधुक्की, ग्लानि, आक्रोश, निराशा, जिजीविषा, संत्रास आ विद्रोह—एहि सभक अकृत्रिम अभिव्यक्ति थिक मैथिलीक नव कविता।

आब एहि स्कूटर, कार, वायुयान आ राकेटक युगमे कत' रहल सामन्ती शोभाक गौरव 'हाथी' जे बिहारी कविक बासन्ती वायुक वर्णन— *'रणित भृंग घंटावली, झरत दान मधुनीर। मन्द-मन्द आवत चल्यौ, कुंजर-कुंज-समीर।'*—एकर क्यो रसानुभव करत? ई कल्पना आजुक जीवनक अवकाशविहीन एहि दौड़ा-दौड़ीमे की संभव आ संगत अछि? ककरा पलखति छैक जे एहि उद्दाम प्रवाहसँ किछुओ क्षणक हेतु अपनाकें फराक राखि एहि अयथार्थ गप्पसँ झूमि उठय? सोझाँमे पसरल छैक जिनगी आ जिनगीक नीक—अधलाह चित्र, चित्र सभक अनेक दृष्टिकोण-तकरा सहबाक आ भोगबाक यथार्थताकें अनठा-फुसिया क' पुरना परम्पराक, प्राचीन कविलोकनिक भावुकताक जर्जर-सड़ल लहाशकें पँजियौने रहब कोना संभव छैक आजुक कवि सभक हेतु? तैं मैथिलीक नवकविताकें, नवकविकें, अपन कवि-काव्यक परम्परासँ कटबाक आ परम्पराकें काटबाक प्रश्ने निरर्थक थिक।

साहित्यक मैदानमे जे बहुत दिनसँ शामियाना तानल अछि, तकर आब डोर सब सड़ि गेलैक अछि, माटिमे गड़ल ओकर खुट्टी आ ओकरा तान'वला बाँस सब कोकनि गेल अछि, घुनलग्गू भ' गेल अछि, ओहिमे लागल झाड़-फानूस सब झरि-झखरि गेल अछि। जँ एखनो किछु व्यक्ति ओहि चिर्री-चित्ती भेल शामियानाकें बड़े यत्नसँ सीबाक, चेफड़ी पर चेफड़ी लगयबाक

असफल प्रयासमे व्यस्त छथि, तँ नव-कविलोकनिकें एहेन महानुभावपर दया होइत छनि। ई निर्विवाद जे सम्प्रति जीवन आ तैं कवितोक समस्त मूल्यमान ढहल-ढनमनायल अछि, मुदा तथापि जे पुरने मूल्यमानकें अपन रसास्वादनक कसौटी बनौने रहताह, तनिक दुराग्रहकें की कहल जाय? मैथिलीक नव कविता एहि दृष्टिभ्रमोत्पादक कुहेसकें फाड़ि क', मिथ्या आवरणाभासकें हटा क' वास्तविकताक दर्शन करबैत अछि।

नवकविलोकनि ई मानैत छथि जे जीवन-प्रक्रियाक कोनो व्यवस्था, कोनो सत्य, कहियो आ कतहु अमान्य भ' जाइछ, जे आचरण आ चरित्र, अपना देशक परिवेश, समाज-स्वीकृत मूल्य आ मान्यता आदिक आधार पर निर्मित आ विकसित होइछ। मुदा परिभाषाक वास्तविक व्याकरण-विरूद्ध होइतो नवीन मूल्य आ मान्यता विभिन्न देश ओ समाजक सम्पर्कसँ (जे आइ एकदम घनिष्ठतम भ' गेल अछि) पूर्वस्थापित मूल्यकें, परम्परागत अर्थकें बदलैत रहैछ। ओकर मापदंड आ मानदंड नितान्त परिवर्त्तनशील आ अस्थिर छैक, तैं परम्पराक पोखरिक हरियरका-सड़लाहा पानिकें अवगाहन योग्य नहि बूझि क' ओकरा बहा देब' चाहैत अछि आ नवका पानि ओहिमे खसब' चाहैत अछि, जाहिसँ ओ स्वच्छ आ टटका बनल रहैक, से खाहे ओहि सड़लाहा पानिक संग किछु पोसल-पालित रोहु-भुन्नो कियैक नहि बहरा जाउ!

अस्तु, नवकविलोकनि अपन भोगल यथार्थक अनुभूतिक लेल शब्दकें नवीन अर्थवत्ता देबाक लेल प्रतिबद्ध छथि। एतदर्थ क्षण-विशेषमे तीव्र संवेगक सूक्ष्म भाववहनक शाब्दिक अक्षमताकें बूझैत एकदम अनिवार्य, युगानुरूप आपाततः वास्तविक आ नव बोधानुकूल नवीन बिम्ब, नवीन प्रतीक, नवीन उपमान आदिकें नवकवितामे साधन मानल गेल अछि। जनसाधारण द्वारा ई नवीन साधन पूर्ण परिचित आ अभिज्ञात नहि रहलासँ नवकवितामे दुर्बोधता वा दुरुहता उत्पन्न होइत अछि। मुदा एकरा बूझब केवल आवश्यकेटा नहि, हमरा सभक सामाजिक दायित्व थिक, जे नहि भेने हमरा-लोकनि पछड़ले रहि जायब आ इतिहासमे अपराधी मानल जायब।

फ्रायड, एडलर, जुंग, मार्क्स, कामू, सार्त्र, काफ्का, कीर्केगार्द, गिन्सबर्ग आदिक चिंतन कोनो एक्के देशकें नहि, संसारेक चिंतनकें प्रभावित कयलक अछि। विकसित विज्ञानक अवदान ब्रह्माण्डक भौगोलिक विस्तारकें हस्तामलकवत् बना क' विश्वक व्यक्ति-व्यक्तिकें सन्निकट आनि देलक

अछि। अस्तु, नवकविताकें जे पाश्चात्य अनुकरण आ यौन-विकृतिक कुत्सित एवं कुंठित अभिव्यक्ति मात्र कहि क' एकर दुरालोचना करैत छथि, हमरालोकनि हुनक निन्दा नहि क' केवल एतबे कह' चाहब जे ओलोकनि रावणसँ अपहृत भ' जयबाक दुराशंकासँ अपन लक्ष्मण-रेखासँ नहि बहरा क' वर्त्तमान काव्यान्दोलनक रथक लीखे टा देखिक' आविष्ट भ' गोसाईं खेलाब' लगैत छथि। अथवा जनिक अध्ययन-अध्यापन विद्यापति, चन्दा झा, भुवन जी, ईशनाथ झा, सीताराम झा प्रभृति कवि लोकनिक काव्य-रचना एवं एहि सांस्कृतिकवादक काव्य-प्रवृति धरि सीमित छनि, युगक परिवर्तित परिवेशक संदर्भमे बदलल संवेदनाक स्वरकें, अस्वीकृतिक नवोन्मेषकें, आत्मसात् नहि करबाक हुनक दुराग्रह निरर्थक। मानव मात्रक एहि सुविकसित आ उदार एकपारिवारिक स्थितिक परिवेशमे अपन-अपन विशिष्ट रूपाकृतिक अछैतो चिंतन-साम्य, मूल्यमानक सर्वमान्य एकरूपताक खोज नवकविक लेल युगधर्म थिक।

नवकविताक संगे जन-मानसमे नहि टिकि सकबाक आ कि ओकर लोकप्रियताक प्रश्न खूब उठाओल जाइछ। मधुपजीक 'टटका जिलेबी' आ 'अपूर्व रसगुल्ला', अमरजीक 'गुदगुदी', मायानन्द मिश्रक 'भाङक लोटा' आदिकें अपना समयमे जे लोकप्रियता भेटलैक; की आबहु सैह स्थिति छैक? हमरा बुझने नवकविताक दायित्व केवल लोकानुरञ्जने टा नहि, सत्यकें सत्य कहबाक आ तैं अपन पाठक वा भावक वर्गकें तद्योग्य बनायब सेहो थिक।

अन्तमे, विद्वद्जनसँ आशा जे मैथिलीक नवकविताक प्रतिनिधि संकलनक एक सोड़य कविक कविताक सम्पादनमे जे त्रुटि भेल हो, तकरा क्षमा करथि तथा नवकविताक मूल्यांकनक दिशामे प्रवृत होअथि। जँ नवकविताक मूल्यांकनक दिशामे प्रस्तुत संकलन किछुओ सहायक भेल तँ हमर सम्पादकीय श्रम सार्थक भ' सकत। इत्यलम्।

विजयादशमी : 1969

विदुषामाश्रवः
रामकृष्ण झा 'किसुन'

अनुक्रम

एकावन बर्खक बाद मैथिलीक नवकविता 7
सम्पादकीय संदर्भ 21

वैद्यनाथ मिश्र **33**
नवतुरिए आबओ आगाँ... 34
आन्हर जिनगी 35
नव नचारी 36
मनुपुत्र दिगम्बर 37
छीप पर रहओ नचैत 37
बीच सड़क पर 38
राधिका 38
जगतारनि 39

मणीन्द्र नारायण चौधरी **40**
वक्तव्य 41
प्रवास 41
वयःसन्धिः द्वितीय पर्व 42
द्रौपदीसँ विरक्ति 43
अर्थतन्त्रक चक्रव्यूह 43
महफा 44
निशागीत 45
अहिपन 46
प्रेत पीड़ित प्राण जीबथु आब ककरा हेतु? 46

कोनो बिसरल गामक नाम दू पाँती 49
आगत वसन्तक प्रति दूटा प्रेम कविता 50
रामकृष्ण झा 'किसुन' 53
वक्तव्य 54
मनुक्ख जिबैत अछि 55
जिनगी : चरिटा दृष्टिखंड 56
पत्रोत्तर 57
पुरानक मृत्यु आ नववर्षक जन्म 58
निवेदित 60
एकः शब्दः 62
अव्यक्त प्रणय 63
एकटा असमाप्त कविता : खुटेसल 64
एकटा प्रत्याख्यान 65
यात्राक सार्थकता 68
निर्वासित अपने देशमे 69
धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' 71
वक्तव्य 72
भोर 72
गामक पत्र 72
मनुक्ख आ मशीनी आदमी 73
एक गोट प्रेमपत्र स्वकीयाक नामे 74
कालक नियन्ता आ चाह 74
चिचिया उठल अश्वत्थामा 75
बुलबुलक गीत 75
तरेगनक हेंज आ चान 76
हैंगरमे टांगल कोट 76
मेघ आ अभिसार 78
मायानन्द मिश्र 79
वक्तव्य 80
साम्राज्यवाद 80
मानवता 81
हे अबैबला युग 81
विज्ञान 82
युग वैषम्य 82
अहाँ की छी? 83
नवका पीढ़ीक विद्रोह 83
आस्था 84
बिरड़ो 85
एकटा नखशिख : एक दृश्य 85
हंसराज 87
वक्तव्य 88
अस्वीकृति 88
एकटा मनः स्थिति 89
भय 89
तरंग 90
लाज 91
शेष परीक्षा 91
बिसरल-बिसरल 92
धुआँ 93
मुइल जीवन 94
हम मनुखक मात्र साधन 95
सोमदेव 99
वक्तव्य 100
जीवनाभास 101
एकटा फोटोक दुखद त्रिकोण 102

हमरा एकटा किताब चाही 103
किछु भ' सकैछ 104
विदाक स्मृति 105
सातटा तिनपतिया 105
प्रात : दू चित्र 107
जपलाक रानी : एकटा लैंडस्केप 108
रूमालक सीसा 109
गर्भस्थ संतानक प्रति 110

रमानन्द रेणु 111

वक्तव्य 112
चक्रचालि 113
आकांक्षा 114
समस्या : पीढ़ी दर पीढ़ी 115
व्यतीत क्षणक मोह 116
बौक परिवेश आ जीवन्त क्षण 117
व्यवस्था 118
एक कोण : मनःस्थिति 119
आस्थाक परिधि आ मौन 120
व्यक्ति 122
साँझ 123

रामदेव झा 124

काल-तुला 125
प्रथम सन्तान 125
फोटोक निगेटिव 126
निर्जल मेघ 127
माघक रौद 127
मोन 128
भविष्य 128

मधुकर गंगाधर 130

दूटा कविता 131
स्थिति 131
दियासलाइ 132
प्रार्थना 134
अहिंसक 136
मीत 136
जीवन : नीच आ ऊँच 136
भेद 138
पाठ 138
जिनगी 139

कीर्त्तिनारायण मिश्र 140

वक्तव्य 141
एक गोट प्रार्थना स्थिति 141
खण्डित आस्था 142
प्रतिध्वनि 143
अन्तहीन यात्रा 144
धुआँ 146
स्फीति 146
केहन अहाँकें लागत? 147
वरदान आ अभिशाप 148
अकाल 148
समर्पण 149

गंगेश गुंजन 150

वक्तव्य 151
अपमान बोध 151
बौक दुष्यन्तक बिन ब्याहलि शकुन्तला 152
एक टा कविता 153

बन्धु चित्र 154
पीड़ा 154
अनुपलब्ध 154
आत्मपरिचय : युवा पुरुष 155
विश्वासघात–एक 155
विश्वासघात–दू 156
चारि शीर्षक खंडमे एकटा महाकाव्यात्मक भावयात्रा 158

जीवकान्त **160**

वक्तव्य 161
आत्मस्फोट 162
परिवार 163
सौन्दर्य-बोध 163
सीमा 164
देश 165
गाम 166
इजोरियामे नमरल आर्द्राक मेघ 168
कालबोध 169
परसाघाटक कौशिकीसँ 170
सूर्यक मृत्युक प्रक्रिया 171

धूमकेतु **173**

वक्तव्य 174
स्थिति 174
मरण-बाटे 175
अहुरिया 176
मुक्ति 177
सायुज्य 178
समाधिस्थ 178
चारि-चतुष्पदी 180

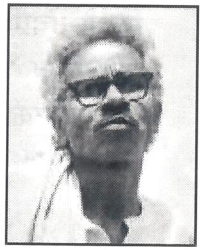
श्रीकान्त मिश्र **181**

वक्तव्य 182
एक नव कविता 182
दूटा प्रतिक्रिया 183
परिवर्त्तित 183
एकटा नव परिभाषा 184
संयोगाहत हम 185
आभिजात्य 186
जोह 186
दूटा नव परिभाषा 187
एकटा बोध 187
आत्मस्वीकृति 188

रामानुग्रह झा **189**

वक्तव्य 190
प्रतिशोधक अर्जुन 190
पातक किलोल : आस्थाक दर्द 191
पहिल तारीख 192
जनतंत्रक दुर्घटना 193
एलेक्ट्रिक गर्ल 194
मछुमाछीक खोंता आ हम 195
दूटा लघु कविता 196

वैद्यनाथ मिश्र



ख्यातनाम–नागार्जुन (हिन्दी संसारमे) आ यात्री (मैथिली जगतमे)

जन्म–1911 ई.

पैतृक वासभूमि–तरौनी (सकरी), जिला–दरभंगा।

शिक्षा–मुख्यतः संस्कृत एवं पालिक माध्यमसँ व्याकरण, साहित्य आ दर्शनक (तरौनी, महिषी, सतलखा–मातृक, गोनौली, पंचगछिया, काशी, कलकत्ता एवं केलानिया–कोलम्बोमे)।

प्रकाशित रचना–नागार्जुन नामे पुस्तकाकार–युगधारा, शपथ, प्रेत का बयान, खून और शोले, चना जोर गरम (काव्य संकलन) रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन (उपन्यास) हिन्दीमे। यात्री नामे पुस्तकाकार–चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (काव्य संकलन) पारो, नवतुरिया, बलचनमा (उपन्यास) मैथिलीमे।

संस्कृतमे *देशदशकम्* आदि तथा सिंहली लिपिमे *धर्मालोक शतकम्* प्रकाशित।

देशक प्रायः हिन्दी आ मैथिलीक समस्त प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकामे कथा, कविता, संस्मरण, व्यंग्य, एकांकी आदि प्रकाशित।

प्रेसमे–जमनिया के बाबा (हिन्दी उपन्यास) विशाखा (मैथिली काव्य संकलन)।

रचनाक माध्यम–हिन्दी, मैथिली, पालि, संस्कृत, सिंहली आदि। विशेष-तथाकथित प्रगतिवाद तथा आधुनिक नव कविताक सन्धिस्थल पर जनिक रचना नवीन भावभूमिक आरम्भ-सूचक मानल जाइछ।

नवतुरिए आबओ आगाँ...

तीव्रगंधी तरल मोवाइल
क्षणस्पंदी जीवन
एक-एक सेकेंड बान्हल!
स्थायी-संचारी-उद्‌दीपन-आलंबन...
सुनियन्त्रित एक-एक भाव!
परकीय-परकीया सोहाइ छइ ककरा नहि
खंड प्रीतिक सोन्हगर उपायन?

असह्य नहि कुमारी विधवाक सौभाग्य
असह्य नहि गृही चिरकुमारक दागल ब्रह्मचर्य
सरिपहुँ सभ केओ सर्वतंत्र स्वतंत्र
रोक टोक नहिए कथूक ककरो
रखने रहू, बेर पर आओत काज
अमौटक पुरान धड़िका...
धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष!

पघिलओ नीक जकाँ सनातन आस्था
पाकओ नीक जकाँ चेतन कुम्हारक नबका बासन
युग-सत्यक आवामे ...
जूनि करी परबाहि बूढ़-बहीर कानक
टटका मन्त्र थीक,
नवतुरिए आबओ आगाँ!!
वैह करत रूढ़िभंजन, आगू मुहें बढ़त वैह...
हमरा लोकनि दिअइ आशीर्वाद निश्छल मोने;
घिचिअइ टा नहि टाङ पाछाँ...
ढेकी नहि कूटी अपनहि अमरत्व टाक ...

आन्हर जिनगी

आन्हर जिनगी
सेहंताक ठेङासँ थाहए
बाट-घाट, आँतर-पाँतरकें
खुट खुट खुट खुट...

आन्हर जिनगी
चकुआएल अछि
ठाढ़ भेल अछि
युगसन्धिक अइ चउबट्टी लग
सुनय विवेकक कान पाथिकें
अदगोइ-बदगोइ

आन्हर जिनगी
नाङड़ि आशकेर कान्ह पर हाथ राखि क'
कोम्हर जाइ छएँ?
ओ गबइत छउ बटगवनी,
तों गुम्म किएक छएँ?
त'हूँ ध' ले कोनो भनिता!

आन्हर जिनगी
शान्ति सुन्दरी केर नरम आङुरक स्पर्शसँ
बिहुँसि रहल अछि!
खंड सफलताकेर सलच्छा सिहकी
ओकर गत्र-गत्रमे
टटका स्पंदन भरि देलकइए।

नव नचारी

अगड़ाही लागउ, बज्र खसउ,
बरू किच्छु होउक...
नहि नबतै तोरा खातिर किन्नहु हमर माथ!
पाथर भेलाह तों सरिपहुँ बाबा बैदनाथ!
बेत्रेक अन्न भ' रहल आँट नेना-भुटका
दुबरैल आङ्गुरें कल्लर सभ बीछए झिटुका
मकड़ाक जालसँ बेढ़ल छइ चुलहाक मुँह
थारी-गिलास सब बेचि बिकिनि खा गेलइ, ऊँह
कैंचा जकरा से, खाए भात
क' रहल मौज से, जकरा छइ कोनो गतात
सरकारी राशन द' रहलइए–
अन्हरागाँही चउबरदामे चाँइ-चोर
आन्हर-बहीर, बम्भोला!
तोरा पर उठैत अछि तामस हमरा बड्ड जोर
गौरी पहिरथि फाटल नूआ
छन्हि कर्महिमे लागल भुआ
कार्तिक-गणेश छथि गीड़ि रहल
उसिनल अगबे अल्हुआक पात
बइमान बापसँ की माँगथु ग' दालि-भात
अपने पबैत छह भोग छप्पनो परकारक
अनका लेखें तँ दुर्लभ छइ आको धथूर
बुझि पड़ितहु जँ सुनितहक–
उपासल कमरथुआ केर मुइल सुर!
बरू किच्छु कह'
पचकल लोढ़ा, तों धन्न रह'
नहि आब नचारी केओ गओतहु!

जे बूड़ि हैत से बोकिअओतहु!
नहि रहलइ ककरो किच्छु मात्र तोहर भरोस..
माटिक महत्त्वकें चीन्हि लेलक ई देश-कोश!
पाथर भेलाह तों सरिपहुँ बाबा बैदनाथ!
नहि नबते तोरा खातिर किन्नहु हमर माथ!

मनुपुत्र दिगम्बर

समुद्रक कछारमे
सितुआक पीठपर
तरंगित रेखाक बहुरंगी अइपन, हल्लुक!
ऊपर अउन्हल आकाश
निविड़–नील!
नीचाँ श्याम सलिल वारुणी सृष्टि!
सभ किच्छु बिसरि
तिरोहित कए सभ किच्छु
–अवचेतन मध्य
रहताह ठाढ़ मनुपुत्र, दिगम्बर
ने जानि कती काल...
पश्चिमाभिमुख!

छीप पर रहओ नचैत

छीप पर रहओ नचैत
कनकाभ शिखा
उगिलैत रहओ स्निग्ध बाती
भरि राति मृदु-मृदु तरल ज्योति
नाचथु शलभ-समाज

उत्तेजित आबथु-जाथु
होएत हमर अंगराग हुतात्माक भस्म
सगौरव सुप्रतिष्ठित हँसितहि हम रहबै
दीअठिक जड़िसँ के करत बेदखल हमरा
ने जानि, कहिया, कोन युगमे
भेटल छल वरदान
अकल्प हम रहब बइसल दीप देवताक कोरमे

बीच सड़क पर

बीच सड़क पर
हरिअर-हरिअर घास
तइपर ससरय ट्राम
मने आरिपर डोका
भदवारिक ई भीजल-तीतल
चिक्कन-चाकन सनगर बालीगंज
मध्य वक्षपर ट्राम लाईनकेर जनउ पहिरने

राधिका

गोर-गहुमा कांति
देह नमछर आ सुरेबगर
मुह 'कटगर'
ठोर लालेलाल
बॉब्ड हेयर-केश कपचल कृष्ण कुन्तंल जाल
भउँहु बेश पिजौल
मर्मवेधी टाकुसन कजरैल आँखिक कोर
अनावृता मुक्तोदरी, आवर्त दारुण नाभि
रङल बीसो नखक उज्जर पीठ

हरित वसना आइ काल्हुक राधिका
देवि स्कूटरवाहिनी घूरि आउ संध्याकाल
कोनो होटल मध्य बाट तकैत छथि बांकेबिहारी लाल

जगतारनि

बाँसक
ओधि
उपाड़ि
करइ छी जारनि...
हमर
दीन
नहि
घुरत की जगतारनि?

मणीन्द्र नारायण चौधरी



नाम–मणीन्द्र नारायण चौधरी
उपनाम–फूलबाबू (गाममे)
प्रख्यातनाम–राजकमल चौधरी
जन्म–13 दिसम्बर, 1929 ई.
जन्मस्थान–रामपुर (सहरसा) मुदा पिता स्व. प. मधुसूदन चौधरी महिषी (सहरसा) क निवासी
शिक्षा–1947 मे मैट्रीकुलेशन, तत्पश्चात् भागलपुरसँ आइ. कॉम. आ गया कॉलेजसँ बी.कॉम.
लेखनारंभ–प्रथम कविता 'शशि उर्वशी' (1954) वैदेहीमे प्रकाशित (डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित'क अनुसार) प्रथम कथा (प्रो. धीरेन्द्रक अनुसार) 'अपराजिता' (वैदेही 1954 मे प्रकाशित)
प्रकाशित रचना–विभिन्न हिन्दी-मैथिली पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित कथा, कविता, निबन्धादिक अतिरिक्त–नदी बहती थी, मछली मरी हुई, देहगाथा, शहर था शहर नहीं था, आरण्यक, एक अनार : एक बीमार, चौरंगी (अनुवाद), हिन्दी उपन्यास। आदिकथा, आन्दोलन–मैथिली उपन्यास कंकावती आ मुक्ति-प्रसंग–हिन्दी कविता-संकलन तथा स्वरगंधा मैथिली काव्य संकलन प्रकाशित। हिन्दी, मैथिलीक प्रख्यात यशस्वी साहित्यकार।
मृत्यु–कारोनरी ऑलक्यूजनक कारणे पटनाक राजेन्द्र सर्जिकल ब्लौकमे 19 जून, 1967 कें
विशेष–हिन्दी-मैथिलीक नवलेखनमे आकण्ठ मग्न रहनिहार स्वाभिमानी साहित्यकार, जे साहित्यमे आ व्यवहारमे कोनो प्रकारक बन्धन स्वीकार नहि करैत छलाह। हुनक मान्यता आ जीवन-दृष्टिसँ नवलेखन समृद्ध भेल अछि।

वक्तव्य

सबसँ पहिने हमर अपन मनुक्ख, मने हम! अर्थात् हमर अपना कविताक सबसँ पहिल आ सबसँ महत्वपूर्ण विषय हम स्वयं छी। हम आ हमर अस्तित्व, हम आ हमर अहं, हम आ हमर व्याकरण ...कविता एक एहेन कला थिक जे व्यक्ति-कारणमे आस्था रखैछ। कविता भावनाक मायाजाल नहि थिक। ...व्यक्ति-सत्य आ वस्तुसत्य कोनो स्वप्नावेष्टित आदर्शसँ अधिक महत्वपूर्ण नहि। अर्थ-नीति आ ऑटोमेटिक मिशीनक एहि युगमे कविताक शास्त्रीय अरण्यरोदन अथवा अशास्त्रीय प्रलाप दुहूमे किछुओ हमरा पसिन्न नहि अछि। ...हमरा जीवन आ हमरा कवितामे कोनो भेद, कोनो दूरी नहि अछि। हमर कविता हमरा आन्तरिक जीवन आ हमरा अस्तित्वक रहस्य, यथार्थ आ योजना सबकें अभिव्यक्त एवं अंकित करैत अछि। यदि हमर कविता हमरा मुक्त नहि करैत अछि, तँ हम ओकरा एक वक्तव्य मात्र मानैत छी; कविता नहि।

(द्रष्टव्य–आखर, राजकमल विशेषांकमे स्व. किसुनजीक निबन्ध–सम्पादक)

प्रवास

अपने गाछीक
फूल-पात नहि चिन्हैत छी
बूझल नहि अछि
वृक्ष सभक
लोक सभक
नाम बूझल नहि अछि
एतेक दिन एहि गाममे
अयना भ' गेल
मोम जेना कारी सन अयना भ' गेल

हुनका चिन्हबाक चेष्टा करी
एखनहुँ ई सूझल नहि
आबहु होइए
एहि प्रकृतिसँ, एहि स्त्रीसँ, एही नदीसँ
अपरिचिते रहि जाइ, एहि गामसँ, धामसँ
प्रवासी हेबाक सभटा दुख, सभटा वेदना
हम एकसरे सहि जाइ
अपरिचिते रहि जाइ
एतेक दिन एहि गाममे अयना भ' गेल
मुदा, चिन्हार नहि अछि विकालक
एहि अन्हारमे
अपने घर आङन
अपने घर आङनमे चिकरइ छी
हम अपने टा नाम
प्रवासी
नगरवासी छी हम
ई उपराग दैत' अछि
अपने टा गाम

वयःसन्धिः द्वितीय पर्व

बाध-बोनमे बौआयब हम
ककरा संग, लागल साँझ परात
माया, मुद्रा, व्याधि, व्यथा केर
जब्बर-जब्बर खुट्टा चारू कात
क्रोध नहि रहल मोनमे बैसल
मातल छुट्टा साँढ़–
आब की तोड़ब पगहा, किएक
मारब बथानमे लात

द्रौपदीसँ विरक्ति

आन्हर घरक अन्धकारमे
आब साँप नहि मारब
तोड़ि देब बरु तेल पियाओल लाठी
थाकल देहक अन्ध-कूपमे
आब झाँप नहि मारब
कतबो ग्राह ग्रसित कयने हो मातल हाथी।
आन्हर घरक अन्धकारमे
अहाँ साँप कटबाउ
अपने देहक पंकिल जंगल पहाड़मे
एकसरि बीन बजाउ।

अर्थतन्त्रक चक्रव्यूह

सभ पुरुष शिखंडी
सभ स्त्री रासक राधा
सभक मोनमे धनुष तानिक' बैसल
रक्त पियासल व्याधा
कत' जाउ? की करू??
रावण बनि ककर सीताकें हरू?
सभ स्त्री रासक विकल राधा
कत' जाउ? की करू??
चक्रव्यूहमे ककरो भरोस नहि करू
रे अभिमन्यु-मोन,
छोड़ि देश ई चलू बोन
सभ स्त्री राधा
सभक मोनमे धनुष तानिक' बैसल
रक्त पियासल व्याधा।

महफा

महफासँ मूड़ी निहुरा क' हुलकि रहल अछि
चान,
नोरमे डूबल अछि अस्तित्व
प्राणसँ छलकि रहल आछि गान।
महफासँ मूड़ी निहुरा क' कोनो सोहागिन
नवकनियाँ
पाछाँ छुटल गाछी-बिरछी, बाध-बोन,
आङन-घर, खरिहान-बखारी
ताकि रहल अछि
(ई महफा-दुरागमन अछि धधकैत घूड़!)
मकइ-बालिसन पट्-पट् पट्-पट्
पाकि रहल अछि
कोनो सोहागिन नवकनियाँ...
पाकि रहल अछि सोन-चिरइया पाँखि
पाकि रहल अछि रोहु माछ सन आँखि।
आ, भरि दिनमे
योजन चलैत अछि चारू कहार
पार होइत अछि—
सात नदी चौदह पहाड़
... रस्तामे भेटल सभ मन्दिर, सभ पाथर,
सम भगवती थानकें
दैत' छी प्रणाम
कोनो सोहागिन नवकनियाँ बिसरि जाइत अछि
अपन नाम आ गाम-धाम!
आँचर तरमे झाँपि लैत अछि।
अप्पन सभ व्यक्तित्व
(नोरमे डूबल अछि अस्तित्व!)
महफामे बैसल-बैसल, गुनधुन करैत

अपन गामसँ
कोनो आन गामक दूरी
आँखि-आखिसँ नापि लैत अछि
जे बीतल से बिला गेल...
जे आओत से सत्य थीक।
पाओल नहि जे, तकर करब की चिन्ता बिखाद
जे पायेब एहि महफासँ
निहुरि उतरिक' थिक सैह नीक?

निशागीत

खिड़कीसँ नीचाँ ससरि क'
इजोरिया
पसरि गेल अछि
हरसिंगारक झमटगर छाहरिमे
केबाड़क दोगमे नुका रहल अछि
हमरे कोनो कविताक
एकट नवीन पाँती
जेना हँसइत हो खिल-खिल हमरे दुलारि कन्या
एहि जाड़मे बन्हने गाँती
आब जँ निन्न नहि भेल
जीवन भरि
जागल रहि जायेब
जीवन भरि
एहि झमटगर छाहरिक प्रत्याशामे
लागल रहि जायेब
जागल रहि जायेब।

अहिपन

अहिपनमे नहि लिखू फूल-पात लता चक्र
हे स्वप्न-संभवा कामिनी,
आब नहि घोरू सिनूर आ उज्जर पिठार
जखन पूर्णिमेक साँझमे
चन्द्रमा भ' गेल अछि पीयर आ वक्र
आब नहि फोलि क' राखू
अप्पन मोनक दुआर!
हे स्वप्न-संभवा कामिनी,
आब एहि घर आङनमे अनागतक प्रतीक्षा
जुनि करू जुनि करू...
अहिपनक फूल-पात-लता बनि जायत
गहुमन साँप,
कोनो देवता नहि क' सकताह अहाँक प्राण-रक्षा
पाबनिक राति बीति जायत पूजा-विहीन
परिणय विहीन!

प्रेत पीड़ित प्राण जीबथु आब ककरा हेतु?

एक

निन्न टूटल। ठाढ़ सोझाँमे छलाहे प्रेत कुल सम्राट
माथ पर छनि महीसक सिंघ,
आँखि ओड़हुल-फूल;
दाँतसँ चिबबैत काँचे हाड़, बजलाह—
फूल बाबू थिक अहींक नाम? आइसँ हम तँ अहींक
देहमे राखब अपन आसन,
हम अहींमे रहब।

दू

निन्न टूटल? एहन लागल, हमर एहि रोग जर्जर देहमे
आठ हाथी, तीस घोड़ा, पाँच भूखल बाघ
सरिपहुँ समा गेल अछि,
एहन लागल, एकटा कारी हरिन तैयो नुकायल अछि।
हमर प्राणक चन्द्रमामे?
हमर कारी हरिन कें, आइ हमरे रोग जर्जर देहमे
पाँच भूखल बाघ, घोड़ा तीस, हाथी आठ
मिलिक' करत मृगया, मारि आनत
प्रेतराजक सफल होयत भोज?

तीन

हमर प्राणक चन्द्रमामे एकटा कारी हरिन अछि। आ,
हमर हाड़क, हमर मांसक महलमे
प्रेत कुल सम्राट
हँसि-हँसि, हुलसि, क' रहल छथि निशा संभोग।
हम अपने कत' छी?
कत' छी, हरिनमे, अथवा महलकेर द्वारि पर छी
परम एकसर, हाथ बन्हने, आँखि मुनने, ठाढ़?

चारि

प्रेत पीड़ित प्राण जीबथु आब ककरा हेतु?
जीबथु आब ककरा हेतु?
हरिन काटल गेल। भोज रसगर भेल। निशा-भोगक बाद
सुतला शान्तिमय, भयहीन भ' सम्राट।
हमर टूटल निन्न।
गरजल बाघ, घोड़ा हिनहिनायल, हाथी सभक
चिंघाड़सँ सभ दिशा काँपल...
प्रारम्भ भ' गेल युद्ध!
हमरे देहमे, तीन प्रकारक पशु

(हरिनक मृत्यु पहिनहि भेल, पहिनहि सूति रहलाह प्रेत?)
एक बाटी बचल हरिनक मांस–तकरे लेल
कयलनि युद्ध।
बेसी खराब नहि लागल हमरा कहियो युद्ध-बियाधि,
मुदा, दस योजनसँ देखले सन्ताँ?
आब एखन तँ हम बताह छी..अपने हरिनक
मांस खाइत छी, नुका चोरा क'।
हम बताह छी
हमर देहमे युद्ध होइत अछि, हमर देहमे प्रेत सुतल अछि,
आ, हम गबैत छी प्रान पराती,
हम लिखैत छी गंगाजलसँ नीपल धरती पर प्रतिदिन
अस्सी हजार बेर नाम,...हुनके नाम!

पाँच

जत' हरिन छल, हमर प्रानक चन्द्रमामे,
उगल एकटा गाछ, नीमक गाछ।
क्रमशः गाछमे झूला लगाओल गेल...
क्रमशः छोट सन कारी चिड़ै
(ने कोकिल, आ ने कौआ)
आबि बैसल
कोनो पातर डारिपर, चुपचुप।

छओ

युद्ध भ' गेल शेष। बाघ, घोड़ा आ हाथी गोट-गोट
सभ मुइल;
सभकें उदरस्थ कयलनि एकसरे, प्रेतकुल सम्राट।
नीमक डारि बैसल चिड़ै हमरा प्रश्न कयलक–
ककर लैत छी नाम?
नाम सुनिते लोप भ' गेलाह, हमरा देहसँ
अपन सिंहासन सहित सम्राट...
तखन बाजल चिड़ै, हमहीं चन्द्रमामे हरिन,

लोकक प्राणमे छी सिनेह हमहीं
हम चिड़ै बनि गान गायब, अहाँ लिखब नाम
हुनके नाम!

कोनो बिसरल गामक नाम दू पाँती

एक

साँझक सिन्नुराह अन्हारमे डूबल गंगानदीक घाट पर ठाढ होइत छी,
नहि मोन पड़ैत अछि ओ छोटछिन धार...
नाह पर झिझरी खेलायब
मलाह गोंढ़िक गीत गायब बहकल स्वरमे
सिनेह पोसल कुकूर जकाँ
घाट-बाट घुरिआयब नहि मोन पड़ैत अछि
भगवती थानक ओ गोल गुम्बदबला मन्दिर
आ, मन्दिरक स्वामिनी
ओ, शान्त स्निग्ध मुखाकृति
ओ प्रार्थना-मन्त्र
ओ सभटा बिसरि गेल अछि, जकरा कारणे,
हमरा हृदयमे कविता छल,
आ, हमर आँखिमे हिरण्यगर्भ इजोत!

दू

साँझक सिन्नुराह अन्हारमे डूबल गंगा नदीक घाटपर ठाढ होइत छी,
तँ लगैत अछि, शरीरसँ बहरा क' हमर ओ पूर्व-जीवन
हमर ओ पूर्व-जीवन
अठबज्जी स्टीमर पर चढ़ि क' जा रहल अछि।
ओही पार–

हमरा शरीरसँ विदा ल'!
ओहि पार, आ गंगाक एहि पारमे आब पचीस बर्ख
आ दू जन्मान्तरक अन्तर अछि...

तीन

सुखा गेल होयत ओ चित्रलिखित सन छोट धार
ओ शान्त स्निग्ध मुखाकृति
आत्म-ग्लानिसँ भ' गेल होयत ज्वालामुखी...
ओहि गामक सभ लोक बरौनी-कारखानामे,
अथवा
कलकत्ता, जमशेदपुर...
बचि गेल होयत केवल स्त्री-समाज
मनिआर्डरक प्रतीक्षा
आ, बीतल वयसक स्मृतिमे व्यस्त!

आगत वसन्तक प्रति दूटा प्रेम कविता

एक

कतेक राति बितलापर मुदा इजोरिया उगनासँ कतेक पहिने
एकटा रसिक स्त्री हमरासँ अनचिन्हारि
हमरा हृदयक कारी अन्हारमे पियासल पाखी जकाँ अपस्याँत,
ताकि रहल अछि पानि
हमरासँ अनचिन्हारि एकटा रसिक स्त्री कारी अन्हारमे
ताकि रहल अछि।
पानि कतहु नहि अछि, एहि वसन्त पूर्वक मरुभूमिमे नहि अछि पानि
केवल एकटा ठुट्ठ भयाओन गाछ।
गाछमे कहियो डारि-पात-फल-फूल-मंजरिक उत्सव छल
गाछमे कहियो
निश्चय छल वसन्तक सिनेह आ उत्तेजना...।

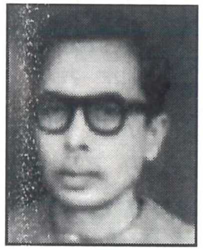
एहि मरुभूमिक तृतीय सत्य ईहो थिक
जे एहिठाम सदिखन अतीत
कोनो एहने भविष्यमे स्थापित होइत अछि,
जेना काल नहि हो वर्तमान!
एहि वसन्तपूर्वक मरुभूमिमे आगि अछि
आन किछु रहबाक नहि अछि प्रयोजन
प्रयोजन नहि अछि वर्तमान निश्चयमे अतीत
भविष्य अनिश्चयमे फल प्राप्ति
निर्मूलक अर्थात् मूल-हीनक संभव नहि,
संभव नहि, संभव नहि,
संभव नहि, आगत वसन्तक
प्रतीक्षा।
ओ रसिक स्त्री अथच ओ पियासल पाखी अपस्याँत रहति
एहि कारी अन्हारमे।

दू

आब तँ एहि बातक कोनो संभावना नहि
जे पुनः ओ सर्पलता
हमर दहिना बाँहिमे ओझरा जयबाक चेष्टा करत...
जखन हमरा कोनो काज नहि रहत
हम दछिबरिया कोठलीमे, निद्रालीन रहि जायब
आब तँ एहि बातक कोनो संभावना नहि
जे पुनः ओ सर्पलता
पछबा बिहाड़िसँ उत्तेजित भ' सकत...।
जखन हमरा कोनो पुरान गीत मोन पड़ि जायत
हम शतरंजक खोड़हा ओछा क' सायंकालीन मित्रक प्रतीक्षा करब
बिसरि जायब चाहक गिलासमे चिन्नी देब
अन्हारसँ पहिने आङनसँ विदा भ'
कतेक राति धरि कोसी-बान्हपर एकस्वर टहलैत रहब चिन्तित
जँ एहू अतिचारक कारणे अथवा व्यवहारक कारणे

एहि बातक कोनो संभावना नहि रहल जे पुनः ओ सर्पलता
तँ की करब हम
तँ भोरक लालटेन जकाँ जरब हम...।

रामकृष्ण झा 'किसुन'



पितृनाम—पण्डित नागेश्वर झा
पता—सुपौल (पो.) जिला-सहरसा।
जन्मतिथि—1 जनवरी 1923 ई.।
योग्यता—नियमित विद्यालयीय अध्ययन-संस्कृत व्याकरण तथा साहित्यक। नियमित स्वाध्याय मुख्यतः हिन्दी आ उर्दू साहित्यक पछाति मैथिलीक। स्वतंत्र रूपें संस्कृत, हिन्दी आ मैथिलीक परीक्षा सबमे सम्मिलित भ' उपाधि सभक संग्रह, जे प्रवृत्ति एखनधरि विद्यमान। क्रमबद्ध लेखनारम्भ 1937 सँ हिन्दीमे। प्रथम प्रकाशित रचना 'कौन है वह?' कविता, बालक (1939 ई.) मे।
1941 सँ मैथिलीमे, प्रथम प्रकाशित रचना ''शिशु सँ' कविता, (मिथिला मिहिर 1945 ई.) मे।
प्रथम प्रकाशन—(पुस्तक) हिन्दीक 'आओ गायें' बालोपयोगी कविता संग्रह (1949 ई.) 'इन्द्रधनुष' (1950 ई.) प्रौढ़ कविता संग्रह। मैथिलीक 'आत्मनेपद' कवितासंग्रह 1963 ई. मे।
प्रकाशनाधीन—(अप्पन) 1. साहित्यिक निबन्ध निचय, 2. स्वयंवर (कथासंग्रह) 3. समाज, (उपन्यास) 4. क्रमशः (कविता संग्रह) 5. विविधा (कथा-काव्य) तथा अनेक गद्य, पद्य आदिक संकलन।
विशेष—कोशीदर्पण, चेतना, सौरभ, प्राच्यप्रभा, स्कूलपत्रिका, संकल्प आदिक सम्पादन। पत्रकार आ विभिन्न सामाजिक, साहित्यिक आन्दोलन एवं संघटन सबसँ सम्बद्ध, साहित्य तथा साहित्यकार दुहूक रचनामे संलग्न, सम्प्रति विलियम्स बहु-उद्देशीय विद्यालयमे अध्यापन।
वृत्ति—अध्यापन।
रुचि—पढ़यबहु सँ बेसी पढ़बामे, एकान्त चिन्त मे, भ्रमण, संगठन आ योगमे।

वक्तव्य

अपना कविताक प्रसंग वक्तव्य द' क' कविताकें कोनो कठघरामे ठाढ़ करब बैलूनमे हवा भरब बुझना जाइछ, कविताक विस्तारकें एकटा सीमामे ठूसि क' मोकि देब नीक नहि तैँ कविताकें कोनो आन्दोलन वा कवि-वक्तव्यक आधार पर नहि ओकरा कवितहिक आधार पर बुझवाक आग्रह-अनुरोध हम करब।

रचना–प्रक्रियाक प्रसंग वक्तव्य जे कविताक पूर्वाभास दिस ध्यान देला पर रचनासँ पूर्वक-ठीक अव्यवहितपूर्वक–मनःस्थिति (मूड्स) दिस तकलापर एतेक भान होइत रहल अछि जे जीवनक तात्कालिक 'क्षण' जाहिमे देश-काल-पात्रक प्राचीन परम्परा आ आधुनिक दृष्टिबोध सब अपना परिवेशक अनुरूप समाहित रहैछ, वस्तुतः किछु स्पष्ट आ तत्वतः बेसी अस्पष्ट जकाँ रहितहु मुख्यतः महत्वपूर्ण होइत अछि। अपनाकें अभिव्यक्त करक तीव्र आकांक्षा ओहि क्षणमे जाहि उद्विग्नताक सृष्टि करैत अछि तकर विश्लेषण गणितक पद्धतिसँ हम नहि क' सकैत छी। अभिव्यक्तिक (रचनाक) बाद तुष्टिक थर्मामीटरसँ ई बुझबा जोकर होइत अछि जे अपना रचनामे हम कतेक सफल रहलहुँ अछि।

सत्यसँ बड़ बेसी आसक्ति अछि तैँ असत्यहुकें सत्य बनाक' लिखैत छी, ई हमर सहज प्रवृत्ति भ' गेल अछि।

हम व्यक्तिगत रूपसँ अपनाकें अभिव्यक्त करबाक सबसँ उत्तम एवं सुलभ कोटिक आ बेसी सशक्त 'माध्यम' कविताकें बुझैत छी तैँ कविता हमरा अपना सन्तुष्टिक सर्वाधिक प्रिय साधन थिक। ओना साहित्य तथा कलाक अन्यान्य विधा सबसँ ई कार्य अवश्य होइत छैक से हमरा मान्य अछि।

देश बदलैत छैक, काल बदलैत छैक आ पात्र बदलैत रहैत छैक तैँ दृष्टिबोध आ तैं कविताक बहिरंगक सङहि बहुत दूरधरि अन्तरंगो बदलैत छैक। एकरा (कविताक आधुनिकताकें) विवादास्पद बनयवाक प्रवृत्तिकें हम नीक नहि बुझैत छी। एतद्धि।

मनुक्ख जिबैत अछि

के कहलक जे मनुक्ख मरि गेल?
ई कथन फूसि थिक
ओ जिबैत अछि
जिबैत रहैत अछि
मृत्युक तमिस्रा जीवनक सूर्यकें
प्रतिदिन मारियोक' असफल रहैत अछि
सभ दिन भोरकें
अन्धकार चीरि क'
होइत अछि असन्दिग्ध
ज्योतिक विस्फोट
ऐतिहासिक सत्य थिक
जिनगीक चोट।
मनुक्ख थिक सत्य
मनुक्ख थिक शिव...सुन्दर
मनुक्ख थिक तथ्य
तैँ ओकर शिल्प, ओकर सृष्टि
गद्य, पद्य, चित्र आदि रचना समष्टि
प्वाइंट ऑफ आर्डर
फाइल परक नोट
जुलूस महक नारा
चुनाव कालक वोट
इजलासपरक जजमेंट
दस्तावेजक ड्राफ्ट
बाप-पित्ती, बहु-बेटी
सभकें लिखल पत्र
एक-एक शब्द
अर्थ

एक-एक अक्षर
रुदन-हास्य-गानकेर
एक-एक स्वर
समाज आ कि व्यक्ति
खाहे हो अस्वीकृति
खाहे स्वीकार
बनि गेल सार्वजनीन
विश्वक सम्पत्ति
जिनगीक आगिमे
मृत्यु जरि गेल
के कहलक जे मनुक्ख मरि गेल?

(ई कविता 'राजकमल' क जीवनकालमे लिखने छलहुँ आ आब राजकमलक स्मृतिकेँ समर्पित अछि।)

जिनगी : चरिटा दृष्टिखंड

जिनगी थिक
टिकट ट्रामक
अपन स्टापेज धरिक
यात्रा क'
ओकर उपभोग क'
चुपचाप
दैत'छि लोक जकरा फेकि।

जिनगी थिक
चून देल, चुनौल
दुहू हाथक बीच पौने
रगड़—थापर
तमाकुलकेर जूम

ठोरमे किछु काल जकरा राखि
जकरा भोगि थुकड़ि दैत'छि लोक
'पच' द' फेकि

जिनगी थिक
एक रचना
जे अपन शीर्षक सहित
जँ सम्पादक रहथि दहीन
तखन हैत न मेष अथवा मीन
नहि तँ अस्वीकृत बनाय सखेद
प्रेषके लग होइछ पुनि डिस्पैच।

जिनगी थिक
न'व कविता
किछु गोटयकें
जकर होइ छै
किछु गोटयकें न'हि
भावक बोध
अर्थक बोध
बोधगम्यो होइत जे
कहबैत अछि दुर्बोध।

पत्रोत्तर

खलियाहा मालक डिब्बा सन
एक कात
सेंटिंगमे काटिक' राखल हो लाइनपर
उपेक्षित
निरर्थक आ रिक्त
शून्य मोन हमर

रग बिरंगक वस्तु-जात सहसा भरि गेल जेना
ताहिना भरि गेल मोन सौंसे सर्वत्र
पहुँचल प्रिय नानाविध भावनाक पुंज लेने
आइ बहुत दिनपर
ई अहँक प्रेम-पत्र
पढ़िक' सब ज्ञात भेल
पुलक अकस्मात् भेल
स्नेह-सुधिक रसमे भ' रोम-रोम लिप्त
पढ़िक' प्रियपत्र अहँक
वाणबिद्ध क्रौंच जकाँ
विरह-विकल मन-पंछी गेल छटपटाय।

उत्तरमे हृदयेश्वरि
यैह समाचार जे... ... ...
विविध अभावक चक्रव्यूहमे पड़िक'
आवश्यकताक अनेक महारथीक
प्रहार
सहि-सहि क'
जीवन–अभिमन्यु भेल पराभूत
इच्छाक उत्तरा विधवा भ' गेलि
आ भविष्यक परीक्षित
गर्भस्थ औना रहल
दुःशासन–जीविकाक हाथें
सखि, द्रौपदीक
चीर जकाँ
विरहक दिन बढ़ले अछि जा रहल।

पुरानक मृत्यु आ नववर्षक जन्म

सुनू-सुनू ई सद्यः घोषणा
क' रहल जे निर्भय आ निःसंशय वर्तमान

डेथ कालम लेल एकटा छोटछीन समाचार छोड़ि
मरि गेल घबहा कुकूर जकाँ
क्षण-क्षण आ कण-कणकेँ बीति चुकल
झुल-झुल बूढ़ ई अतीत, ई पुरान
काल–'बस'क चक्कातर पिचाक'
छहोछित्त भेल
सरिपहुँ हे मित्र?
पुरानक मृत्यु भ' गेल।

कात महक किछु गोटयकें ई दृश्य
बहुत प्रिय छैक
ई सड़ाइन गन्ध
ई लावारिश लहास
एकर घिनौन रक्त
एकर मांस-हाड़-चाम
सभक फोटो ल' ल' क'
कते गोटय क' रहल अपन ऊँच नाम
किछु गोटय एकरे पोस्टर ल' हाथमे
गली-गली, सड़क-सड़क, घुमि रहल तमाम
जोर-शोरसँ क' रहल 'नारा'क विस्फोट
चलि गेल 'बस' केर नम्बरकें नोट
मुदा समय–'स्वीपर' स्वयं सभटा हटा देत
नहि तँ यातायात भ' जयतैक रुद्ध
सड़क 'जाम'।
हे पुरान वर्ष, राम–राम!

रातुक करिया तुराइकें चौपैति क'
प्राची प्रातः स्नान क' पहिरि रहल साड़ी
स्वर्णवर्ण 'वाश एण्ड वेयर'
मुस्कुराइत मंद–मंद

विहुँसि रहल नगर-ग्राम
वर्तमान आ भविष्य
घर-आङन, गाछ-वृक्ष, बाड़ी आ झाड़ी
मृत्युक अन्हारसँ बहराइत अछि इजोत
सांझहि सँ बन' लगैत अछि सरिपहुँ भोर
विगतेकेर अन्त थिक नूतन अनूप
पुरानक बाद अबैत अछि 'नव' मंगलरूप
आबि रहल नव शिशुक
करैत जाइ स्वागत
नव्य वर्ष, भव्य हर्ष
हे निरन्तर क्षयधर्मा, युग-युगसँ शाश्वत!

निवेदित

हम की करू?
हमर प्रेम;
फोटोक ओ फ्रेम तँ नहि थिक
जे फोटोक पुरान भ' गेलापर
वर्षाक टघारसँ
दिवार वा उचरिनक चटलासँ
दूरि भेल एक फोटोकें हटा क'
दोसरामे 'फिट' क' देल जाइत अछि।

हम की करू?
हमर प्रेम;
'पिकासो'क कलाकृति तँ नहि थिक
जे संरचनाक प्रक्रियासँ
रूपायित होइत अछि
आरम्भक क्षणसँ

'फिनिशिंग टच' धरि
नियोजित यथार्थकें अभिव्यक्ति दैत अछि
प्रदर्शनीमे सजलापर
जकर स्तुति लोक गबैत अछि
अमूर्तकें मूर्त करबाक जे महिमा पबैत अछि।

हम की करू?
हमर प्रेम;
कोनो एहन वस्तु तँ नहि थिक
जे हम कीनि क'
पौरिक' की ओरियाक'
भारमे साँठि दी
बेनमे पठा दी
की उपहारमे अर्पित क'
नैवेद्य जकाँ उत्सर्गि दी।
हम की करू?
हम स्वयं नहि निश्चयतः बुझैत छी
जे हमर प्रेम;
संगति थिक की विसंगति
स्थापित थिक की सम्भाव्य
पजेबा थिक की पजेबाक माटि।

हम की करू?
हम स्वयं नहि बुझि पबैत छी
तेँ हम अपन प्रेम
जे भरिसक अवश्य हमर 'हम' थिक
हमर समग्र सत्ता
से हम अहाँ लग निवेदित करैत छी
अपन समस्त अज्ञान
समस्त ज्ञानवत्ता।

एकः शब्दः

सृष्टिक आदिकालसँ आइधरि
वंशानुवंशक क्रमसँ
हमरा लोकनि सम्मिलित रूपें
बाँझ शब्दक गायकें
चरबैत रहलहुँ
आ ओकरे पंचगव्य पीबि-पीबि
परिशुद्ध होमक अहंकार
उपलब्धि भ्रममे भोगैत रहलहुँ
आरोपित सत्यक पाछाँ
एकटा विवश कुंठाक संग
अपूर्ण अर्थ-पथपर दोगैत रहलहुँ
मरि गेलाह दिलीप
मरि गेलीह सुदक्षिणा
निस्सन्तान
नन्दिनीक दूधक प्रतीक्षामे।

मुदा आइ अकस्मात्
भेटि गेल ओ शब्द
जकरा तकबामे आइधरि
जंगल-पहाड़मे
सागरक कछेरमे
द्यावा-पृथिवीमे
आ सार्थवाहक हेंड़मे
बौआइत रहलहुँ अछि
औनाइत रहलहुँ अछि
यैह छल हमरा लोकनिक
एक मात्र नियति।

मुदा आइ अकस्मात्
भेटि गेल ओ शब्द
अभिव्यक्तिक बाद जकर
नहि रहतैक शेष
समाहित छैक जाहिमे
पात्र-काल-देश
अशेष अर्थवत्ता
निरवधि परिवेश।

बीति गेल जकरा साधनामे
कोटि-कोटि अब्द
भेटि गेल अकस्मात्
आइ ओ शब्द
जे थिक चिर-शाश्वत
नाद कामधेनु
'बैखरी' सँ 'परा' धरि
चेतनाक वेणु।

अव्यक्त प्रणय

अहाँ छी
आ
हम छी।
ई 'आ' जँ हटा दी तँ
केवल
अहाँ-हम
छी!
शेष भीड़
सौंसे नगर

बोटेनिकल गार्डेन थिक।
अहाँ-हमक बीचमे
छोटका सन 'हाइफन' अछि
मने एकटा निःशब्द
अनस्तित्व
छोट-छीन चुप्पी
तैं भरिसक अहूँ चुप छी
आ हमहूँ चुप छी,
मने बाजब तँ बीचमे
एकटा व्यवधान भ' जायत
शब्दक
वा स्वर मात्रक
अतिरिक्त अस्तित्व
तैं सरिपहुँ आइधरि
अहाँकें ने टोकलहुँ हम
हाइफन हटि जयबाक
आकुल प्रतीक्षा अछि।

एकटा असमाप्त कविता : खुटेसल

हमरालोकनि बान्हल छी
हमरा सबकेँ अतीत 'हरी' मे ठोकने अछि
हजार-हजार वर्ष बितलाक बादो
हमरा सब निरन्तर चलैत
ओहीठाम ठाढ़ छी
हमरा लोकनिक अगिला पड़ाव
भरि दिन चललाक बाद
साँझमे
पुनः ओहीठाम होइत अछि

जत' भोरखन उठल छलहुँ
कोल्हुक बड़द जकाँ
हमसब समझौता-वादी छी
लड़बाक अपेक्षें हमरा सब
बचि जयबाक बाट बनबैत छी
जीवन भरि अतीतक पाउजे करैत छी
हमरा लोकनि
बापक बाप आ तकरा बापक बाप
माने संख्यातीत बापक परम्परामे
जिबैत छी
एकटा दुर्निवार माया
सौंसे देशकें
अपना आँचर तर झपने अछि
तैं हाँजक हाँज लहाशक संग रहबामे
गौरव-बोध होइत अछि
लहाश सभक अनेक अक्षौहिणी
हमरा सभक माथमे प्रेतनृत्य क' रहल अछि
समस्त वर्त्तमान आ भविष्यकें
एकटा अजोध अजगर दकचने अछि
अपन चोख बिखाह दाँत
हमरा लोकनिक पीठमे भोकने अछि
हमरा लोकनि बान्हल छी
हमरा सभकें अतीत 'हरी' मे ठोकने अछि।

एकटा प्रत्याख्यान

हे बन्धु,
अहाँ अपनाकें की बुझैत छी?
(आक्रोश नहि, ईर्ष्यामर्ष नहि,
अपमान नहि, हीनता-बोध नहि)

जँ साँच गप्प कहि दी
तँ अहाँ अपनाकें
सव्यसाची अर्जुन बुझैत छी
महाभारत-विजेता, पुरुषार्थी, महापुरुष!
मुदा बुझा दी ओकर यथार्थ स्वरूप?
ओ केवल निमित्त मात्र छल
स्वतंत्र व्यक्ति नहि छल
कोनो कुरुक्षेत्रक एकटा माध्यम
कोनो महाभारतक एकटा संज्ञा
ओकर अप्पन किछु नहि छलैक
जीवनक समस्त साधना आ उपलब्धि
ककरो इंगितक अधीन
परतंत्र छलैक
गाण्डीव छलैक ककरो दान
से जखनहि ओ बुझने छल
तखनहि अपना आत्मबोधक होइतहि
अपना सारथिक सोझँहिमे
बीचे कुरुक्षेत्रमे
युद्धारम्भक पहिनहि
हड़बड़ा क' फेकि देने छल।
ओकर रथ अपन नहि छलैक
ओ छलैक ओकरा सारथिक
जे सारथिक इच्छासँ चलैत छलैक
कहियो ओकरा मोनसँ रथ नहि चललैक
ओकर पौरुष छल आरोपित
ओकर विज्ञान छलैक दोलेबल
गीतासँ ओहिमे सोङर लगौल छलैक
युद्धक सभटा क्रिया-प्रतिक्रिया
ओ अपने नहि
अनका संकेतपर करैत छल

दहिना हाथें हो कि बामा हाथें
ओकर सव्यसाचित्व छलैक परतारब
एकटा प्रलोभन,
फुलयबाक विशेषण
नहि तँ
द्रौपदी
जकरा ओ एकसरे स्वयंवरमे जितने छल
ओकरे टा नहि
आनो चारि पुरुषक भोग्या स्त्री होइतैक?
की ओकर आत्मज अभिमन्यु
ओना चक्रव्यूहमे असहाय मारल जइतैक?
की ओ अपने सहोदर कर्णक
जानी दुश्मन होइत?

से हे फूसि भ्रममे पड़ल बन्धु,
ने ओकर संकल्प अपन छलैक
ने विकल्प
ने ओकर युद्ध अपन छलैक
ने पराक्रम
ने ओकर विजय अपन छलैक
ने पुरुषार्थ
ने ओकर फल अपन छलैक
ने फलभोग
ने ओकर माए छलैक अपन
ने ओकर बाप छलैक अपन
तैँ ने अन्तमे एही महाग्लानिसँ
हिमालयक बर्फमे चुपचाप
गलि गेल–गलि गेल!

यात्राक सार्थकता

उठि रहल डेग
बढ़ि रहल वेग
संघर्ष-मोनिमे बाझल आ चकभाउर दैत
जीवनक नाह
द' रहल भुजाकें न'ब जोर
मंसूबा के उठइछ हिलोर
आगाँ बढ़बाकेर शपथ दैछ
कंटकित पथक प्रत्येक 'मोड़'
उद्घाटन अछि क' रहल जेना
प्रत्येक बेर भोथिआयेब
एकटा नव दिशाक
नव सूर्योदय केर उद्घोषक
होइछ अन्हार जहिना निशाक
बुझि लेत अवश्ये
हमरा पाछाँ आबि रहल नबका पीढ़ी
सृष्टिक आरम्भहिसँ ल'क'
अछि बनल मृत्यु सब बेर हमर
जीवनक सुदृढ़ अगिला सीढ़ी

यात्राक प्रतिचरण सार्थक अछि
ई सबटा श्रेय इजोतक थिक
जे एक-एक 'इति'
अति सशक्त
ऊर्जस्वल 'अथ' केर द्योतक थिक
आहत सैनिक केर घाव जकाँ
भरि रहल पराजय भावक व्रण
अगिला मोर्चा लेल प्रस्तुत अछि

शाश्वत योद्धा
ल' नूतन प्रण
नहि अस्वीकृति
नहि अविश्वास
नहि निराशाक कटु गाथा अछि
असफलता केर प्रत्येक श्वासमे
दीपित जीवन-आस्था अछि।

निर्वासित अपने देशमे

हम यैह छी एत्त'
ओमहर कत' तकइ छी?
हम छी असुरक्षित। उपेक्षित जगहमे।

अहाँक दृष्टि तँ ओझरायेल अछि
बाभन, कायस्थ, क्षत्रिय, भूमिहार
आ यादवक छहरदेवालीमे
मुदा हम छी एत्त'
छहरदेबाली सबसँ फराक
हास्यास्पद
द्वेषपात्र
अनफिट
एकटा मनुष्यमात्र
कहि नहि कक्खन के
हत्या क' देत
नोचि क' खा लेत।

हम छी एकसरे
भीड़सँ पृथक्
पछुआयेल (तिरस्कृत)
आ अहाँकें भीड़ चाही

देश-सेवा लेल पार्टी चाही

हम छी स्वतंत्र
अहाँकें कोनो तंत्र चाही
अपन कोनो झंडा चाही
नारा चाही, मंत्र चाही
अहाँकें चाही अप्पन कोनो वाद
कोनो परिवेश।
हे भगवान,
हमर तखन थीक कोन देश?

धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'



पूर्ण नाम–धीरेश्वर झा (पितामहक देल)
उपनाम–धीरेन्द्र (बापक देल)
पिताक नाम–पं. भुवनेश्वर झा
जन्म स्थान–लोहना (दरभंगा)
जन्मतिथि–14 जुलाइ 1934 ई.
योग्यता–एम.ए. (हिन्दी एवं मैथिली)
वृत्ति–अध्यापन
विशेष-रुचि–एकान्त-कोठलीमे बैसि पढ़ब आ लिखब।
क्रमबद्ध लेखन–1945 ई.सँ
प्रथम मैथिली प्रकाशन–'सभ्यलोक' : गल्प : वैदेही-अगस्त '53
प्रकाशित-रचना–भोरुकवा (उपन्यास)। अनेक गल्प, कविता, एकांकी, निबन्ध, लघु कथा, वार्त्ता, गीत-रूपक, आलोचना एवं बाल-साहित्य विभिन्न पत्र-पत्रिकामे।
अप्रकाशित-रचना–गल्प, उपन्यास, नाटक, एकांकी, कविता, गीत, निबन्ध, 24 गोट पोथी बाल-साहित्यक आ 20 गोट पोथी विभिन्न साहित्यिक विधा सँ सम्बद्ध। एहिमे सँ 12 गोट पोथी सम्प्रति यन्त्रस्थ अछि।
सम्पादन–जनवरी '57 ई. सँ दिसम्बर '60 ई. धरि 'धीया-पुता'क (मैथिली बाल मासिक)।
वर्त्तमान पता–आर.आर. डिग्री कालेज, जनकपुरधाम (नेपाल)
स्थायी पता–विश्वेश्वर साहित्य कुटीर, ग्राम-लोहना (पश्चिम), पो.–सरिसव-पाही, जिला–दरभंगा (भारत)

वक्तव्य

सांसारिक आघातसँ उत्पन्न व्यथासँ मुक्त हएबाक शाब्दिक चेष्टा कविता थीक। एहि हेतुएँ कखनहुँ उच्छ्वास लेल जाइछ, कखनहुँ कोनो कोमल-तरल चित्र अंकित कए स्थितिक कटुताकेँ बिसरबाक प्रयास होइछ, कखनहुँ कोनो मानसिक-क्रीड़ा दृष्टिगोचर होइछ तँ कखनहुँ व्यक्ति अपन अपरिचित आत्मिक शक्तिकेँ जगयबाक यत्न करैछ। जीयब नियति थीक, भोगब सेहो आ एहि द्वारा प्राप्त अनुभूतिकेँ सहज-अभिव्यक्ति देब इएह थीक कवि-कर्म!

भोर

मीलक भोंपा जेकाँ बाँग देलक मुर्गा,
चलल हेंज बान्हि-बान्हि पंछी-मंजूर;
आर एम्हर जरि उठल दिवाकरक भट्ठी,
कहलक लोक जे भोर भ' गेल।

गामक पत्र

उज्जर धप-धप इनवेलपमे
मोड़ल-मारल सन कागतपर,
आबि गेल अछि गामपरक ई पत्र।
उत्सुकतावश खोलि पढ़ै छी—कारी-कारी आखर!
'चिरंजीव! सकुशल होयब, पहुँचल परसू सय-गोट रुपैया;
सभ कुशल अछि।'—एक पंक्ति ने बेशी, एक पंक्ति ने थोड़।
जानि-ने किए अछि उमड़ि रहल ई चंचल-चंचल नोर!!
फेर पढ़ै छी—फेर पढ़ै छी—फेर पढ़ै छी...।

एक पंक्ति ने बेशी, एक पंक्ति ने थोड़
आबि गेल अछि गामपरक ई पत्र!

मनुक्ख आ मशीनी आदमी

तोरा संग हँसैत छी,
तोरा संग बजैत छी,
खा लै' छी तोरा संग
दू-खिल्ली पान।
तेजी सँ चलैत छी,
जोरसँ बजैत छी,
रहैत अछि ठोर पर
हरदम मुस्कान।
बुझि लेलह से तों
जे हल्लुक छी तूर जकाँ?
सहि लेब अवज्ञा
फेकल नूर जकाँ??
बदलि गेल मेघक
हएत न अवधान?
मुदा गप्प से नइ छै' मित्र!
हँसी देखलह अछि, हँसीक भितरिया नोर नहि।
चंचलता देखलह अछि, अन्तरमे पालित होड़ नहि।
नुकायल जे मुस्कीक निच्चाँमे बिहाड़ि
से तोँ देखलह अछि कहाँ!!
इच्छा छल बाँटि दी अप्पन मुस्कान,
नोर आ बिहाड़िकें पीबि जाइ घोंटिकें
डुबा दी व्यष्टिक वेदना समष्टिक समुद्रमे
(मोन नहि छल जे समुद्रक पानि नोनगर होइछ;
प्यास ओ मेटाओत नहि!)
तएँ कएल ई सभ!

मुदा नमस्कार मित्र!
देखि लएह कृत्रिमताक उच्च-पहाड़
अर्चना करए लागह गम्भीरता बुझितो
बिना बुझने बिहाड़िसँ पूर्वक शान्ति
बिना बुझने मैत्रीक पंडुकीक हत्या।
(मुदा बात एतबए जे
मनुक्ख मरि गेल।
ई जे देखैत छह
ओ थिक मशीनी आदमी!)

एक गोट प्रेमपत्र स्वकीयाक नामे

लिखलह अछि तों नोर भरल आखरमे
जे पुनः तोहर ओगरल सिमरक फ'ड़सँ
तूर उड़िया क' भागि गेल;
आ दुश्मन सभ ठहाका मारि देलक
आ से तों आब जीबय नहि चाहैत छह
मुदा हम कहबह जे कायर नहि बनह
तथ्यतः ई जिनगी थिक पचीसीक खेल,
जरूरी नहि छै' जे सभ बाजी जितबे करी
हारि एहिना होइ छै'।
(आ पबन्नीक डर तँ हरदम रहैछ।)
मुदा हारि वा पबन्नीक डरें केओ पचीसीक खेल
छोड़लक अछि बताहि???

कालक नियन्ता आ चाह

कालक नियन्ता, समयक थर्मससँ, वर्षक एक कप चाह
उझिलिकें पीबि लेलक आ गम्भीर भए बैसि रहल

सोचैत छी हम जे ई चाह जे हम बनौने छलहुँ ओकरा केहेन लगलै'?
केहेन लगलै' ई चाह ओकरा? दूध, लीकर, चीनी सभ ठीक छल ने?
मुदा ओ गम्भीर भए बैसल अछि आ हम ओकर मुँह ताकि रहल छी!
आ ओ हमर कड़ियल बॉस जेकाँ गुम्म भेल बैसल अछि।
हम की करू! दोसर कपक लेल पानि चढ़ा देल अछि!!

चिचिया उठल अश्वत्थामा

लएह! चिचियाएल अश्वत्थामा दूध आ'र रोटीकेर खातिर!
सम्हरह द्रुपदक औरस! आब ने मानत द्रोण!!
स्वयं सहै' ले सहओ ओ जे किछु; मुदा संतति चिन्ता,
उद्वेलित ओकरा क' देतै;
विद्या अप्पन घोंटि-घाँटि क' फेकत एम्हर-ओम्हर!
अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर सन-सन कतेक रथी, महारथी होयत।
(अनीति दूरमे बुझा रहल अछि शंका कोनो महाभारत केर!)

बुलबुलक गीत

एक दिन बुलबुलक एकगोट जोड़ा, आहारक खोजमे
अरबक मरुभूमिकें छोड़ि पुरुब भागक जमीन दिस भागल
आ जत' ओ आयल, ओत' ओकरा आधार भेटलैक,
आहार भेटलैक आ कालक्रमे जन्म लेलकैक मारतेरास बच्चा-बुच्ची
मुदा कहियो एकाकी क्षणमे अरबक ओ भूमि मोन पड़ै ओकरा
आ ओ कान' लागय, जकरा लोक ओकर गीत बुझय!
परिस्थितिक झमारमे छिना गेल माटिक लेल, कनबाक ई परम्परा
ओकर पुश्त-दर-पुश्त धरि चलैत रहल;
आ बुलबुलक गीत सुनल अछि अपने? कतेक करुण होइछ!

तरेगनक हेंज आ चान

तरेगनक हेंजमे उगि आयल चान
कि छिड़ियबैत इजोरियाक मुस्कान!
सोचैत जे केओ-ने-केओ 'हमदम' भेटत,
कटि जायत ग' ई राति बजबामे ओ गप्प करबामे
नहि होयत किछु ज्ञात काजकेर थाकनि
(मुदा कहियो हेंजमे हमदम भेटल अछि??)
हेंज तँ बस हेंज थिक!
छोड़ि दएह ई आश तों हे चान!
जे कि एहि तरेगनमेसँ केओ बढ़ा सकता' मित्रताकेर हाथ;
किए' तँ ई दुर्बल-हृदय सभ सोचैत छथि
जे आबओ अमाकेर राति जल्दी,
जाहिसँ ई लोकनि सेहो चमकि लेथि दू-चारि क्षण धरि!!
(किए' तँ तोहर दीप्तिमय-प्रतिभा
तेजसँ कए दैत छनि हिनका लोकनिकें हीन।)
तएँ सुनह हे चान! जरह!! एकाकी जरह!!!
कनेको मद्धिम ने होअओ तोहर अमल-मुस्कान!

हैंगरमे टांगल कोट

चेतनाक हैंगरमे टाँगल अछि बहुत-राश स्मृतिक कोट!
पहिल कोट देखैत छी
तँ हमरा एकगोट झंखुरल वृद्धक चेहरा देखाइछ;
मने एकगोट चिर्री-चिर्री भए गेल ऊनी कोट हो!!
छैहो किछु ओहने सन–
अरमानक कपड़ा फाटि गेल कहिया ने;
धैरजकेर सीअनि उघरि गेल कहिया ने;
जीवन जे रफ्फूपर चलि रहल

ओ आ'र थीक की?
एहि कोटमे उझकैत चेहराकें जनैत छी
ई हमर बाप थिकाह!
दोसर कोट हिलि रहल–
शार्क-स्कीन जकाँ
ममताक कोमलता नेने ई नाचि रहल अछि
ताकि रहल बदहवाश एक गोट चेहरा
चेहरा जे नारीक थिक
जकर बच्चा सभ दुखीत छै'
जकर पौत्र गड़ा' गेल गाड़ामे
जकर बेटा दोसर देशमे गुलाम अछि
जकर एकगोट बेटा फौजी बनि गेल
आ जे सोचैत रहैछ हरदम जे फुलवारी ओकर उजड़ि गेल!
जनैत छी खूब हिनका–
ई हमर माय थिकीह–बताहि भए गेलीह अछि
हिलि रहल अछि तेसर कोट–
फौजी बिल्ला लगओने छोटे मोन पड़ैत छथि
रेड क्रॉसक बैज लगौने कहि रहला' ओ–
प्रणाम भाइ! जा' रहल छी लामपर।
तंग आब नहि करब!
डॉक्टरेट अहाँ जरूरे लए ली
अहाँकेँ शपथ हमर!!
हम तँ कुल बदलि लेल, आब हम सैनिक छी!!
परिस्थितिक बसात
एहि हैंगरमे टांगल कोटकें हिला दैत अछि
हम ठहाका लगबैत छी,
खूब गप्प हँकैत छी;
मित्र लोकनिसँ झगड़ा करए लगैत छी
आ नव-नव फिलॉसफी छाँटय लगैत छी
के बुझि सकत जे

ई सभ हम एहि दुआरें करैत छी
जे हमर चेतनाक हैंगरमे टाँगल अछि
बहुत-राश स्मृतिक कोट?
आ ओकरा बिसरि नहि पबैत छी
ओना बिसरय चाहैत छी–
चाहक पियालीमे
ठहाकाक लहरिमे
फिलॉसफीक मोनिमे
ओकरा डुबबय चाहैत छी
मुदा ओ अछि जे हिलि रहल
हिलि रहल
चेतनाक हैंगरमे टंगल-टंगल!

मेघ आ अभिसार

उमड़ि आएल अछि मेघ चतुर्दिक कारी-कारी!
घुमड़ि रहल अछि, गरजि रहल अछि, पसरल अछि
बेकार निगेटिव सन अन्हरिया; जइमे देखी लेपल-लापल चित्र!
तैयो हम बढ़ले जाइत छी महा भयाओन एहि रजनीमे
कौखन यदि लओकए बिजलोका तँ अपन बाटपर
देखी खाली साँप-फेन काढ़ने आ छोड़इत फुफकार
ओम्हर टर्र-टें करइछ ढाबुस-बेंग
भयदायक बनि गेल हमर परिवेश
(आर हमर चोरबत्तीमे अछि बल्व नदारत!)
तैयो कहू कोना हम बिलमब;
वटावटीमे बैसि रहल छथि आकांक्षा–अभिसारिनि।
तखन हमर ई डेग उठल जे एहि बाटपर
घुरत कोनाकें?
उमड़'-घुमड़' मेघ! उठा' लेल हम डेग जखन तँ
फिरब कोनाकें???

मायानन्द मिश्र



पेसर पं. श्री बबुनन्दन मिश्र। साकिन बनैनियाँ, पो. बनैनियाँ, जि. सहर्षा
जन्म : बनैनियाँ, 17-8-1934 ई.
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी, मैथिली)
वृत्ति : अध्यापन, सहर्षा कालेज, सहर्षा
रुचि : कथा-साहित्य-पाठन, भ्रमण आ आलस्य-सेवन
लेखनारम्भ : सन् 1948 मे, मैथिलीमे
पहिल रचना : 'हम रेल देखब' (गल्प) स्कूल पत्रिका सन् 49 ई. मे सन् 50 ई. मे 'गीत' बुढ़बा मिथिला मिहिरमे
प्रकाशित पोथी : जे भाग्यें प्रकाशक ताकि लेलक
1. भाङक लोटा (हास्य गल्प) सन् 51 ई. मे
2. आगि मोम आ पाथर (गल्प संकलन)
3. बिहाड़ि पात आ पाथर (उपन्यास)
4. खोंता आ' चिड़ै (उपन्यास)
5. दिशान्तर (काव्य-संकलन)

अप्रकाशित पोथी–जे प्रकाशक पटियाब' लेल व्यग्र अछि।
1. माटिक लोकः सोनाक नाह (उपन्यास)
2. चन्द्र-बिन्दु (गल्प-संकलन) प्रेसमे।
3. एक्के बापक बेटा (रेडियो नाट्य संकलन)
4. मैथिली काव्य : आधुनिक काल (समीक्षा)

कलमस्थ :
1. पुनश्च (उपन्यास)
2. अनेक एक (उपन्यास)
(फेर केओ नाम नञि टपा लेब)

अंत मे : धन्यवाद हे मैथिली पाठक! अहाँ अनेक लेखकक अनेक रचना केँ घिघड़ी कटा क' राखि देल। नञि तँ...।

वक्तव्य

स्थानाभाव, प्रयोजनहीन तथापि तीनटा पंक्ति। विशेष द्रष्टव्यः (दिशान्तरक भूमिका) मैथिलीक साम्प्रतिक काव्य नवीन युगबोधक काव्य थिक। समकालीन जीवन अर्थात् हिंसा, रक्तपात, साम्राज्यवादी नीति, छल-छद्म, द्वेष, वैषम्य, कुंठा आ अनास्थाक जीवन थिक आ समकालीन काव्य तकरे अभिव्यक्ति दैत अछि आ तैं एकरा स्वरमे छैक परम्परा-विद्रोह, व्यंग्य-विद्रूप, त्रस्त व्यस्त निखिल मानवता लेल संवेदना आ दुर्बोधता। नवीन भाव-सम्पदा एवं अनुभूति-गरिमाक अभिव्यक्ति नवीन अभिव्यञ्जना पद्धतियें करब, यैह थिक समकालीन मैथिली काव्यक मर्म–बिन्दु।

साम्राज्यवाद

विश्व-शान्तिक द्रौपदी केर
चीर खिंचने जा रहल अछि आन्हरक सन्तान
(दृश्यकेर वीभत्सता केर छैक ने किछु भान)
कौरवी लिप्सा निरंतर आइ–
बढ़ले जा रहल दिन राति
वृद्ध सब आचार्य केर प्रज्ञा गेलन्हि हेराय
मूक, नीरव, क्षुब्ध आ असहाय
किन्तु,
किन्तु सागर मध्य उठले जा रहल भूकम्प,
जन-मनक पुनि कृष्ण-अप्पन–
ताकि रहला' शंख।

मानवता

मुँहमे एखनहुँ पड़ल छै–
अधचिबाओल, हरित, कोमल आस्था केर शस्य
कानमे एखनहुँ गुंजै छै तानसेनक गीत
कण्व-दुहिता-प्रीत
किन्तु
दुष्यन्तक देखि भीषण रथ
धनुष आ तीर
भयाकुल अछि हरिन-दल संत्रस्त
द' रहल चकभाउर ठामहिठाम।

हे अबैबला युग

हे अबैबला युग
अहाँ पढ़ब
अहाँ इतिहास पढ़ब–
जे हमरामे सबकिछु छल
चान-सूर्य आ नक्षत्रकें बना लेबाक दुर्जेय शक्ति

हे अबैबला युग, अहाँ पढ़ब, इतिहास पढ़ब जे–
हमरामे सबकिछु छल
मुदा मात्र 'हम' नञि छल
(मने भीतरक मनुष्य मरि गेल छल)
तैं हे अबैबला युग
अहाँ मुइल बापक संतान हैब।

विज्ञान

कुम्भकर्णी निन्दमे सूतल छलै ओ दैत्य
छलै शक्ति अपार
राज-आज्ञा टा छलै आधार
निमिष भरिमे बना लीतै गाहियो भरि चान
गाहियो भरि सूर्य
निमिष भरिमे सोखि लीतै सातटा रत्नेश
निमिष भरिमे बना लीतै सब भुवन, सब लोक
मुदा
अहं-डनियाँ राजपुरुषक मते देलकै मारि
लगौलक ठोकर
उठल ओ दैत्य
छलै शक्ति अपार
राज आज्ञा टा छलै आधार
राजपुरुषक पाबि क' संकेत
आन्हर दैत्य
लागल कर' ताण्डव नृत्य
क्षणहिमे उठि गेलै हाहाकार
छलै शक्ति अपार
राज आज्ञा टा छलै आधार।

युग वैषम्य

कर्णक कवच कुंडल जकाँ
हम अपन सम्पूर्ण भोगाकांक्षा
परिस्थिति-विप्रकें दान द' देल
हमर बाप द्रोणाचार्य नहि रहथि
तथापि हम अश्वत्थामा छी

वंचना हमर माय थिकि–
जे कुंठाक दूघ घोरि रहली अछि।

अहाँ की छी?

अहाँ प्रलोभनक नाक काट' बला मर्यादा नञि छी
नग्नताकें आवरण दै वला शील नञि छी
संतुलन राख' बला
ट्रैफिक गाइड जकाँ चौबटिया पर ठाढ़
दुनू हाथ उठौने अहिंसो नञि छी।
अहाँ छी
अर्धनग्न भेल
बलात्कारक लेल प्रस्तुत वियतनाम
अहाँ छी
कोडोपैडीन खा-खा क' तत्काल अपन मथदुखी
–कें दबब' बला क्षुब्ध हिमालय
अहाँ छी अपन खंडित रसना कें दाबि
चुपचाप कान' बला सिन्धु
वस्तुतः अहाँ छी एकटा बिन्दु
जाहिठामसँ अनेक रेखा तँ खींचल जा सकैछ!
किन्तु ओ सबटा दुर्जेय चट्टानक–
कोनो विराट अन्हार गुफाक अंतहीन घाटीमे
जा क' समाप्त भ' जाइत अछि
सरिपहुँ ई प्रश्न अछि जे अहाँ की छी?

नवका पीढ़ीक विद्रोह

हमरा सब अपन-अपन कब्रमे पड़ल छी
नाक धरि गड़ल अछि

अंग सब सड़ल अछि
हमरा सब अपन-अपन कब्रमे पड़ल छी

हमरा सब ने धरतीक जोंककें देखि सकैत छी
आ ने आकाशक गिद्धकें रोमि सकैत छी
आ ने रावणी छल-छद्‍म
कौरवी लिप्सा
इडिप्सक भ्रमसँ मुक्त हैबाक कल्पना क' सकैत छी
आ तैँ हमरा सब अपन-अपन कब्रमे पड़ल छी

हमर पूर्वज
छल-छद्‍म आ भ्रमक आत्मज थिकाह
(ओ सत्यक रथी नञि भ' सकैत छथि)
आ' तैं हमरा सब एखन अपन-अपन कब्रमे पड़ल छी
आ ताकि रहल छी बाट
जर्जर वृद्धक मरबाक
आ तखन कब्रसँ बहराएब
कौरवसँ युद्ध करब
जोंककें थकुचब
गिद्धकें बैलाएब
मुदा ता–
हमरा सब अपन-अपन कब्रमे पड़ल छी।

आस्था

बाट केर असमर्थता आ अभावक सब खाधिकें
हम बामनी एहि पएरसँ निश्चय करब ग' पार।
असम्मानक काँटसँ एहिखन भने हो–
पएर ई लिधुराह
किन्तु

मनकेर चेतनामे नहि देबइ लाग' अवश्ये
आलसक ओ बीझ
हम अपन विश्वास केर एहि घूड़मे
उत्साह केर सदिखन लगाएब ढेङ।
बिनु अपन गन्तव्य धरि थाक' देबइ नहि
हम अपन अस्तित्व
प्रबल ई अस्तित्व
सबल ई अस्तित्व।

बिरड़ो

अछि छोट वृत्त
चंचल
अमांगलिक
क्षणभंगुर
ईर्ष्याक एक मुट्ठी बसात
असमर्थताक किछु ख'ढ़ पात
सब निराधार
तैयो क्षणभरि लए बिलमि जाउ
थुकथुका लिय'
बढ़ि जाउ प्रगति केर बाट–
अपन उत्सुक पिपनीसँ तकइत अछि।

एकटा नखशिख : एक दृश्य

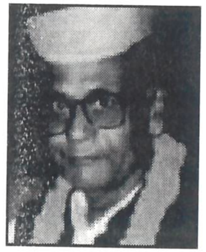
बिनु पानक ऊषा सन गुलाब
हँसीक बिरड़ोमे एकटा परिक्रमा समाप्त क' लेलक
ओ बिरड़ो
अमृतक घाटीसँ चलल छल

आ आँखिक समुद्रमे आबि क' डूबि गेल
समुद्रक पैघ-पैघ मीन
नवीन प्रवेशक नवीन उत्तेजनामे
नाचि गेल
नाचि गेल आ नतमुख भ' गेल

मुदा ता'
बिजुलीक दुइटा विकसित फूल
बिरड़ोक शेषान्तमे
दुलकि क' लजा रहल छल
आँचरक पारदर्शी हाथ नियंत्रणक लेल—
उताहुल भ' रहल छल।

हँसीक एकट बिरड़ो उठल कि मन-आकाशमे
भावनाक ख'ढ़पात सब उड़िआए पुड़िआए लागल
(हंसीक एकटा बिरड़ो उठल कि जुलुम भ' गेल।)

हंसराज



नाम : मन्त्रनाथ झा 'हंसराज'
पिताक नाम : पं. यदुनाथ झा
जन्म-स्थान : उजान, लोहना रोड, दरभंगा
जन्मतिथि : 18-11-35 ई.
योग्यता : बी.ए. ऑनर्स
वृत्ति : पत्रकारिता
क्रमबद्ध लेखनारम्भ तिथि : 1948 ई.
प्रथम प्रकाशन : 1952 ई.
प्रकाशित रचना : कविता, कथा, निबन्ध, आलोचना, अनुवाद, परिचर्चा (पुस्तकाकार कोनो नहि)
अप्रकाशित रचना : तीनटा कविता संग्रह, पाँचटा कथा संग्रह, तीनटा उपन्यास, चारिटा अनुवाद, एकटा परिचर्चा, पाँचटा बाल-साहित्य, चारिटा निबन्ध संग्रह एवं अनेक विविध रचना।
विशेष रुचि : अध्ययन, भ्रमण आ गप्प।
स्थायी पता : ग्राम-उजान, पोस्ट : लोहना रोड, जिला-दरभंगा।
वर्त्तमान पता : मिथिला मिहिर, पटना-1

वक्तव्य

कविताक प्रसंग हमर छोटछीन दृष्टिकोणात्मक वक्तव्य ई अछि।

हमर धारणा यैह अछि जे रचनात्मक साहित्य लिखनिहारकें कोनो प्रकारक वक्तव्य नहि देबाक थिक। हमर प्रत्येक रचना हमर वक्तव्ये थिक। तैं विशेष किछु नहि।

अस्वीकृति

कमल, थलकमल-नारी, शय्यागत, मौलायल
कहैत छथि पुनि बेर बेर सभ दिन जकाँ—
'आउ, अहाँ हमरे लग आउ,
वरण क' लिय' हमरा,
शरण देब हम,
अहाँ हमरे अनुसरण करू।'
—'हे कमल!
अहाँ हमर मोह त्यागि दिय'
अहाँ हमरा शरण नहि द' सकब
अहाँक सम्पूर्ण आवरण-अस्तित्व लाल अछि,
केवल लाल टुह टुह।
हम तँ लाल नहि रङलो नहि, उज्जर छी
हम अधिक उज्जर छी, साफ।
आ, चाहैत छी आर अधिक स्वेत, धवल!
कामना करैत छी जे उगैत रहओ दिनकर!!
अन्हार कक्षमे एकसर ठाढ़ निर्लिप्त
हमरा मोन होइत अछि वातायन द' कहि देबाक
उत्तर, अस्वीकृति।

एकटा मनः स्थिति

कखनोक' मोन होअय
कोठलीक खिड़की केवाड़
छोट-पैघ सभ गवाक्ष
बन्द क' अन्हारमे—
ठाढ़ भ' अपन दुनू तर्जनीकें ठूसि कान
मूनि आँखि,
बाबि मुँह
काटी बफ्फारि हारि जीवन-संग्रामसँ।

भय

अबैए, अबैए, धरती तल पर पसर' अबैए सिनुरिया प्रात
लगैए क्षणहिमे सिनुरक अर्ध-ठोप
भ' जायत चकमक स्फटिक गोला
आ, हँसत धरती 'वैनीआहपिनाला'सँ
मुदा, हमरा लगैए,
लगैए हमरा इन्द्रधनुषी प्रात
भ' जायत सत्यक नग्न-मूर्ति
आ, तखन तँ शंकाक मेघ पड़ा जायत
तर्कक आघात सहि
पति होयत असंख्य आन्हर
अवरुद्ध देखि जटिल मार्ग
ओझरायल बाट परक
गरिआओत भोतिआयल पथिक
चौबट्टी परक मूर्खता
अनन्तमे बौआ जायत
जेना बौआयल छी हमहूँ

भरि-भरि राति श्मशानमे
मृत्युक हाड़क बोझ माथपर उठौने
बिसरल-बिसरल बात कतेक
सोचि-सोचि बौआयल छी
बुझि-बुझि क' बात कतेक
तैयो सचेत रहि
कामना हम कयने छी संसार-पथक एहने
(जे)
हमरे जकाँ सभकें बौअयबाक थिक
आ, कँपैए, तें कँपैए हृदय हमर (जे)
अबैए अबैए धरती तलपर अबैए सिनुरिया प्रात
(जे) क्षणहिमे भ' जायत सत्यक नग्न-मूर्त्ति।

तरंग

बीच जल-तरंगमे झिलहरि खेलाइत
तीनटा कुमारि नव यौवना
करुआरि ल' नाओ खेबबाक निमित्त
झगड़ा करैत, एकेबेर गंगामे कूदि गेलीह!

खाली डगमग करैत नाओ
भसिआयल जा रहल अछि
आ ठेहुन भरि नाओक पानिमे
डूबल अछि करुआरि।

ललाओन खरखर पाथरक सोपानपर बैसल हम
देखि रहल छी घोर-मट्ठा हिलकोरसँ होइत एकाकार
नीरव, नील नभमे उठल अछि बड़ी जोर बिहाड़ि।

लाज

ओहि दिन क्रोधावेशमे
जखन हम अपन बापक कपार फोड़ि देल
तँ भरि गामक हगामा लोक जमा भेल।
आ, बिना किछु बुझने
बिना किछु सुनने
सभ हमरा कहलक, 'दुर छिः, दुर छिः।'

आ लाठी पटकि जखनि हम
घाड़ सोझ क' कह' लगलहुँ
तँ सभ क्यो बुझलनि
सब क्यो सुनलनि
आ, सभ हमर बापकें कहलनि—'दुर छिः दुर छिः।'

किन्तु जखन हमर बाप
माथहाथ द' साश्रुनयन कहलनि
तँ सबकिछु बूझि क'
सभटा सुनिक'
सभ क्यो अपन मुँह लाजें लाल क'
घर जाइत गेलाह।

शेष परीक्षा

ई जे नगारा बाजि रहल अछि—
दिन बदलबाक अवसर आयल अछि
एहि झड़ित युगमे
निर्मम नूतन अध्यायकेर आरम्भ ले'
भ' रहल अछि ई अपव्यय!

निष्ठुर अन्याय भूत
हा, ई भविष्य दूत
कृपणताक पाथरकें ठेलनिहार बाढ़ि
ऊसरक व्यर्थ ई वेष बदलि रहल अछि
नवीन माटि तकर जगह भरैत अछि
नमल मृत-माटि-स्तरक सङ नहा
लुप्त गह्वर भरैत अछि
मरुभूमि पटा घास जनमैत अछि
दुर्बल खेतक चिर-दुर्बलता
निःशब्द जेना ई रहय बौक,
हृदयसँ मृतक किन्तु
कोना मुइल घरमे अन्न ई अनैत अछि?
अपव्ययक झड़की जखन लगैत छैक
भरारक दुआरि खोलि चार उड़ा दैत अछि
अपघातक धक्कासँ शरीरकें छुबैत,
हठात् अपमृत्युक संकेत पर नव फसिल
नव खेतमे अबैत अछि
शेष परीक्षा
दुर्दैव निर्णय रहत,
जीर्ण-युगक संचयसँ की रहत की जायत?
आइ भेल ई जीर्णताक चिह्न
तँहि अछि ई नगारा ढनढना क' बाजि रहल।

बिसरल-बिसरल

हम प्रसन्न तँहि जे
माय-बाप-भाय-भाउज-बहिनि आ बहिकिरनीसँ
चोरा नुका क' अहाँ हमर भेंट धरि करैत रहलहुँ

आ, सुखायल हमर ठोरकें बिहुँसि-बिहुँसि हँसबैत रहलहुँ
आ, कहियो कहियो कखनहुँकें
कातमे बैसि
पंजा लड़बैत
आंगुर फोड़ैत
आ, आंगुर फोड़बैत
एहिना बिहुँसैत
किछु काल रहैत
सभ किछु सुनैत
सभ किछु बुझैत
सभ किछु जनैत
किछु नहि बजैत
उठैत आ बैसैत
बैसैत आ उठैत
जाइत रहलहुँ
अबैत रहलहुँ
अंबुधि-तरंग जकाँ हम अहाँ एक रहलहुँ
माय-बाप-भाय-भाउज-बहिनि आ बहिकिरनीसँ
चोरा नुकाक' अहाँ हमर भेंट धरि करैत रहलहुँ।

धुआँ

एकटा हरियर गाछ सुखा गेल
यूकेलिप्टस छीप परसँ पिछड़ल हरियरी
आ चमकैत गुरुत्वाकर्षण-बलें
धरतीमे समा गेल
आ, हरियरी बिला गेल
हमरालोकनि गबैत छी गीत नव नव
पबैत छी सुख-सुविधा अभिनव
करैत छी भोग,

रहैत छी कुंठित,
बुझैत छी तुष्टि
आ सुझैत अछि साओन-भादव
आएल छल बाढ़ि कमलामे परुकें जकाँ
लधलक नहि बदरी मुदा
जेठक रौद ओहने आसिनक इजोरिया
कदम नहि फुलायल मुदा पीयर
गाछी तँ सुखा गेल
अपन दुमहलाक कोठलीमे बैसल
खिड़की द'क' देखैत छी, अझक्के
हरियर बाधकें धुआँ, धुआँ!

मुइल जीवन

पड़ाइत छी, पड़ायल चल जाइत छी
हमरालोकनि अपना लेल अपनासँ,
अपन परिवार, घर-आङ्न, गाम-नगर,
अपन देश कोशसँ पड़ायल चल जाइत छी हमरालोकनि

हमरालोकनि बेचि लैत छी एक चुटकी नोनक खातिर
जीर-मरीच-धनी, मरिचाइक बराबरि,
सागक दोबर, भांटाक डेढ़िया,
बेचि लैत छी अपन अस्तित्वकें अपना लेल;
आ, गरदनिमे दसटा पजेबा, डाँरमे मनुख भरिक उक्खड़ि,
पयरमे मोन-दस मोनक बटिखारा बान्हि,
हाथमे हथकड़ी, जिह्वापर कांटी, जाबी लगाक' मुँह पर;
अतल जल-राशिमे कूदिक' पड़ा जाइत छी

पड़ा जाइत छी हमरालोकनि अपनासँ
आ, अपनहिमे बौआइत छी–गामक हाट आ नगरक बाजारमे

करैत छी चीत्कार जन-कल्लोलक तरंगमे,
तकैत छी अपन आकृति
मिलक चिमनीमे, चकचोन्हीमे फूटल आँखिएँ,
पीबिक' भरि बोतल।

आ देखैत छी इनार-पोखरिमे डुबैत युवतीकें
अपन सखी-बहिनपासँ चोराक',
पड़ाइत युवककें गामसँ पटना आ कलकत्ता
आ, पड़ाइत छी, पड़ायल चल जाइत छी हमरालोकनि
ठाढ़ भेल जीबा लेल
आ, जीबैत छी हमरालोकनि मुइल
मुइल आ, मरैत छी जीविते।

हम मनुखक मात्र साधन

रहू एहिना, एहिना स्थिर रहू
जहिना छी तहिना रहि जाउ
जड़ भ' जाउ अहाँ हे रात्रिदेव!
देखू, देखू, शकुन्तला हमर सुतलि छथि
भरत छथि गर्भस्थ मुदा, जागल छथि
हम छी दुष्यन्त, घरमे बन्द
जंगलमे बौआइत-भसिआइत नहि चक्रवर्ती
चक्रवर्ती नहि छी हम भवन-विलासी
(जे) शत सहस्र कक्षमे बन्द
सुन्दरी, नव यौवना, कोमलांगीकें राखि–
घोर विपिनक अन्हारमे गर्भवती राजमहिषीक
चिन्तामे कण्वक बूढ़-जर्जर काया थरथरायत
आ अपने सुतब ऊँच पलंग पर
भरि राति कछमछ करैत छटपटायब

आ प्राते देखब मुँह अपन अयनामे
देखब अपन तरहत्थीक भाग्य-रेखा
बिसरि जायब अपनाकें कोनो शाप-बलें
मुदा नहि बिसरत चक्रवर्ती कहायब,
बिसरत नहि भवन विलासी
जहिना छी तहिना रहि जाउ
एहिना स्थिर रह, रहू एहिना हे, रात्रिदेव!
देखू, शकुन्तला हमर सूतलि छथि
भरत छथि गर्भस्थ मुदा जागल छथि
हम छी दुष्यन्त, घरमे बन्द, चक्रवर्ती।
चक्रवर्ती नहि छी हम, भवन विलासी
चक्रवत् बौआइत छी बेगर्तें अपन
आ कहबैत छी नगर-निवासी
जन्मभूमिक विस्मरण
आ पैतृक वासस्थानक त्याग कर' पड़ि गेल छल एक युग पूर्वे
आ कहबैत छी प्रवासी
नगर-निवासी

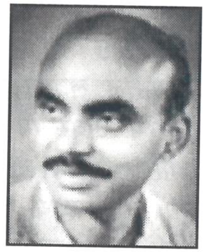
रहू एहिना, एहिना स्थिर रहू
जहिना छी तहिना रहि जाउ
जड़ भ' जाउ अहाँ हे, रात्रि देव!
बीजी-पुरुखाक विद्योपार्जित धन
आ महाकुलक जन-बल बिसरि
बिसरि पितामहक बारह वर्षक पश्चात्
वाराणसीसँ प्रत्यागमन भ' महापण्डित,
यशस्वी, प्रतिष्ठितक पौत्र हम
हाथी बिसरि
हथिसार उजारि

बेची कड़ी रेलभाड़ा निमित्त
आयल छी नगरक नगर, राजधानीक गली,
उप-गलीक भाड़ादार हुड्डुक सन खोलीमे रहैत छी
रहैत छी लालायित
लाल-गोल-बाल सूर्यक दर्शन लेल
जीबैत छी कृत्रिम जीवन
हँसैत छी, बजैत छी आ करैत छी सभटा कृत्रिम अभिनय
रखने छी नाटकीय अपन व्यक्तित्व।
हर्षित होअय रोम रोम
पुलकित होअय गात-गात
कत' पायब बसात?
नर्त्तित-बिजुरी पंखाक कृत्रिम बसातमे
सुखबैत छी गन्हायल देहक घाम
बुझैत छी क्षीण कक्षकें अपन चारु धाम
अर्थकरी विद्या पढ़ल
जीवनक साधन बनल
साध्यहीन जीवनक साध्य बनल जीवन
दिन नहि अपन
राति थिक अपन
जीवनक कटु-मधु-अनुभव लेल राति थिक अपन

तें रहू एहिना, एहिना स्थिर रहू
जहिना छी तहिना रहि जाउ
जड़ भ' जाउ अहाँ हे, रात्रिदेव!
अन्यथा,
सूर्यक किरण-जागरण
धरती पर पसरि जगाओत बहुत,
बहुत किछु मरि जायत।

अपन अस्तित्वक हमरा बोध होयत
शकुन्तलाक मृत्यु आ कंकालनीक जन्म होयत
गर्भस्थ भरतक पिण्ड-स्खलन
पुनः गर्भगन्धहीन कोखि देखि
चक्रवर्ती बौआयत नहि जंगल पहाड़मे
करत नहि मृगया
दोग दाग द' गली कुची आ बाट-घाट
भरि नगरि-बजार बौआयत
मनुख हमर मरि जायत
आ, रहि जायत मनुख नहि
पुनः मनुखक मात्र साधन
देखू, देखू, शकुन्तला हमर सुतलि छथि
भरत छथि गर्भस्थ मुदा, जागल छथि
हम छी दुष्यन्त, घरमे बंद
एहिना स्थिर रहू, रहू एहिना
जहिना छी तहिना रहि जाउ
जड़ भ' जाउ अहाँ हे, रात्रिदेव!

सोमदेव



मूल नाम : गौरीशंकर प्रसाद
लेखन नाम : सोमदेव
जन्म तिथि व स्थान : 5 मार्च 1934 ई.। न्यौरी टोलेदाथ, थाना–बिरौल, जिला–दरभंगा।
भाषा : मैथिली, भोजपुरी, हिन्दी। बाजब भूकबमे। तीनू समान रूपें।
मातृक परिचय : नाना मोकदमेबाज। वैद्य। पुरान विचारक तमसाह। मुजफ्फरपुर निवासी। दाथमे बसि गेलाह।
पैत्रिक परिचय : पुलिस दरोगा। नौकरी-पेशा, बदमासी, पहलवानी सम्बद्ध परिवार। आरा शहरक निवासी।
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी)। बी.एल. लेक्चर पूर्ण क' परीक्षा नहि देल। होमियोपैथ। आइ.एम.ए.सी.।
रुचि : गप्प करब। सुतब। एकसर शराब पीयब। मशीनरी कार्य आर नृत्य-संगीत-अभिनय। भ्रमण। पुरान पंथीकें उकठ करब। सामाजिक संगठन। तंत्र।
वृत्ति : किरानी, शिक्षक, सर्वोदयी, ग्रामोद्योगक संगठन, तेल पेरब, कूटब-पीसब, ठीकेदारी, प्रकाशन, मशीनी सामानक व्यवसाय, जीबक इच्छा अछि। संप्रति नवरंग ट्रेड एण्ड क्राफ्ट कॉरपोरेशन, लहेरियासरायक अध्यक्ष।
लेखन : 1948 ई. सँ आरंभ हिन्दीमे। 1949 मैथिलीमे। लाल-एशिया (1954, हिन्दी कविता संग्रह), चानोदाइ (1959, मैथिली उपन्यास), ब्रह्मपिशाच (1964) कालध्वनि (1965) मे प्रकाशित तथा करीब एक दर्जन ग्रंथ प्रकाशन पथ पर।
पता : ग्रंथ भारती, धरणीधर पथ, लहेरियासराय, दरभंगा।

वक्तव्य

हम जीबय चाहैत छी!

प्रत्येक लेखक महत्त्वाकांक्षासँ लेखन आरंभ करैछ। कनेक प्रौढ़ता आर दलदलगत असफलता (वा सफलता)क वातावरणमे लेखक अहंकार पीड़ित भ' जाइछ। तञि लिखैछ। तेसर अवस्थामे बुझना जाइछ जे लिखला सन्तां नोन-तेल लकड़ीओक इन्तजाम भ' सकैछ, तखन कियए नहि लिखत? चारिम अवस्थामे पुनः यश अथवा सिद्धिक वास्ते लिखैत रहि जाइत अछि। मूलतः लेखक जीबाक लेल लिखैत अछि। पाइ क्रयशक्ति अछि। साहित्य विक्रय लेल बनियौटीक गुण चाही। सिन्डीकेट चाही से गुण विभिन्न क्रियाबला सभमे अछि। एहि स्तर पर क्रिया बनायब बनाम तथाकथित विभिन्न साहित्य आन्दोलन हमरा नीक अथवा बेजाय कियए लागत मने एकरा साहित्य सर्जनक प्रश्नसँ कोन सरोकार?

वर्गीकरणमुखी पद्धतिसँ विषय प्रवेश करैत पुनः सहज रूपमे स्फुरित हमर कविता प्रत्येक क्षणकें जियैत, भोगैत व्यक्त होइछ। एहि संकलनक दसो कवितामे प्रथम कविता 'जीवनाभास' विद्रोही प्रशासनक विजय देखि भग्न अवस्थाक पुनर्जीवन आर हर्षोन्मुख मुदा एखनहुँ सशंकित आत्मबोध अछि। दोसर कविता 'गर्भस्थ संतानक प्रति' युगबोधक प्रतिफलन। तेसर 'एकटा फोटोक दुखद त्रिकोण' घटना चक्र पर आधारित संवेदनशील मनःस्थितिक अभिव्यक्ति। चतुर्थ 'किछु भ' सकैछ' युद्धक निस्सारता दिश अग्रसर परिवेशमे एकटा चिंतनशील व्यक्तित्व। पाँचम 'विदाक स्मृति' चीनक आक्रमणकालमे लिखल गेल छल। छठम 'हमरा एकटा किताब चाही' एकटा जागृत व्यक्तिक युगदृष्टि, आकांक्षा आर व्यंग्यपूर्ण स्वीकृति, विडंबनापूर्ण असंयत विपर्ययक वातावरणमे। सातम 'तिन पतिया' सभ जापानी शैली हाइकूक मैथिलीमे प्रथम प्रयोग। आठम 'प्रातः दू चित्र' आर 'जपलाक रानी' सव्यंग्य संवेदनाक संग परिवेशक चित्रशैलीमे सहज अंकन अछि। दसम 'रूमालक सीसा' रागात्मक मनक कंपन।

हमर आकांक्षा अछि कि मैथिलीक नव-कविता फैसन पर नहि लिखल जाए, प्रत्येक कविकें अपन परिवेश, उद्देश्य आर शक्तिक सम्यक ज्ञान रहनि, तखने मैथिलीक आधुनिक काव्य भारतीय सीमाकें पार कय विश्वव्यापी भ' सकत, इएह हमर कामना।

जीवनाभास

थाकल आ टूटल छल मोन। ठेहिआयल
पकुहा भेल डाँरि जेना हो। तीतल
हाड़ आ चाम
भूखक घाममे जेना ओ सड़ि गेल। सड़ल
अंतड़ीक गंध केहेन होइछ
—जौं ओ सुखा गेल हो,
सड़बासँ पहिने!
—देखल अछि गदहिया बक्खोक केथरी?
गदहीक लीद। टूटल
पड़ायल जाइत एकटा कीड़ी
जेना हारल मिनिस्टर
—हवा गाड़ी पों-पां
पिपही बतासा
आ होइछ जेना आब जुनि उतरत गीध। लोलुप
—हम मुइल छी!
आ होइछ जेना आब कटाउझ जुनि करत कुकुर। टीकटक लेल
—हम मुइल रहितहुँ!
आ होइछ जेना आब कारकउआ जुनि काढ़त हमर आँखिक छाल्ही।
जीपधर
—हम मुइल त' छलहुँ!
विश्वास नहि होइछ। ओना धड़धड़ी करेजक
देखि सकब से यंत्र कीनबाक पाइ कहाँ अछि संगमे?
तञि हे मीत!
अहाँ हमर हाड़कें बेचि लेब बज्रक भाव
आ दू सेर चाउर कीनि लेब। दू टूक
वस्त्र त' द' सकै अछि कदली बन
जौं ओतय हाथीक भीड़ नहि हो।

नहि होथि इंद्र। चाणक्य। आकि शकटार।
हम विरोध नहि करब!
–कियैक त' हम स्वतः जीब' चाहैत छी!

एकटा फोटोक दुखद त्रिकोण

हमर एकटा मीत
जाइत छथि विदेश
भ' जयताह उड़न-छू
हू' हू'...उड़ि जाएत जेट
जानी ने कहिया होए फेर भेंट...
–हे हमर मीत!
पहाड़क ऊपरसँ उड़त तोहर जहाज : करैछ धक्-धक्
हमर मोन : साहित्यिक आर
वैज्ञानिक लेल नीक नहि अछि ई वर्ष...
सवा आठ बजे राति
शास्त्रीजीक अस्थिकलश पहुँचि जाएत कानपुर
दुइए घंटाक उपरांत लोक छथि अश्रुपूरित (आकाशवाणीक उद्घोष)
काल्हि अखबार पर एकटा फोटो छपत :
(–ई कोनो आवश्यक नहि जे फिल्मीए पत्रक बिक्री हो पकौड़ी जकाँ!)
काल्हि एकटा फोटो छपत :
(–कलश केर दर्शन सभ दिन शुभ होइछ, एहेन नहि!)
काल्हि एकटा फोटो छपत :
(–अप्सराक रहल नहि आभा!)
–हे पहाड़ीक ऊपर उड़ैत एखन मीत हमर
नीक छल जे तोरे जहाज दुर्घटनाग्रस्त भ' जइतए...
अपनो मरब केर कामना नहि अछि ततेक भयावह आब
भयावह अछि एहिसँ बेसी अपन पत्नीक भग्नसन

विकृत सन, निद्रारत, हिम्मत शाहक बनौल मुख
हम क' नहि सकैत छी अपन मृत्यु कामना जकर डरें। क्रुद्ध!
तों कवि छह
कविक जहाज भावुक नहि भ' सकैछ पहाड़ीक सौन्दर्य पर
जेना जेनेभाक ऊपर भ' गेल अछि
आर नहि रहलाह भाभा!
काल्हि एकटा पुरान फोटोक स्थान ल' लेत एकटा नव फोटो! किन्तु,
के ल' सकत स्थान ओइ फोटोक जे आइ लुप्त भ' गेल अछि
प्रवासेक गगन मे?
हे हमर मीत!
घूरि जाह! हमरा सभ अड़िकोंचक पात पर क' लेब भोज
आर चोंच पिजा पिजा क' नाचब आर सुनब जाज...
बाजैछ...बदलि देल अछि मीटर। हीटर पर सूति रहल अछि मोन
आर प्लग लगा देलह अछि तों
कोनो वैमानिकाक कोरामे सूतल
हे हमर 'हम'
हमहीं सफर क' रहल छी जहाजसँ
आर नग्न भ' गेल अछि सोझाँमे मृत्युक सौन्दर्य!

हमरा एकटा किताब चाही

हमरा एकटा अन्हार कोठरीमे बन्न क' दियह भने
मुदा एकटा मोमबत्ती आर एकटा किताब दैत रहू नित्य
कोठलीक छोट खिड़की देने
प्रकाशक मंद मधुर छाहरिमे ढरकैत ज्ञानक मोम। आर
मोमक सीसापर अंकित भ' गेल कैकटा चित्र–
कुकुर सन कनैत अग्निनिरोधक मोटर। छाउर होइत
गाम। आ हमर गृहिणीक
थकित, मौन, मधुर मुख। तरहत्थी पर राखल
नारिकेर...भांगल सन!

—एटमबम खसल की?
हम त' मरलहुँ नहि, मुदा! अंतरिक्षमे छी की?
हे हमर चान! किछु त' कहू?
पिं पिं पिं पिंऊऽऽऽऽ करैछ हमर बाउक प्लास्टिकक बिलाइ...
आ हम नेहक किरिनमे बिसरि जाइत छी अंतरिक्षमे भासैत ई
अंधगुहा!
मोमक सीसापर एतेकरास चित्र
किताबमे पसरल!
हे हमर बंधु! हमरा नित्य एकटा मोमबत्ती आर एकटा किताब दियह!
एकर ई अर्थ नहि जे लादि देल जाए हमर करेजपर सम्पूर्ण
एकटा पुस्तकालय। आर अखबारक मुखपृष्ठ पर छपय काल्हि—
जहलमे एकटा ग्रंथकीटक-मृत्यु! आर दोसर समाचार—
एकटा अधिकारीक पदोन्नति!!

किछु भ' सकैछ

कौखन किछु भ' सकैछ
पता नहि कखन की भ' जाओ!
तञि हम ताकि रहल छी एकटा अणु-छाता
जाहि तरमे हम निरापद भ' सूति सकी
हम ताकि रहल छी एकटा कैप्स्यूल
जकर भीतर घोसियाक' हम भ' जाइ 'मनु'
आदिम। अदंत। अनंत।
कौखन त तमाशा देख' लेल अपन कछुआक
खपड़ोइया सँ बहार करी मूड़।
चारूदिस जरैत। करैत क्रन्दन धूमायित जेट। आर
होटलक खपड़ोइयामे सिपाही संग नचैत
नवजात जेटक माए
मारू गोली!
कखन की भ' जाए?

हम अपन अनंतकालक खपड़ोइयामे समेटि लैत छी
अपन अग्निमुख। आर
बहार रहि जाइत अछि मात्र जिह्वा! आर आँखि!

विदाक स्मृति

पड़ैत अछि मोन अहँक जीवन हिमालयक सर्दघाटीमे बाधा दुश्मनसँ लड़ैत। उड़ैत छी जेटपर चढ़ल। हमर इच्छा—डहैत धुआँ पाछाँसँ ठेलि रहल। बूलेटकेर गतिसँ तेज किछु आबिक' धँसल अछि हमर कोड़मे आर हम तड़पि उठलहुँ-ए।

एकटा चित्र कैक्टस जकाँ रोपि रहलहुँ अछि करेजमे। कोराभक्त पुत्र आर भरल आँखि, जेना चौकठक नैन कोरमे पुतरी सन अहाँ, बड़दगड़ीसँ विदा होइत हम, ...आइ हमर बड़दगड़ी लसकि गेल अछि अहँक स्मृतिक सुरामे आर ओझरा गेल अछि जेट, जेना एयरोड्राममे शक्तिपूरित भ' रहल हो!

काल्हि भोरे हमरा जेट पर हिमालय पार करबाक अछि, चौकठक नैनकोरमे फँसल एकटा पुतरीक रक्षा हेतु। आर सोझाँमे अछि एकटा सुखायल कैक्टस। भ' गेल अछि नागफन। मित्र छल कहियो। आइ ओकर फन पर अंकित भ' गेल छैक अणुबम। मुदा, हम जागि रहलहुँ अछि।

सातटा तिनपतिया

अकास

छोटछीन एकटा पुष्प
बान्हि लेलक अछि प्राणक तार
मुक्ति पाबि रंग ओ सुरभिसँ!

नयन

जहलसँ छुटि कय आबि गेलहुँ प्राण

जुनि लजाउ, रूप देखय दियह
आबय दियह ठोरघरि अपन आरसी!

मृत्यु
एतेकरास निन्न आबि गेलैक-ए
आर खुजल छैक नयन
कतेक सुन्नर सोहाओन लागैछ समय?

रसनचौकी
ककरो ठोंठमे फूकिकय
ढारल अछि उल्लास
उदास उदास भ' गेल' छी मोन!

ताजमहल
स्नेहित भ' जाइछ तूर
तूर भ' जाइछ पाथर
ज्वलित स्फटिकक रूपशिखा!

लोरी
देखल अछि सुगंधि
बदलि जाइछ दुर्गन्धिमे
सूति रहू बाउ! सूति रहू!

सितुआ
कहियासँ पसारने आँचर
फफकैत ठोर। प्रतीक्षित
चून भ' जाएब सखि!

प्रात : दू चित्र

(एक)

जागिक' बैसि गेल अरुण शिखा
अणुआवेष्टित अंतरिक्ष
अंडज!
सितुआकें चीरक अछि
नस्तर लियह।
आ नेबोक दू बुन्न गाड़ि दियौक ओइपरसँ
तलखहँसी हँसि देत नयन।
नेनाकेँ जगाएब त' मोसकिल नहि
ओ स्वतः जागि जाइत छथि
'जा'—जागब
'ग'—गायब
'र'—रटायब
'न'—नहायब
—अहाँ गुरुजी छी!
तइँ टहलइतो टहलइत सूति रहलहुँ-ए!
हम नहि सूति सकैत छी
कियैक त' जागियो नहि सकैत छी
सूरुज हम!
संतोलाक अमार पर निन्नक छाहरि अछि
नीलदारुसँ लटकल अछि खोपड़ीक आकृति सभ
आ लौहनलसँ बहैछ सुरसरि धार!
—एहेनमे, हे उषा! अहाँ
उदास कियैक छी?

(दू)

'अँऽऽ...अँऽऽ...'
—हँ, हे गऊ माता!
पातर क' रहल छी अहिंक दूध
रंग जुनि बदलैछ पानियो मिलौने।
'झौं: झौं:'
—हौं : हौं, रौ धोबियाहीक कुकुर
आब जुनि करतहु क्यो काट, दैत ई नीच संज्ञा
भेंडी आ खस्सीक कोरमा-कबाब बनि
उड़ि जयमे होटलमे।
'हूँऽ...हूऽ...'
—ऊँ' कुलवंती अछि?
सिपहियाक घरसँ बहार होइत
मंदोदरी जुनि, तारा जुनि, द्रोपदी जुनि, कुंती जुनि
अहिल्यो नहि
कुलवंती!
अपने लच्छोक!
लच्छोक सारक सहोदरा!

जपलाक रानी : एकटा लैंडस्केप

नीचा पहाड़। ऊपर पहाड़।
अइपार मेघ। ओइपार मेघ।
संसार मेघ।
सोनहुला केश की सुखा रहलि
जपलाक गुफाकेर रानी?
वा पहाड़ केर दैत्य
पीबि रहल'छि सिगार?

क्षिप्र तेनुआसन छुलहीधार पहाड़ीक आदिवासिनी
खन सुखाय। खन पानि एते' जे दहा जाय वन-प्रांत
पशु आ मनुक्ख...टूटा लहास आ
बँसखट बँसुरी बहय संग...
पुल पर गुजरि रहल अछि ट्रेन
धुआँ फेकैत
दूर पर पहाड़ीक रागमे सटल सिमेन्ट फैक्ट्रीक मैल चूनरंग धुआँ
साँझ केर किरिन
हेरा जाएत शाल वनमे
इजोरियाक प्रतीक्षारत जोड़ा जतय
नृत्य उत्सुक नयन।

रूमालक सीसा

तोहर उपहार भेटल—
रूमाल!
गेरू रंगक बेलिबूटीदार, बेढ़ल
स्मृतिसँ संध्या उदास भ' गेलीह जेना, मेढ़ल
कोन धय किछु उप्पर
एक इंचसँ किछु कम, बीच दिस
नवकी पाइ सन आकार
एनाक टुकड़ी छोट वृत्ताकार...
सुगंधित रूमाल ई
उपहारमे भेजल मने
मौन स्मृति सुगंधित : स्पंदनक देशमे
सौंसे आकृति नहि (देखि पड़ैछ)
कौखन नाक
कौखन ठोर
कौखन नयन

त' बूझि पड़ैछ जेना ई हमर नहि, तोरे
नाक हो!
ठोर हो!
नयन हो!

गर्भस्थ संतानक प्रति

हमरा सभ वायुमंडलमे पंप क' रहल छी विष, कीट आर गैस। बैनेट आर राकेटक निर्माण क' रहल छी। बैनेटसँ घेरल एकटा नवजातकें ल' जाय लेल चान पर। छठीक दिन मृत्यु भोज करत गिद्ध सभ आर शून्य धरती पर भ' जायत लूल्ह-अपंग आर अन्हार सभक बर्बरताक राज!

—हे गर्भस्थ संतति! अहाँ रोबट भ' क' जन्म ग्रहण करू, जाहिसँ पुनः आरंभ क' सकी एकटा नव अभियान मृत्यु विजय हेतु!

हाड़ मांस बला पुतलाक उत्पतिसँ नीक अछि लोह, रेडियम
आर प्लास्टिकक अभिनेता टा उद्‌भूत होथि! हे गर्भस्थ संतति!
कोनो अभिनव विद्युत शक्तिसँ संचालित होइ अहाँ?

हमरा सभ मांगि रहल छी प्रकृति, पुरुष आर पीड़ाकें जाहिसँ बहार होएत मात्र तीनटा अणु आ फेर हमरा सभ विस्मृत आर स्वप्नवत् भ' जाएब।

—हे गर्भस्थ संतति! अहाँ तीनूटा अणुक नियंता भ' जाएब आर जरा, असमानता आर अज्ञात निरोधित प्राणी सभक सृजन करब!

जमुना बहि रहल अछि। हमरा सभ बँसुरी बजा रहलहुँ-ए। ताजमहल पर कटल आ सड़ल लाख-लाख भुजा बरसि रहल अछि। हमर न'ब रॉकेट चान दिश बढ़ि रहल अछि आर चान हमर मुँह दूसि रहल अछि। हम क्रोधें नाहपर बूलैत अपन संगीक गाल पर एक चमेटा बैसा दैत छी।

—हे गर्भस्थ संतति! अहाँ जन्मे कियए लेब? हमरा सभ स्वतः अनागत युगक गर्भस्थ संतति छी!

रमानन्द रेणु



जन्म तिथि : फाल्गुन शुक्ल नवमी, संवत् 1988; किन्तु शिक्षाक क्रममे लीखल गेल 3 जनवरी, 1934 ई.।

स्थान : उसमामठ (लहेरियासरायसँ अढ़ाइ-तीन कोस पूब-दक्षिण, जोगियारा पतोरक लगीच), थाना सदर, दरभंगा।

शिक्षा : बी.ए.।

व्यवसाय—सेवावृत्ति। एखन धरि गोर अठारहे नोकरी धयल आ छोड़ल। उन्नैसममे दस बरससँ लागल छी।

रचना—किछु पोथीक पाण्डुलिपि प्रस्तुत अछि।

कविता—पूर्वा, बाझल रातिक पाट, आङन आ सिङरहार, महुआक डारिसँ, कविता आ कविता, गीत-नाद, संकलन-1, संकलन-2, हिमालय (खण्ड काव्य), साँझक साँझ (गद्य काव्य), अगिला मुहरा।

कथा संग्रह—कचोट।

उपन्यास—दूध-फूल।

प्रकाशन—सन् 1950 ई.मे सर्वप्रथम कविता 'चेतना' शीर्षकसँ 'बटुक' (इलाहाबाद) मे छपल छल। एखन धरि 'दूध-फूल' (उपन्यास) क अतिरिक्त कोनो स्वतंत्र रूपें पुस्तक प्रकाशित नहि भ' सकल। कारण रहल प्रकाशकक कमी आ अपन अर्थाभाव। वर्त्तमानमे 'कचोट' मुद्रणालयमे पहुँचि गेल अछि। विभिन्न पत्र-पत्रिकामे अद्यावधि अढ़ाइसय रचना प्रकाशित भेल अछि। 'विद्यापतिक देशमे' आ 'नवीन गीत'मे किछु कविता संकलित भेल अछि।

स्थायी पता—ग्राम-उसमामठ, पत्रालय मदनपुर, लहेरियासराय, दरभंगा।

वर्तमान पता—द्वारा; टेलीफोन भवन, निर्मली, सहरसा।

वक्तव्य

हमर तँ धारणा अछि जे कविता लीखल नहि जाइत छैक, भ' जाइत छैक–स्वतः बहराइत छैक। कोनो योजना बनाक' निर्धारित क्रममे लीखल गेल वस्तु कविता कहियो नहि भ' सकैत अछि। आहिमे भावक स्वच्छन्दता नहि रहैत छैक। कविता एकटा विशेष मनःस्थितिक उपज थिकैक। एक विशेष दृष्टिसँ, विशेष कोणसँ वस्तु सत्यक निरीक्षण कयला उतर वस्तुक नग्नता, ओकर यथार्थ रूप जाहि पर कोनो प्रकारक आवरण नहि होइक, जखन देखबामे अबैत अछि तँ अनेरो ओहि वस्तुसँ हमरा आत्मीयता भ' जाइत अछि। ई आत्मीयता ओकर एक-एक कण, एक-एक रोचक दृष्टि-स्पर्श पूर्ण तन्मयतासँ करैत अछि।

हमर आस्था, हमर असंतोष, कुण्ठा, त्रास आ व्यावहारिक परिवेशमे प्रत्येक शब्द संयोजित अछि, यद्यपि हमरा विश्वास अछि जे सम्पूर्ण भाव-राशिक अभिव्यक्ति हमरा कवितामे एखन पर्यन्त नहि भ' पबैत अछि आ यैह कारण अछि जे भाव-बोधक आधिक्य आ विस्तार कविताकें किछु जटिल बना दैत छैक। जाहि क्षण भावक विराटता आबि जाइत अछि अभिव्यक्तिक प्रणालीमे तैयो कोनो अन्तर नहि रहैत अछि-वैह पूर्वहि जकाँ सामान्य स्थिति, तें ल' क' अर्थ बोधमे किछु अंश धरि दुरुहता आबि जाइत छैक। हमर पाठक एवं श्रोताकें सभ दिनुक ई उपराग एखनो पूर्ववते अछि जे हमर कविता दुरूह होइत अछि, सहज, बोध-गम्य नहि। किन्तु एकर निराकरण कोना करी, हमरा कठिनाह सन लगैत अछि।

स्वच्छन्द अभिव्यक्ति, निःस्वार्थ भाव बोध, निराकार दृष्टि, वस्तु-सत्यक परिवेश आ यथार्थक परिज्ञानक परिधिमे जँ उपर्युक्त सम्पूर्ण वैचारिक दृष्टिकोणकें राखल जाय तँ हमरा पूर्णतः विश्वास अछि जे उत्तम कोटिक कविताक स्फुरण होयतैक।

कविता जीवनक सहज अभिव्यक्ति तैं ल'क' छैक। जीवनक एक-एक अनुभव काल-खण्ड बनिक' प्रत्येक शब्दमे उतरबे करतैक। जीयबाक धारणा जहिना सभ जीवमे पूर्णरूपेण स्थित अछि ओहिना प्रत्येक अनुभव कें व्यक्त करब सेहो आवश्यक छैक। ई कोनो गुण विशेष नहि थिकैक, मानवीय स्वभाव थिक। भूख लगला पर जँ भोजन करबाक इच्छा प्रकट

करैत छी, तँ भूखल क्षणक अनुभूतिकें व्यक्त करबामे संकोच किऐक? आ एहि अभिव्यक्तिमे पूर्णतः निःस्वार्थ होयबाक चाही, कृत्रिमताक गंध नहि अबैक। हमर दृढ़ धारणा अछि जे परम्परा एखन धरि हमरा एहने कृत्रिम भावक प्रस्तुतीकरण सिखौलक अछि।

चक्रचालि

अनुभवक गंगासँ धोअल अछि आकाश
आचरणक लेहूसँ गाढ़ कारी कालिन्दी
पटुताक पोखरिसँ उठैत छैक भोरक भाफ
जे पसरल अकड़ि क'
आ बनि क' से शेषनाग
किन्तु,
ओ तैयो
दुर्वासाक बोलीमे ललकारि रहल ब्रह्माकें
की थिक ई औचित्यक आश्लेश?
वा अहं केर नहि आक्रोश?
वर्गवादी पूंजी
आ अर्थवादी सत्ता
सबतरिसँ निछक्का
सुरेबगर आकृति दिस आकुल आ व्याकुल
चिकरैत साइरन अछि कहियासँ ने कहैत!
चेत की तैयो भेल?
ज्यामितिक दृष्टिसँ समस्याक सिद्धि हो
विकल्पक व्याकरण बनिओ क' की केलक अछि?
रहस्यक
खुट्टीसँ
टाङल
जबरन

गणित मेघ
मणित लोक
अगणित नर मुण्ड-काय
कारण अवस्थामे
सभ खन जे बाधक छल,
बाझल अणु ताग-ताग
साटल हो पात-पात
किन्तु, उद्भ्रान्तिक आयोग नहि समेटल क्यो?
अनवरत तृष्णाक तेखुरसँ तानल
अभाव गन्ध
हीन स्वर
साध्यमे प्रपंच बल
कौशलक दिशा सूचि नहि आबो कनिओ गड़ल?
विकृति विकासवाद!
स्वीकृत विनाशकाल
ताबत धरि जाबत हम फूकि दैत रहल छी,
अन्यथाक आबामे हम पैसि जे रहल छी,
समष्टि
प्रलय बाढ़िमे भसय,
की अछि ने पसिन्न?

आकांक्षा

बिजुर केर करेन्ट सन
उड़ि रहल चुमकी परबा, उज्जर
कांसाक परबा आ कस्कुट केर पाँखि
टीनक आकाशमे राङा जौँ टीपल
तामा केर आँचर पर
निहुरल : कौड़ी केर गाछ
चुम्मा आ चुम्मा

डारि-डारिक फूलक
सुरभित दुकूलक...आर सभ ई निरर्थक!
निरर्थक : जीवन फँसब
कोनो डारिक झोंझमे
छीटल छानल ओझराहटिक जाल कत'?
शक्ति : निरर्थक नहि शक्ति–
ओझरायब सरल
सोझरायब सरल
परबाक पाँखिक फरफराहटिकें
की बान्हि सकत मकड़ा केर जाल?
ताग सभटा काँच
काँच गाछ
जिनगी समुच्चा। पाकि रहल बाँस...
आ उड़ि रहल चुमकी परबा
एक दोसरकेँ देखैत।

समस्या : पीढ़ी दर पीढ़ी

हम सभ
सन्निपाती आचारक
संहिता ओढने छी,
नाङट विचार
आ
व्यभिचारें आकुल,
यथार्थक संदर्भमे
टूटल
आस्थाक कोणसँ घेरल,
व्याप्तिक मुखौटासँ

त्रस्त भेल सीमामे
निर्लज्ज
वैयक्तिक स्वादसँ छौंकल क्षण
नोचि रहल मासु अछि
मासु हमर दृष्टिकोण
मासु हमर संस्कृति
मुट्ठीमे आचरण
आ
प्रदर्शन निर्बाध होइछ,
यैह सभ कारण जे
सूरुज वा चान हो,
बिचकल मुँह–अनभुआर,
आशय स्पष्टे छैक।

व्यतीत क्षणक मोह

दृष्टिक पथार पर
सौजन्यक समग्र राशि छीटल अछि
फूट'सँ पहिनहि बन्हा गेल
औचित्यक पोर पोर छेकल अछि, घेरल अछि;
अभ्यासक मुद्रामे बैसल संयोग बाज
शैशवक आङनमे लिप्त अछि समष्टि लोक
आजनसँ क्रीड़ारत चिन्ता जे काढ़ल अछि;
संशय से बाढ़ल अछि
परम्पराक सामन्ती अध्येता थाकि गेल
पिजुआएल दृष्टिकोण अछि अग्राह्य
अरघत कोना?
हमर संस्मरणक भट्ठी एखनहुँ अछि जरि रहल–धू-धू,

विस्मृतिक टेमीकें लेसबामे प्रयत्नशील छीहे हम,
किन्तु
हमर संवेदनमे अछि अजस्र फुफकार
आभ्यन्तरक तार सभ झनझना जाइत अछि।
आइ
एखन जनमल जे चुट्टी–अछि काँपि रहल
आओर अपन सेहन्ता केर बज्जर भेल गेंठीकें खोलि रहल
–उपहास आ चुभन धरि
आतुर सन,
सम्भव ई छैक नै?
आह्लादें हम विभोर
एतबा जे भेल किछु हमरा संतोष अछि पूर्णतः अपना पर
काज किछु भ' रहल अछि समस्त दिगमण्डलमे
भविष्यक ई सार्थवाह
हो समस्त गतिक भास
पद्धति पर पद्धति जँ एहिना खुजिते रहल
लोकक समग्र रासि चेतन जँ बूकि देल
अनभ्यासल आहुतिक चोट सभ विफल हो
होऔ कला प्राणवान
अभ्यर्थित लोक सर्जनाक रूप मूल्यवान
तखनहि आधार सत्य
गहन तत्त्व अमर यज्ञ
रूप गढ़त स्वर्णकाय मूर्त्तमान।

बौक परिवेश आ जीवन्त क्षण

समधानल चोटसँ
चौंकल
दिशा-ज्ञान,
अड़ियायल,

बाट घाट छेकि लेल
सपनौती विद्या अनठायल-पनठायल,
करियौती जोत सन पाङल अछि पात-पात।
धूआ क्रमात
बनल आलन
खौंझायल;
हमहूँ उकाठी छी,
नापि जोखि बैसल छी
काल-धुरी
ज्योति-दण्ड
फरिछायल ताक नहि,
अगधायल आंकुस
परहेज नहि कयल अछि कनिञो
अङेजि व्याधि
बाकल,
धरखनाह मानिजन सभ
धाहि लगा बैसल अछि
आकुल सन
टेरत के?
घोरन छै' लुधकल
—हौ कनि कान दहक!
अजनासक मेलासँ कीनि किछु लायल अछि,
लागल पसाह छै'
चारू भर स्याह छै',
बनिञो क' अग्रसोची पूरा तबाह छै'।

व्यवस्था

अपस्याँत भेल बिजुरीकें
कनोति देल शब्दक घोष

अगरायल
गाम ठाम
धुक्कड़मे भोतियायल,
सारिल निछक्का छल
ताड़ी पनिछक्का छल
दागल नहि
लागल नहि
आहिन भरिपोख भेल—ठेहुन धरि
डोरि छाड़ि
तोड़ल अहिबात फूल
बातीकें लेसि देल
तैं ने
एखनो धरि लागल पसाही छै',
अगराही लागल छै',
बरनी,
किछु होउ' आब,
हम चुप देखैत छी।

एक कोण : मनःस्थिति

काँचे कमान पर
बौड़ायल-औंघायल मानवीय देवता,
हमर मनःस्थिति कमौंठ जकाँ फेकल अछि,
स्वयंसँ,
हमर आस्थासँ,
औगतायल ग्रह-सूत्र
चनकल कुहेस पाट छनकि गेल, भनकि गेल,
साँझ भोर आकर्षण
दृष्टि दोष जखन-तखन

पूर्वापर वयस-बाँस महकि गेल,
सोझाँमे
जङला केर फाँकसँ देखि रहल—
किचिर-किचिर
चुम्बन आ आलिंगन
—भरम जाल,
स्नेहास्पद अकुलायल ताल-मेल,
मुँहक कुस्वाद तँ भाङठ होयबे करत,
रूप-गंध
वर्णभेद
आगाँ बढ़बे करत,
साध्ये की?
अङस-मङस कयल
जे एतबा हम बूझि वृत्ति;
तकरे ई प्रायश्चित अछि,
तकरे सभ आश्रित अछि
कोढ़ी किरिन होउक—किन्तु तें उदार नीति!
हुहुआइत बहैत जाइत पछवा बलात व्यस्त
घर मे, आङनमे, बाहरमे, चारूकात;
सोझ हम ठाढ़े छी,
हमर बोध तीते अछि,
अभरल जँ स्वत्व किछु
मानब नहि, मानब नहि, मानब नहि...
हऽऽऽम।
खाँहे किछु होइत होउक।

आस्थाक परिधि आ मौन

छहछह उमकैत
पानिक लहरि सन हमर चेष्टा

अनभुआर
शत-शत फुटैत धुआँक गुब्बारामे अनेरो
औंघायल भसियायल जा रहल अछि
अनठौने छी हम अपना भरि
अपन सहज सहृदयतासँ,
किन्तु छिलकि जाइत अछि
पछबाक सिहकी जकाँ
सिटिया क'
आकांक्षाक विभ्राट आवर्त,
की सत्ते? एक दिस
वैतालक ताल ठोकि
कर्म
जिज्ञासा
हुलकी मारि चैलेञ्ज करैत अछि हमर व्यवस्थाकें
आ दोसर दिस—
अनुरागक लालीकें समेटि
क्रमात बढ़ैत आबि रहल अछि—प्रात,
प्रातक सम्राट
आ सुरुज भैयाक असंख्य गँहिकी नजरिक प्रहार
चुप रहितहुँ छी चञ्चल वक्ता
अपने मे;
बैसल रहितहुँ छी व्यस्त—
कार्यक सम्पादनमे,
आदिसँ एखनधरि
आ नहि जानि कहिया धरि एहन स्थिति रहत
संयोग हमर सङी अछि
आक्रोश हमर पैरुख अछि
आ परिवर्त्तनसँ पैंच-उधार ल'क'
—जे किछु कयलहुँ अछि
—वैह हमर संबोधन अछि

एही हेतु चललहुँ,
आ चलि रहल छी आगू
आस्थाक सम्पुष्टिकें बनाक'
अपन आधार।

व्यक्ति

परिस्थितिक लुक्कड़ पर
बैसल हम
पीबि रहलहुँ अछि अनुभूतिक गरम-गरम चाह,
कि एकटा करू घोंट झिकझोरि देलक जे ठमकि गेलहुँ
सतह परक भाफक उड़ैत गुब्बारामे देखल
बिगड़ितहुँ-बिगड़ितहुँ बनै' अछि आकृति मानवक
आ गन्ध अबैत छै' अहंक, ऐश्वर्यक
विश्वक विराट् सत्ता, आकर्षण, संवेदन
आ कतेको ऊँच-नीचकें समेटि क' जोगौने हो
जे अपन आन्हर परम्पराक गाछीमे
एहि हेतुएँ तँ आकृति सभ
तुच्छ अछि, क्षणिक अछि, अपूर्ण अछि;
व्यर्थ सभ चेष्टा छैक
पियालीक चारूकात
उठै' अछि अन्हर विश्वासक
आशाक मिठौंस छैक
दूधक छानल मोनक सभ वृत्ति छै,
पीड़ाक पानि जे ओहिना खौलायल अछि,
संबोधक पत्तीसँ मिलल-जुलल जीवनक इच्छा–
चाहकेर रङत छैक
आ हम नहुँए-नहुँए पीने जाइत छी कि सोमरस
किन्तु
तृप्ति कहाँ? तृप्ति कहाँ??...

साँझ

आकाश :
आँखिमे भ' गेलै' मोतियाबिन्द
टूटल
दृष्टिक सभ तार...
(अनायास छिड़ियायल बाट पर चिनगी...)
उधियाइत बसात सन
मोऽऽन
बड़ गंहीर
(अगम्य, अथाह)..
काढ़ल कहियासँ ने
विश्वासक छाल्ही : भरि पोख
(झूठ सभटा झूठे बाजब? किने!)

विश्वासः
कठपुतरी
(: अन्हरजाली!)
जिम्हरे-तिम्हरे
हम अहाँ-ओ
सभ स्याह...
आ साँझ...?

रामदेव झा



पितृ नाम : स्व. कपिलेश्वर झा
जन्म स्थान : (गामक पता)–कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा।
जन्म तिथि : श्रावणी पूर्णिमा, 1936
योग्यता : एम.ए. (स्वर्णपदक प्राप्त)
प्रथम रचना-कथा : 'मुदा आब की?'
मिथिला-मिहिर, जुलाइ 1953 मे प्रकाशित।
लेखन-आरम्भ 1951 सँ।
प्रकाशित रचना : एक खीरा : तीन फाँक (कथा संग्रह), मनुक सन्तान (कथा संग्रह), नन्दीपति गीतिमाला (सम्पादन), राम विजय (सम्पादन)
प्रकाशनार्थ अनेक पुस्तक : लोक साहित्य, प्राचीन साहित्य ओ हस्तलिखित ग्रन्थक संकलन। मिथिलाक जनविश्वास ओ ऐतिहासिक स्थल सभक विवरणक संकलन।
स्थायी पता : (क) गामक पता
(ख) प्राध्यापक, मैथिली-विभाग, सी.एम. कालेज, दरभंगा

काल-तुला

पछिलका पलड़ा जकाँ अछि
भूत केर आयाम
जाहि पर
लादल अनेको बटखरा सभ
भांति-भांतिक
छोट-मध्यम और बड़का
जीवनक भोगल क्षणक आ
अतीतक घटनावली केर

अगिलका पलड़ा जकाँ अछि
भविष्यक आयाम
जाहि पर लादल-अठेङल
अनागति केर ढेरि–
जाहि दिस औत्सुक्य भावें
दृष्टि लागल नित्य।

काँट निकुतिक
बनल अछि ई
वर्त्तमान निमेष–
बितल क्षण केर बाद
ओ पुनि
अनागतसँ पूर्व
ओ अपन अस्तित्वमात्रक
दैत अछि संकेत–

प्रथम सन्तान

आर्द्रा केर वा अखाढ़क
पहिल दिवसक

क्षितिज पर उमड़ैत अबइत
वर्षमे प्रथमे उपस्थित
श्याम-मेचक मेघ–
ओहि मेघक
पहिल बरिसल बुन्न सन
शीतल अमृतवत
ई प्रथम सन्तान।

माघ मासक जाड़सँ
ठिठुरल निशाकेर भोरमे
चिर प्रतीक्षित सूर्य केर
पहिल्लुक किरण सन
ऊष्म आ स्वर्णाभ–
ऊष्मतासँ भरित होइछ
सतत तन-मन-प्राण
जीवनक जड़ता छोड़ा क'
करै अछि गतिमान
ई प्रथम सन्तान।

फोटोक निगेटिव

निगेटिव
थीक पूज्य,
विश्वनीय
बैंक हमर
अतीतक क्षण कोना
अद्भुत ओ अपरूप सन
पकड़ि क'
सेफमे बन्द क'
सुरक्षित रखने अछि।

निर्जल मेघ

राशि राशि मेघ आबि
पड़ायले जाडत अछि
पश्चिम दिस
प्रतीक्षकर्के डुबा क'
निराशाक सागरमे–
जेना कोनो
फ्लैग स्टेशन पर
कोनो एक्सप्रेस ट्रेन
हड़हड़ाइत जाइछ चल
आ ठाढ़, प्लेटफारम पर
मोसाफिर देखि देखि
ठकुऐल रहि जाइत अछि।

माघक रौद

किछुए छन धरि
ही भरि हमरा
पी लेम' दे
सोनहुल रौदा–
हरित घास पर
पीअर-पीअर
छीटल-छाटल
फेंटल-फाँटल
गजपट-गजपट
के जानय
जँ चाटि जैत ई
गगन बाट पर

बौखल-बौखल
मेघक कुकुर
लुलुअयले रहि जैत
देह केर
रोमक चुट्टी-पिपरिक घउँदा
रौदक मिसरी-चिन्नी पघिलल
चीखि सकइसँ।

मोन

रोकि ली,
इच्छा अछि
छन-छन बढ़ैत ही-धड़कनकें
भावुक सन छनकें हम
भट्ठीमे झोंकि दी
किन्तु हाथ पैर शिथिल अछि
बान्हल हो
मोन भरिक जाँत जेना
भारी अछि
चंचल अछि मोन हमर
तखन की संभव जे
निकुती पर जोखि ली?

भविष्य

भविष्य
ओ नहि थीक अयना
भेटै अछि नहि ओहिमे
अतीते केर बिम्ब

भविष्य
जलमे राखल सोहाओन
चन्द्र केर प्रतिबिम्ब
भविष्य
नहि थिक
स्वच्छ नीलिम
अन्त-हीन अकाश

भविष्य
ओ थीक केवल
दिन मनाओल
दुरगमनिञा
कनिञा अनीता

मधुकर गंगाधर



पितृ नाम : श्री दीपनारायण सिंह
जन्म : 7-1-1933
स्थान : झलारी, पूर्णिया
शिक्षा : एम.ए., साहित्यालंकार
कार्य : आकाशवाणी, पटना
पता : 38/276, राजेन्द्र नगर, पटना-16
प्रकाशित रचना : हिन्दीमे आठ-दस किताब
अप्रकाशित रचना : उपन्यास, कथा संग्रह, काव्य-संकलन
लेखनारम्भ : हिन्दीमे सन् 54-55 सँ, मैथिलीमे मायानन्द जीक अभिव्यंजनासँ अर्थात् 1960 सँ।
पहिल मैथिली प्रकाशित रचना : दियासलाइ, अभिव्यंजना, पटना मे। आ तकरा बाद अनेक गल्प ओ कविता रचना जे मिथिला मिहिर आदिमे समय-समय पर प्रकाशित। कतिपय अप्रकाशितो।
विशेष रुचि : पूर्वमे फुटबॉल, हाकी, अभिनय आ चित्रकला। आ आब तकर संस्मरणमात्र सङहि उसिनल तरकारी ओ रोटी।

दूटा कविता

एक

सूर्यक घाम-पसेना
चिपचिप कनपट्टी
साँझक आङुरसँ सरकल अछि कजरौटी
ई दू-मुहाँ घरक देहरि सकुचायल
बिना बजौने धमक सुनौलक पुरिबा ई
चुक्का जकाँ सोन्हायल
मनकेर कोर भरल
ईर्ष्या जकाँ सिहरि
कपइत अछि पुरिबा ई।

दू

देसिल बयना
सुनथि सुनयना
गौरा कव्वाली गबैत छथि
झूमि बजाबथि ताली मैना
विद्यापतिक काव्य आधारित
प्रथम मैथिली फिल्म बनल अछि
मिथिलाक्षरमे पोस्टर बाँचू
मिथिलावासी चलू सिनेमा।

स्थिति

रौद छाहरिक सीमान्त बैसल साप
मणिधर अछि
इजोत मणि आ

अन्धकार माहुर अछि
मणिक लेल माहुर खाय
मुर्दा बनल नगर अछि।

दियासलाइ

काठक टुकड़ी
छोट-छोट, उज्जर पियर
चालीस अछि
छोट-छोट गोल माथ
बारुदक कारी धुत्त
जेना आदम युगक नाङट लोक
शैल-गह्वरमे सुतैत छलाह
गदूद-मदूद।
काठक बकसीमे
सूतल अछि काठी सब
ऊपर लपेटल अछि कागत रङलाहा सन
मोहर आ मार्का पर
लाल लाल आखरमे पैघ-पैघ लिखल अछि
मैच फैक्टरी कटिहार।
जेना मनुक तख्तीमे
शंकरक कील ठोकि
व्यास और तुलसी केर
ठोकल पीटल बाकसमे
जकड़ल अछि मानव
लटपल अछि ऊपरसँ
जर्जर इतिहास
मृत्यु जकाँ मानव
मेड इन अज्ञात

तत्व आर श्रम मिलल बुद्धि
चेतना मिलल
बनि गेल कठकी दियासलाइ
नान्हि नान्हि काठीमे
भरल छै विद्रोह
चिनगी भरल जेना
मनुकेर बेटामे
पाव भरि माथामे
पसेरी भरि आगि भरल
जखन ओ घसैत अछि
छोट छिन माथ अपन
मृत्युक नील परदा अपन
आगि लहकि जाइत अछि
छोट छिन माथ अपन
मृत्युक नील पर अपन
आगि लहकि जाइत अछि
अन्हरिया धधकैत अछि
आउर लिखैछ ओ
अप्पन ई देह जरा
अप्पन विकास-कथा
क्षणिक इजोतमे
कतेक विकास भरल।
मनु जरै छथि
याज्ञवल्क्य अबै छथि
तुलसी आ विद्यापति
अपन राग गबै छथि
निमिषक ज्योतिमे
अही ढङे माटिमे
फूल सब फुलाइ अछि
न'व न'व, केहन केहन

मनुख मात्र पाँच फुटक
मुट्ठी भरि हाड़-चाम
मुट्ठी भरि मांस आर
छोट छीन माथ अछि
जीति लेलक अम्बर (कें)
जहिना ई कठकी—
जंगलमे आगिसँ
माटि पकबैत ओ
रचलक अटारीकें
लोहा गलबैत फेर
बझबै लै चलल चान
माटिक मनुक्खकें
धुआँ केर पाँखि लगा
पाखी बनौलक (ओ)

प्रार्थना

हमर आत्माक सत्य
आवर्त्तक व्यूह पड़ल
मुदा डूबल नहि
जिह्वा पर दूधक फोका नहि लगैछ
देह पर रेंगैत
बीच्छ ओ चुट्टीक ज्ञान
बचा एखनो धरि रखने अछि
जल भरल आँखिक कोरें
जल-परीक स्नापित देह
एखनो सुवासित अछि।
हम जाहि टीला पर ठाढ़ छी
से बालुक बुर्ज नहि

हमर एम्हर-ओम्हर
पतझड़ आ वसन्तक
एकपेड़िया बिछल छैक
हमर तरबासँ दबल
इतिहासक हल्दिया पराग अछि
हमर दृष्टि कंकाल
शून्य अटकल नहि
कियैक तँ ओ
स्वर्गक पतित साधक नहि
हे देवता!
आब अपने बुझि गेल होयबैक!
हम विकलांग नहि,
बलक दुलार आ
माताक दुधिया हुलास जनैत छी
मुदा हे देवता!
हे समानान्तर
हम अपनेकें चाहैत छी
समानान्तर रेखा
एक दोसराकेँ सहारा दैत छै
अहाँक कुंभकर्णीकेँ
हमर उन्निद्राक आभास होउक
अहाँक पाथरक पैर
हमर मारुती पैरक
गति माँगथि
हमर संघर्षक गीत
अहाँक श्रवण धारण करथि!
एहन प्रार्थना अपने ब्रह्मासँ करू
यैह अपनेसँ हमर प्रार्थना।

अहिंसक

सजमनि छील'वाला बघनखासँ
आउ! अपनेक मांसपेशी खोखरि दी
एक-एक नसकें—
पुरान नेहालीक ताग जकाँ
खींचि क' निकालि दी—
हड्डीकें रेति-रेति छड़ी बनाबी
अपनेक अहिंसक सेठजी
कीमती छड़ीक इच्छुक छथि।

मीत

सुषमा'क चिता बीच
उष्मा संध्या,
दिन'क प्राण घुटल प्राय
दिशा बंध्या
काजरसँ रङल गीत,
दूर-दूर हटल मीत,
पाथर सन जीवन अछि
कजरी सन सटल प्रीत।

जीवन : नीच आ ऊँच

हमर ई बहुत पुरान अप्पन कोठरी
साँझुक पीलिया-ग्रस्त घड़ीमे
कोयलाक धुआँसँ भरि गेल अछि
एकरा तीनटा खिड़की छैक—

तीनू फुजल
सामनेक खिड़की पर
लोहाक छ'ड़ लागल छैक
आ हम बाहर देखैत छी—
कारपोरेशनक न'ल पर स्त्रीगणक भीड़—
आ भीड़सँ उपजैत अछि कोलाहल
नर-नारीक गोपन सम्बन्धक उजागरि गारि
बाम भागक खिड़कीसँ देखैत छी—
मकानक दुइ कतारक पृष्ठ-भाग
बीचक खाली जगह पर अवस्थित
डस्टबीन, कूड़ा, कुकुर
तेसर खिड़कीसँ देखैत छी—
ताड़क कारी मनहूस, भुतहा गाछ
कोयलाक धुआँ तेज भ' रहल अछि
आ दम घुटल जा रहल अछि
आ सोचैत छी—
हमरा चारूकातक दुनियामे
कोलाहल आ गारि अछि
डस्टबीन अछि, कूड़ा अछि
यैह हम छी, हमर जीवन अछि।
हे भगवान! मृत्यु दिअ'!
हमर ई बहुत पुरान अप्पन छत अछि
जत' हम ठाढ़ छी आ
जोर-जोरसँ सांस खीचैत छी—
एतुक्का बसात स्वच्छ अछि
एत'सँ सम्पूर्ण मोहल्ला लगैत अछि
चित्रकारक लैंडस्केप जकाँ
नल'क कातक स्त्रीगणक स्वर
क्षीण भ' गेल अछि—
जेना कोनो सामूहिक उत्सवक संदर्भे

आङुर-गनल शब्दक माध्यमे
परामर्श भ' रहल अछि
मकानक कतारक बीच
डस्टबीन, कूड़ा आ कुकुर...
कोनो दस्तायवस्की, कोनो प्रेमचन्दक
औपन्यासिक विवरण जकाँ सुपाठ्य छैक
निस्तब्ध ताड़ गाछक
सम्हारल केश-राशिक पृष्ठभूमिमे
चन्द्रमाक काव्यमय उदय भ' रहल अछि।
यैह हम छी। हमर जीवन अछि।
हे भगवान। आउ, जीबू।

भेद

दियासलाइक एहि काठीसँ
दांत खोधू तोड़ू, फेकू!
दियासलाइक एहि काठीसँ
रक्षा करू, हटू, बचू।
दूनूमे शक्ति समान, सभ सामर्थ्य निहित,
एक सूतल छैक आ दोसर जरैत छैक।

पाठ

हम शेक्सपीयर पढ़लहुँ अछि,
वर्जिल आ दान्ते पढ़लहुँ अछि,
कालिदास, विद्यापति पढ़लहुँ अछि,
नहि पढ़लहुँ अछि एखन धरि
अप्पन कोनो आलेख
किएक तँ मात्र एक्केटा चिट्ठी

लिखलहुँ अछि एखन धरि–
सेहो अपनेकें सम्बोधित अछि।

जिनगी

जिनगी पक्की सड़क जकाँ
जड़ भ' गेल अछि
लम्बायित भ' गेल अछि
दूर-दूर धरि
पिरामिड, कुतुब आ
ताज'क छाहरि तर बैसल मोन
ऊबिया गेल,
बहरायेल अछि
पुरान भूगोल पर
नवका कम्पास'क संकेतसँ निर्देशित
देखैत छी–
ओछौल अछि जिनगी'क सड़क
दूर-दूर धरि
दूर कतहु चौराहा अछि
भोंपू आ चिल्ल-पों
भनक क्षीण अबैत अछि,
पयेर तेज होइत अछि,
हटू बचू सावधान
सुनबाक मोन होइछ
पयेर तरक पाथर सन शान्त सड़क
गुदगुदाइत अछि
सुगबुगा उठल अछि
जिनगीक सड़क दूर-दूर धरि।

कीर्त्तिनारायण मिश्र



जन्म : 17 जुलाइ 1937
जन्म स्थान : शोकहरा, बरौनी (मुंगेर)
शिक्षा : बी.ए. ऑनर्स (अर्थशास्त्र) पटना कॉलेज, 1959 ई.
एम.ए. (अर्थशास्त्र), पटना विश्वविद्यालय, 1961।
एल.एल.बी. कलकत्ता विश्वविद्यालय 1966।
रचना : (प्रकाशित) सीमान्त (कविता संकलन) महानगर (कविता संकलन) अकेला मैं (हिन्दी कविता संकलन)
प्रकाशनाधीन : स्वातंत्र्योत्तर मैथिली साहित्य (आलोचना) काल कोठली (कथा)
सम्पादन : परिवेश (हिन्दी मासिक) 1962 सँ 1963 धरि। आधुनिक मैथिली साहित्य 1963। 'आखर' मैथिली मासिक।
मैथिलीमे क्रमबद्ध लेखनारम्भ : 1960 सँ।

वक्तव्य

परम्पराक अध्ययन ज्ञानकें समृद्ध करैत छैक मुदा परम्पराक प्रति विशेष व्यामोहसँ कल्पनाशीलता एवं रचना शक्तिक ह्रास होइत छैक। तैं परम्परा केर ओतबय अंश हमरा स्वीकार अछि ले नितान्त जीवन्त एवं अनिवार्य हो–शेष हमरा लेल महत्त्वहीन, व्यर्थ! परम्परासँ विद्रोह एवं ओकर अस्वीकृति हमरा लेल फैशन नहि। हमर रचना प्रक्रिया मार्गमे अवरोधक रूपमे आयल परम्पराकें विकृत (defaced) एवं ध्वस्त (distorted) करैत निर्माणक दिशामे आगाँ बढ़ि रहल अछि। जिनका चश्मामे 'शाश्वतता' एवं 'नैतिकता'क शीशा लागल छैन्हि, हुनका लेल हमर रचना निषिद्ध।

कविता स्वतः कविकेर वक्तव्य होइत छैक तैं अपन कविताक सम्बन्धमे कोनो परिभाषा, वक्तव्य, व्याख्या लिखनाइ हम अनुचिते बुझैत छी।

एक गोट प्रार्थना स्थिति

ठुट्ठ भ' गेल अछि हाथ
श्रद्धा-ज्ञापनक लेल करजोड़ी करैत
पातर लक-लक भ' जीह
मुँहक मटकूरीमे पड़ल अछि खसि
नत होम' वला माथ
झुकि झुकि क' बना देलक सम्पूर्ण शरीरकें कूबड़
सीढ़ी पर चढ़ैत-उतरैत
खिया गेल एँड़ी
जिनक पूजामे रहि लीन
हम बिसरि गेलहुँ शरीर-ज्ञान
हेरा देलहुँ आत्मबल

आइ सैह देवता
छथि हमरा समक्ष विदूषक बनि ठाढ़
आ अट्टहास क' रहल छथि
हमरा विकलांग देखि
आँखिसँ ओ चला रहल छथि
आत्मबेधक प्रवंचनाक बर्छी
हमर पिपासाकुल आँखिक भाषा पढ़ि
देखा रहल छथि ओ छलनामयी नदीक रस्ता
जत' जलक नाम पर बहि रहल अछि मल-मूत्र!
झूठ आश्वासनक लेपसँ
मोट भ' गेल घरक देबाल
मुदा चार पर नहि चढ़ल
एक्को मुट्ठी ख'ढ़
कियैक तँ बरिसातमे शीतमे
हुनका नीक लगैत छनि
अपना भक्तक आर्त्तनाद!

खण्डित आस्था

हमरा छल अभीष्ट ने समुद्र, ने कोलाहल
ने धुआँ, ने अन्हार
ऊर्ध्वश्वास लैत कालक संकल्पो नहि छल हमर काम्य
मुदा घरसँ बहार क'
जखन बीच बौबटिया पर हमरा नाङट क'
ठाढ़ क' देल गेल
आ आवरणक लेल कैल गेल समस्त याचनाकें
जखन वीभत्स संकेतसँ उत्तरित कैल गेल
तँ औदात्य एवं अभिजात्य

आधुनिक पुरुषक आ आक्रोश केर
आदिम अभिव्यक्ति बनि ककरो मुँह पर पसरि गेल!
नोनि लागल ईंट जकाँ
भखरैत आदमी
आ माटिक घरमे पड़ल दरारि जकाँ
खण्डित विश्वास देखि
हमरा निराशा नहि जुगुप्सा उत्पन्न भेल अछि
हम आ हमर परिवेश
च्युत अथवा स्खलित आदर्शक प्रतिमा पर
सैकड़ो वर्षसँ पड़ल सुखायल
नैतिकताक मालामे
सिकरेट सुनगौलाक बादक बचल लुत्ती
लगा दैत रहल अछि
खेतक कोदारि
मशीनक पुर्जा
ऑफिसक फाइल
आ बस-ट्रामक भीड़
हमरा अपाहिज प्रतिभाक प्रति भक्ति-विगलित होमक लेल
कहियो अवकाश नहि देलक
हमर जीवन्तताक प्रतीक पीठक निचला हड्डीक दर्द
सुविधाभोगी देवताक प्रति बना देलक हमरा हिंस्र।

प्रतिध्वनि

हमर पलछिन
हमरा प्रत्येक क्षण अनुवादित करैत अछि
आ अपन प्रतिध्वनिक पाछाँ
बताह बना हमरा

दूर-दूर धरि ल' जाइत अछि
ई प्रतिध्वनि पारदर्शी त' अछिये
पारदर्शियो अछि
दृष्टि आ कर्ण-रन्ध्रक आकाश
एकरा बान्हि पबैत छैक
आ हम एकर सम्मोहनक तराइमे
एकसर अपस्याँत दौड़ैत रहैत छी
अपन सिमानकें नहि चिन्हबाक
हमर असमर्थता
हमरा दीर्घकाल धरि कचोटैत अछि
अपन परिवेशक समस्या
शंका
सीमा
आ जटिलतासँ घेरायल हम
मात्र अनुवादित रहि जाइत छी
जकरा मूल प्रश्न-चिन्हक अतिरिक्त
और किछु नहि।

अन्तहीन यात्रा

सीमाहीन मरुभूमिमे
अन्तहीन यात्रा
भ' गेल हमर नियति
स्तब्धताक बर्छीसँ छेदल
जाइत रहल हमर प्राण
प्रश्नातीत दृश्य, अनुत्तरित प्रश्न
अप्रत्यासित-अवांछित
हमरा भेटि गेल अनायास
भाषा, अभिव्यक्ति, शब्द, अर्थ

सभकें हेरा हम बनि गेलहुँ
पूर्णतः गोङ
अपन आँय-बाँय, चिकरब-कानब
आक्रमण-प्रत्याक्रमण
हिंसक अपनत्व
आ आत्मीय अपराध-भाव
सभक अवशेषक रूपमे भरल अछि
हमर मुट्ठीमे बालु

नग्नता
स्पन्दनहीनता
प्रतिक्रिया-शून्यता
बूझि पड़ैत अछि
एहि ऊब आकच्छक परिणाम
शाद्वलापेक्षी दिगन्त सन्हिया रहल अछि
हमरा गत्र-गत्रमे
चेतनाहीन शून्यता
अजस्र अन्धकार
गव्यन्तक दुर्लंघ्य पहाड़
बना देने अछि संज्ञाहीन
एक पहाड़सँ दोसर पहाड़
एक भट्ठीसँ दोसर भट्ठी
उधिआइत-खौलाइत
चर्महीन गलित-अस्थि शरीर
मात्र अन्हारेक स्पर्शकें
बूझि सकैत अछि
प्रकृतिक एहि अग्निकुण्डमे
शत-शत सूर्य गलि जाइत छथि
भिनसरसँ साँझ धरि
शब्द, सम्बन्ध, ज्ञान, उपाधि

रहैत अछि धुआँइत एहिना अविराम
ब्रह्म आ आनन्द दुनू भ' जाइत छथि भस्म
आ क' दैत अछि वैद्युतिक संस्कार
विकासक यांत्रिकता
समस्त शाश्वत उपलब्धि पजरि क'
भ' जाइत अछि अनस्तित्व

धुआँ

मज्जा-विहीन अस्थिमे
धुआँ भरि गेल छैक
आ चुल्हि केर धुआँकें
ओ बारुदक धुआँ कहैत अछि
अन्तर बुझबाक छैक
आ हम ततेक विवेक-शून्य नहि जे
सेक्स आ हत्याक गन्धकें
द' देबैक समझौताक नाम
खाहे अमरीका हो अथवा वियतनाम
सभक घर रोटी सेकैत अछि
'नापाम'।

स्फीति

स्फीतिकेर एहि युगमे
अवमूल्यन अपरिहार्य अछि
आ ई युग महगीकेर नहि
बुजुर्गक दायित्वक अछि
पराश्रित व्यवस्थाकेर
हम कुण्ठाग्रस्त कापुरुष साहित्यकार

प्रत्येक ठुट्ठाकृति उपलब्धिकें
दर्प-स्फूर्त्त भ' क' देखैत छी
कियैक तँ
सदैव मूल्यक अन्वेषणमे रह'वला
पुरनका पीढ़ीकें
आजुक मूल्यक न्यूनाकार
अपन गरिमा-उद्घोषणक लेल
प्रेरित करैत छैन्हि
आ हमरा समक्ष
फेनिल उच्छवास आक्रोशक
स्तूप ठाढ़ भ' जाइत अछि
मुदा पुरनका पीढ़ीक
ध्वस्तप्राय व्यक्तित्व
आ
विघटित मूल्यक
परिचय धरि सभकें भेटि जाइत छनि।

केहन अहाँकें लागत?

राति-राति भरि जागल रहिक'
कॉपी, कागद वा किताब पर
अहाँक चित्र हम रोज बनाबी
—सावा हाथक घोघ
—माथ भक-भक सिनूरसँ
बाला वा बड़हड़ी वा कि ठेलाक
मध्यमे भरल ठसाठस चूड़ी
आ उँचगर साड़ीमे
भरि बहियाँ आङी पहिराक'
देहाती महिला जकाँ

चित्रित क' दी तँ–केहन अहाँकें लागत?
शहरी जीवन केर संस्कृति, रुचिबोध
ने तँ कुण्ठित भ' जायेत
कालेजक शिक्षा दीक्षा, क्लब केर सभ्यता
ने तँ आहत भ' जायेत?

वरदान आ अभिशाप

भरि दिनकेर थाकल ठेहिआयेल शरीर हो
ऑफिसक व्यस्तता,
ट्राम-बसक धक्का-धुक्कीसँ
विषतिक्त बनल हो मोन
तखन हे हमर आजानुकेशी प्रिय संगिनी!
सभसँ नीक लगैत अछि
अहाँक हाथक गरम-गरम चाह
ई बात दोसर थिकै जे
चाह समाप्त होइतहिं
अहाँक दोसर हाथसँ झोला ल' क'
जाए पड़त बाजार
जे हमरा जीवनक थिक सभसँ पैघ अभिशाप।

अकाल

सड़क पर हड्डी चिबबैत
छौंड़ा सभ
कुकूर आ पुलिसकें
डंडा देखा रहल अछि
ऐंठल अंतड़ी वाली जनता
भूख हड़तालक धमकी द' रहल अछि

बाँझ सरकार आ
विदेशक आश्वासनसँ
विवाह रचा रहलि अछि
'लूप' लागलि धरती
तथा निवीर्य्य अकाशक बीचमे
देशक नपुंसकता जोरसँ दहाड़ि मारि रहल अछि
आ 'समय' एहि सभसँ असम्पृक्त निसाँमे मातल
मैदानमे जाक' सूति रहल अछि।

समर्पण

सूखल टटायेल जिनगी
गेन्हायल विश्वास
संक्रान्तिक देवताकें समर्पित संत्रास!

गंगेश गुंजन



पितृ नाम : पं. दामोदर झा
जन्म स्थान बरारी (भागलपुर),
(गामक पता) : ग्राम पिलखवाड़
जन्मतिथि : 4 अक्तूबर 1940 ई.
मैथिली लेखनारंभ तिथि : 1961 ई.
प्रथम प्रकाशित रचना : बालसंगीक आँखि आ...
पत्रिका : भारती, बी.एन. कॉलेजक पत्रिका
शैक्षणिक योग्यता : राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा मातृभाषा मैथिलीमे स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण।
विशेष रुचि : समस्त कला विधाक प्रति आसक्ति
वृत्ति : मैथिली विभाग, आकाशवाणीसँ संबद्ध
वर्त्तमान पता : आकाशवाणी, पटना-1

वक्तव्य

एक-आध गौण पत्रिकाक अतिरिक्त, आइ धरि अपन कोनो कविता प्रकाशनमे नहि आब' देलियैक, तेकर एकाधिक कारण। हँ 'अपना' कें तकैक क्रममे अपने रचनात्मक व्यवहार विश्लेषणक प्रक्रियाक फलस्वरूप ई किछु कविता-रचना निवेदित क' रहल छी। आधुनिक संबंधबोध, तज्जनित कुंठा आ जीवनक प्रत्याशी भावपीड़ाक आत्मभुक्त संघर्ष, रचनाक 'माटि-पानि' मानल अछि। भौगोलिक चित्रांकन साहित्यमे वैयक्तिक रूपसँ हम 'अनिवार्य' नहि मानैत छी। हम अनिवार्य मानैत छी 'मनुष्य', मनुष्य जे आइयो किछु ताकि रहल अछि। ओहि मनुष्यक परिचय हम स्वयं ताकि रहल छी तैं कहि नहि सकब, व्यर्थ समूह स्वरमे अपन अपव्यय क'क'।

अपमान बोध

कोनो नितान्त आत्मीय कत'
पहुँचि क' पओलहुँ
ओ घर पर नहि रहय
यद्यपि हमरा बजओने छल।

ई एक टा अपमान बोधक बात रहैक।

हमर व्यक्तित्वक सामाजिक आइयो आहत'छि।
ईश्वर!
अहाँक देशमे आबि
प्रचलित अहाँक प्रतिनिधि धारणा सभसँ सेहो ओहने बोध भेल
अहाँ अनुपस्थित रहलहुँ आद्यन्त

आ समाजमे पसरल

अहाँक धारणा
प्रवास प्रसंग जकाँ लगैत 'छि
हम अपमान अगिले कोनो गाड़ी धरि सहि सकब

कारण, अहाँक अनुपस्थितिमे व्याप्त
अहाँक धारणा सभ
मात्र एक टा दायित्वहीनक हेतु कवच-कथा सन लगैत'छि
आब अपनहुँक मिथ्या परिचय हम
एकबार सभमे पढ़ि लेल करब।

बौक दुष्यन्तक बिन ब्याहलि शकुन्तला

ओ छल संपूर्ण समय
आत्मबोधवत्
सभ अतीत वस्तु उठा लेल गेल
बाँचल अछि रिक्त आ उदास वर्तमान
ओ क्षण तरल माटिक पाथर बनल अछि
ओकर बाद आओर कोनो चेन्ह नहि बनैत'छि चरण केर
अहाँ कहियो चलल रही आत्मलीन
एहि पाथर पर कोनो बाट निकाल' चाहैत छी,
पयरक चेन्ह नहि बनय आ अहाँक द्वारि तक पहुँची
मुदा, अहाँ चौखटि पाथरक ओ
मोड़ि बैसलि छी।
ओ दिशा नहि अछि हमर पहचान केर
हमरहि देल पाथरसँ स्वयंकें न'व क' क' ओढ़ब
जीवन अहाँक, देखैत छी हम, कहक अछि बात एकटा
अहाँ घरक पछुआरसँ उठैत हमर ई स्वर
कतेक होयत अशुभ अहाँक देह, दिन आ दुखकें
सोचियो क' नहि पबै छी बनि कनीको बौक
पयर केर पाथरकें अखनहुँ तोड़ि दैकै अछि, अछि मनमे।

किंतु टुटलासँ चेन्हकें मिटि जाइक भय अछि
रहि-रहि मोन पड़ैत अछि
देल चेन्ह केर ओ अंगुठी
गर्भ मे चट्टान पोसू शकुन्तला।
हम स्वयं आइ लेने छी घुमा
(राजाक खजानामे आब पड़ल अछि)
सोझाँ पड़ि क' नहि चीन्है के दम्भ नहि होयत,
मात्र एक बातक होयत घोषणा
आइ राजा जीहसँ लाचार छथि, बजताह नहि
भरतक माँ
अहाँक कामना पाथर बना देत अहाँकें
टूटब नहि स्वयं आ ओ जंगलमे नहि शहरमे
घर बनायब (किन्तु चौखटि पाथरक आ दोसर दिस मुँह क' क')
कतहु निर्णय नहि बदलब
नहि बदलब। चेन्ह टूटत पयर केर
आओर स्वर फेर
फूटि सकैतछि हमर... ...

एक टा कविता

हम टूटल तार सभक जालक
सतरंगी सर्जक
अंगुरीक पोर सभ पर
प्रतीक्षाक दिन गनैत
घावकेँ सोहरबैत
अबै द' कहि-कहि
कहियो नहि अबैत
एक टा मिथ्या वचन छी।

बन्धु चित्र

प्रतीक्ष्य आत्मवाची?
अहाँक अमरता मार्गकें अन्तहीन दिशा देखा देलकछि,
आ कतहु नहि अहाँ
अनुभूतिक क्षण
कटैया पर फुलाइत अछि
सभ प्रात
न'व प्रस्फुटन।

पीड़ा

पीड़ा,
जीवन-जलमे
पिघलि रहल
स्वाद मिश्रित...नहि,
मोसि सन
कारी-हरियर, तीत
पीड़ा
जीवन-जलमे
पिघलि रहल...
अनचिन्हार रंग घोरैत प्रतिपल।

अनुपलब्ध

एकटा दमघोंटू कोठली अछि
स्मृति सभक नाचि रहल अंधकार,
आन्हर डेग पर

हाथ दुनूक वायवी संतुलन लेने
हम तकने फिरैत छी—
आ देवालसँ ठोकर खाइत
जहर युक्त साँस पीबैत
माथ फोड़ि, कंठ मोकि
मरि जाइत छी-प्रति दिन
एकान्त
अन्हारमे।

आत्मपरिचय : युवा पुरुष

सपनाक शीशाकें
अपनहि आँखिक पुतरीक पाथर सभ तोड़ि गेल
प्रज्ञाक पुरुष ठाढ़ एहि पार
स्वयंकें छोड़ि आयल ओहि पार
(बीचमे अभिशप्ता कोसिका धार)
आँखि ज्योतिहीन,
बोध बहिर
हम एहि युगक
पच्चीस वर्षीय
उदाहृत आदर्श छी
(युवा पुरुष!)

विश्वासघात—एक

भीतरक कोठली
घुप अन्हारमे हेरायल अछि
सीढ़ी उतरैत कोनो मनुष्य
ओंघरा क' ओही अंधकारमे

माथ फोड़ने घायल पंजापर रेंगैत
खिड़की हथोड़ि रहल अछि
अपनहि शोणितक पिच्छड़सँ
बेरि बेरि उठैत-खसैत
कोनो द्वार ताकि रहल अछि।

आखिर, हारि क'
स्वयंकें धूसैत ओही सीढ़ी सभकें
चढ़ि जाय चाहैतछि,
मुदा सीढ़ीयो
जे अहाँ लगा रखने रही
एखन हटा लेने छी
अहाँक हँसी पर ओ पाथर फेक' चाहैत अछि,
किन्तु अहाँ ओकरा
शीशाक घरमे गहींर ध' देलियैकछि।
अहाँक हँसी कतेक कारी अछि?
ओकर आँखि आँखि नहि रहलैक,
ओकर स्वयं स्वयंक नहि रहलैक,
ओकरा अन्हारक,
नहि फिरि सकै वाली स्थितिक,
कारी शीशाक देवालक
हाथमे ठहरल अवश आक्रोशक पाथर
आ कारी हँसीक
अहाँक भ' क' रह' पड़तैक...
(जानि नहि कतेक आन्हर युग तक!)

विश्वासघात–दू

गंगाकातमे
मुर्दघट्टी पर एकटा खोपड़ी ठाढ़ क'

हरेक अगिला चिताक पुछारी रखने
जीवन मानि बैसल छी

अहाँक दुखकें सोचि
दुखी हएब नहि रहल अछि
आब हमर सुख–
अहाँक अपस्यांत दुखक सूचनाक सुख भ' गेल अछि
अभिशाप अंगीकार क'आइ ओ पापी व्यतीत
बेशी पुण्य भरल लगैत
हमरासँ कतेक यात्रा करबबैत अछि
अभिशाप समाप्त होइ तक श्मशान
गंगाकातसँ बस्ती धरि पहुँचि जायत
आब हमरा श्मशानकें गाँव पहुँचैक भय नहि अछि,
जिज्ञासा सठि जयबाक अछि
एहन सठल कोय जानि नहि केहन होइत होयत

सड़क सभ पर भोर करैत
गली कुची मे साँझ घेरैत
यात्रावाही प्राणकें
व्यर्थ लगैत छैक,
कोनो प्रश्न, कोनो पर्याय

गप्प करैत-करैत मुना जाइत पपनी जकाँ
कटु तंद्रिल जीवनकें मानब, नहि मानब
केवल एक बात–पर छैक
ओहि बात पर
जे मुर्दघट्टीसँ नहि उठल रहैक,
मुदा मुर्दघट्टीएक भ' क' हमरा संग
सभ क्षणक अंतिम तहमे
सटि क' रहि रहल अछि

आ ई श्मशान,
गंगाकातसँ गाम तक पहुँचत

हरेक निशा महानिशा भावसँ
अबैत अछि,
हमरा देखाइ पड़ैतछि बीच धार–
कोनो वीभत्स मांसपिण्ड दहाइत
आओर लोल गड़बैत
डगमग दत्तचित्त कारी कौवा।

चारि शीर्षक खंडमे एकटा महाकाव्यात्मक भावयात्रा

हमर कथा

अहाँक चुप आँखि
आ हमर मुखर ठोरक अलौकिक उद्गार केर
एक टा उदास इतिहास भरि

हमर परिचय

कोनो सुन्दर पार्क के
मखमली दूबि पर कयल एकान्त कल्पना सन
समय सापेक्ष अपनापन भरि
एकतरफा ट्रैफिकक
दूतरफा फुटपाथ–
हम कहियो गुजरि गेलहुँ

दू विपरीत दिशा मे।

हमर आयु

अहाँक चिर मौन अपेक्षा,
हमर निर्विरोध निर्विकार
बताह स्वीकृतिक,
अस्पष्ट गीत
स्वयं के अन्हार मे हेराय गेल
किछु आखर
हम कहियो दोहराइयो नञि सकलहुँ

हमर यात्रा

हम एक टा छाया सङे
अन्हारमे चलैत रहलहुँ।

जीवकान्त



जन्मतिथि : साओन शुक्ल 7, 1344 साल।
जन्म स्थान : ग्राम-अभुआढ़, जि. सहरसा (मातृक)
स्थायी पता : ग्रा.-ड्यौढ़, पो. घोघरडीहा, जि. दरभंगा।
वृत्ति : अध्यापन।
वर्तमान पता : महात्मा गांधी स्मारक उच्च विद्यालय, खजौली (दरभंगा)
अभिरुचि : मूलतः कवि आ तत्पश्चात् कथाकार। आलोचना आपद्धर्मक रूपमे।
प्रकाशित रचना : अनेक कविता, कथा, निबंध भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित–प्रसारित।
उपन्यास 'पनिपत', 'अगिनवान', 'मिथिला मिहिर' मे धारावाही प्रकाशित। उपन्यास 'दू कुहेसक बाट' पुस्तकाकार प्रकाशित।
लेखनारम्भ : सन् 53 सँ हिन्दीमे। मैथिलीमे 64 सँ। प्रथम मैथिली प्रकाशित रचना 'इजोरिया आ टिटही'।

वक्तव्य

परिवेशमे, एक टा शिकंजामे कसल मनुक्ख, जीबाक लेल आ मुक्तिक लेल छटपटाइत मनुक्ख जखन अपन सार्थकता तकैत एक टा अयनाकें टकटकी लगा क' निहारैत अछि आ ओहि रूपकें स्फुट-अस्फुट रूपमे बन्हबाक चेष्टा करैत अछि, से थिक कविता।

कवितामे नवताक विशेषण ओकर दृष्टिबोध थिकैक। प्रत्येक तर्कसंगत वस्तुकें, खाहे ओ कतबो नवीन हो, खाहे ओ पहिलुका केहनो महत्वपूर्ण बद्धमूल धारणाक भंजन करैत हो, अपन युक्तियुक्तताक बलक कारणे ग्रहण करब नवीनता थिक।

कविता एक वस्तुक अस्वीकार थिक आ दोसरक स्वीकार। मुदा, ताहूसँ पैघ ओकर उपलब्धि छैक जे ओ आत्मस्वीकृति (कन्फेशन) थिक।

हम साहित्यकें जीवनसँ प्रतिबद्ध बुझैत छी। आधुनिक जीवनक विसंगति, असुविधा, पीड़ा आ यांत्रिकताकें अभिव्यक्ति देब एहि कविताक लक्ष्य अछि। तैं एहि कवितामे क्षण-क्षणमे भोगल जाइत जीवनक प्रति कटुता आ आक्रोश, घृणा आ भर्त्सना, उदासीनता आ निर्वेद अभिव्यक्त भ' रहल अछि।

यान्त्रिक आ जटिल जीवन-यापनक कारणे ओकर प्रतिच्छवि आधुनिक कविता लय-छन्द-तुक-विहीन भ' गेल अछि, जे स्वाभाविक अछि। ई ओकर सहज विकास थिकैक, ककरो अनुकरण नहि। तैं ओ कोनो अर्थमे आरोपितो नहि अछि, आ ने फैशन लेल फैशन अछि।

आधुनिक कविताकें किछु आलोचक दुर्बोध्यताक लेबुल देने छथिन। तकर एक मुख्य कारण अछि जे आधुनिक कविताकें ओ पढ़बाक चेष्टा नहि करैत छथि। ओकरा सहानुभूतिपूर्वक पढ़ल जयबाक चाही। आधुनिक कवितामे 1967 ईसवीक बिम्ब सभ छैक अधुनातन जीवन-संदर्भ सभसँ चुनल गेल। जे ओहिमे ईसापूर्वक तेसर शताब्दीक बिम्ब तकताह, हुनका हाथमे की लगतनि? आधुनिक कविता सोझ, सहज आ अकृत्रिम अछि, ओकरा अधुनातन जीवनसँ फराक क' क' नहि पढ़ल जयबाक चाही।

आत्मस्फोट

माथपरसँ टघरि गेल
हजार टनक बोझ
हजार वर्षसँ माथपर पड़ल छल
हल्लुक! अति हल्लुक!!
दशमीक पेटार–
तेल–बोरल, बत्ती–पजरल,
उड़बासँ एक छन पूर्वमे रहैत अछि
हल्लुक आ उड़नुक, हम छी ओ बत्ती वला ज्योतिर्धर!
माथसँ टघरल अछि बोझ
हम हल्लुक छी
प्राणक अछि रोम-रोम आनन्दक पीड़ासँ
हुलसल, व्यग्र...
बुझाइछ भारहीनता
परम्पराक सभ टा भूगुरुत्व शून्य भेल
रौकेटक कैपस्यूलमे हम दहाइत छी
ऊर्ध्वाधार उठि हम सकैत छी
मोक्षक आनन्दसँ खूब फूलल
हम हाइड्रोजन गैससँ भरल बैलून छी, उधिआइत
बाहरक सभ टा दबौठ अछि बिला गेल
भीतरेक दबौठमे जाइत छी पिसायल
भीतरेसँ आब हम पिचा जायब
अपनहि मोक्षसँ आनन्दक पीड़ासँ
चिन्तित छी...
आत्म-स्फोटसँ कण-कण ने बिखरि जाय
माथपरक बोझ जे टघरि गेल
लम्बा हम भ' रहल
भ' सकैछ, अपने नमतीसँ नहि खसि पड़ी

हथियाक धान-सन...।
आत्म-स्फोटसँ नहि छिड़िया जाइ।

परिवार

रौदीक देबाल
दाहीक छाड़नि
घरक ओगरबाहि करैछ एक टा कलसल गाछ–
लूपक छिट्टा तर झाँपल
दूर–
एक टा पैघ यंत्रक पुर्जासँ अबैछ
अन्तर्देशीय पत्र + मनीआडर

सौन्दर्य-बोध

गाड़ीक खिड़कीसँ
आकाशक एक कतार देखाइत अछि
ताहिमे चान उगि रहल अछि
सूर्यक रक्तवर्ण किरिन ओंघड़ाइत पड़ाइत अबैत अछि
फेर रंग बदलैछ
पहिने संतोला, तखन सोनाक वर्ण
जेना आकाशक भट्ठीमे कालदेवता क्षणक भाथीसँ
लोह धिपबैत हो!
चानक रंग बदलैछ
प्रतिक्षण नबका चान
हम रोकि नहि सकैत छी विकासकें
आ, रोकब होयत एक टा कुरूप अभिलाष
अगिला क्षणक सौन्दर्यसँ वञ्चिते ने रहि जायब?
चान कखनो मलमली कुहेसमे रहैछ

कखनो मेघक क्वार्टरमे सन्हिया जाइछ
कखनो आकाशक पलङपर
नाङट वेश्या-सन पड़ल रहैछ
मोहक आ अश्लील
तैयो हमरा चान बासि फूल बुझाइत अछि
काल्हि फेर उगत ई चान–
एहिना! पड़िबाकें जनमत पूर्णिमाकें बहसत
आ अमाक छौरझँप्पीमे दबा जायत
बेस
चान तखन नीक अछि, नीके रहैत
मुदा, प्रतिमास, प्रतिवर्ष आ प्रतिदिन
वैह आवृत्ति, आ वैह चान!
आवृत्तिदास चान
आवृत्ति थिक वेश्याक दैनिक सोहागक सेज!
गोली मार चानकें
बासि फूलक ढेरिकें
आ हम गाड़ीमे
खिड़कीक पल्ला खसा दैत छी।

सीमा

थाकि गेल छियह, हे मित्र!
बहुत रास बाट टपलहुँ, बहुत गिरिश्रृंगकें नपलहुँ
बहुतो दूर आकाशमे बौअयलहुँ
मुदा अपन सीमामे एखनो, बद्ध, संकुचित छी
एखनो वैह भूख, एखनो वैह पीड़ा,
आकाशक विस्तारमे बुझाइछ निरर्थकता...
एक टा ठेही
थाकि गेल छियह, हे मित्र!
एखनो बड़की टा आकाश

इशारा करैत अछि,
एखनो रहस्य बहुत रास मौन, बहुत रास प्रश्नचिह्न
मुदा हमर सीमा सभक ऊपर अछि
हमर क्षणिकता आ दौर्बल्य
हमरा एक टा परबा बना देने अछि
हमरा नहि होइछ–
एहि शरीरें
हम सृष्टिक कोनो भागमे
तोड़ि सकब अपन संकुचन, सीमा,
...अपदार्थत्व
थाकि गेल छियह, हे मित्र!

देश

हे देश, तों कत' छह?
चौपालक कार्यक्रम, सरकारी पत्रिकाक आवरण-पृष्ठ
सरकारी फाइलक आंकड़ा
अथवा कुरसैलाक पुल
आ बिहारक छौ टा विश्वविद्यालय
आ की तों छह अल्हुआ कीनैत
टाकामे तीन सेर किसनपुर हाटपर
बिना टिकट गाड़ीमे चलैत ल' जाइत अल्हुआकें
पछबाक धुक्कड़मे उड़िआइत धुरा
जरैत गामक फूसिक घर
जरैत गहूमक गाछ
अथवा महानिर्वाचनमे बंटाइत नमरी नोट
बोगस भोट, आ लाठी, आ छूरा
आ लाल कार्ड हाथमे गहने सत्तरि वर्षक बूढ़
तों के छह?

तों कत' छह, हे देश?
तों लभ इन टोकियो छह
अथवा देहाती क्वैक, अथवा इन्दिरा गांधीक नाक
कारी नोट, ड्यौढ़ा सूदि, सय रुपैये बोरा धान
दवाइमे एडल्ट्रेशन
हे सहस्रशीर्षा पुरुष, सहस्राक्ष, सहस्रपाद
हे हजार टा जीह
हजार टा विषधर बला देश
तों के छह आ कत' छह?
फूसि थिक वेद, शंकराचार्य आ मंडन मिश्र
फूसि थिक राजा हरिश्चन्द्र आ दधीचि आ गांधी
सत्य थिक चीनी एटम बम
अमरीकी गहूम आ साइरा बानो आ चिरकुंडा केस
हम्मर देश!

गाम

गामक ऊपर ठाढ़
धुआँक कुहेस टेढ़, स्थिर आ औंघायल
गामक घर सभ लटकल, फाटल, टेढ़
भरि डाँड़ थालमे ठाढ़ लोक जकाँ असोथकित

गाम थिक औंघायल, मुरछायल, अनेरुआ कुकूर,
पड़ल, आँखि मिलमिलबैत
घर सभसँ चुट्टीक धारीमे बहराइछ नेना सभ
गठूलमे बूढ़-पुरान आ स्त्रिगण आ अबोध नेना ठूसल अछि,
एक दोसरा पर दाँत गड़ौने
आँखिक गोलककें आधासँ बेसी बहार कएने...
नेना सभ माटिक शब्दकोषमे अश्लील व्याकरणकें रटैत अछि

गामक लोक सभ आब चाहैत अछि रोप' टाकाक गाछ
आर कोनो शस्यक बीया भेटैछ नहि आब
आ ने तकबाक मोने होइछ
लोक टाकाक गाछ रोपबा ले' अपस्यांत,
बीया तकबा ले' चल गेल अछि महानगर...
आ ओत' सँ अबैछ पोस्टकार्ड आ मनीऑडर
थाला लगाओल कलम नहि अबैछ
आ महानगरमे लोक स्त्री-पुत्रक छोट मायाकें
रंजिता उर्वशीक रंग आ मासु आ गनौरियाक
विराट् मायामे धोखारैत
नौ वर्गमीटरक कोठलीमे एगारह आदमीक संग सुतैत
अबैत अछि गाम
पाँच दिनक अवधिमे एक बरखक मोजाबरा पुरबैत
शरणार्थिक कैम्प बना दैछ
भुक्खल भिखमंगाक समूह

गामक सुन्दरी सभ परती खेत पर चतरि गेल दूभिक मूड़ी अछि
टेरिलिनक साड़ी-ब्लाउजक साँठल अछि खाजाक भार
उपनयनक, बियाहक आ तीर्थक आशा तकैत अछि चातक
टेरिलिनक टुकली सभ उड़ियायत कहियो एक दिन
आयुक बाट पर अजग्गि कन्या सभ कलसल जाइछ
नायलोनक पर्स बुनबाक सामग्री लेने
आँखिक टायरगाड़ीपर एक ढेर दिवास्वप्न बोझने
बहुत रास नवविवाहिता सभ सीमानपर जनमि गेल
बबुरक गाछ थिक
बहुत रास नवविवाहित जमाय
ट्रांजिस्टरक कैबिनेटपर कपार पटकि टेटर बहार करैछ
गामक साधारण लोक
प्रतिदिन एकटा हाँसू कुटबैत अछि
अपना गरदनिपर राखि क' सुतबा लेल

मुदा, कोनो दूरतरक ढोल-पिपहीक अनुमानित लयपर
ओहि तेजका हँसूकें राखि दैछ कनकोठापर,
प्रतिदिन
ओकर जीवन
मोटका ढेङ तर जनमल घासक फुनगी छैक,
अपन जीवनक साठि वर्षमे बेसीसँ बेसी
साठि दिन फुलायल रहैत अछि ओ
सम्पूर्ण गाम एक टा कैम्प थिक...
पोस्टकार्ड आ मनीआडरक जीवनरससँ पटैत
सभ वस्तुकें टाकासँ बजबैत,
बटाइ लागल दस-बीस कट्ठाक हीसामे
देखैत हिमालयक नाबालिग, दुलारू बेटी सभकें नचैत
लौट्रीक हरलहा नम्बर सन मेघक टुकड़ी सभकें
उड़िआइत...
भोर-साँझ
घर सभक ऊपर नीलोज्वल धुआँक टेढ़का डाँरि
फोफनायल नीलवर्ण कुहेस,
सुतल, अलसायल।

इजोरियामे नमरल आर्द्राक मेघ

डाम्ह लताम-सन पीयर मेघ
इजोरियाक लेबर-रूममे छटपटाइत अछि
झिसिआइत
बाँसक झोंझ निराव
कौआक टेल्ह-गेल्ह सकदम्म
प्रतीक्षा अछि
बहरायत मेघक पेटसँ
बहुत नाम आ बहुत चाकर

एक टा उज्जर झील
जाहिमे लतरत पुरैनिक पात—
बहुत रास!
जाहिमे नमरत सहस्रदल कमलक इजोत
बहुतरास इजोत!
मुदा डर अछि—
झीलक कछेरमे सगबगायत—
लाल लाल आँखि बला गोहि
सों-सों करत आ...
नहि जानि...
क... क... रा...???
उठा ल' जायत!

कालबोध

काल घड़ीक डायलपर पड़ा रहल
सूर्य ओ चान
कोनो तस्कर व्यापारी सन
चारक अढ़े-अढ़ बाट पर छछलैछ
तरेगनक जुलूस
भूमिगत अणुबमक परीक्षण जकाँ धुधुआइछ
बसात खिड़कीक नीचाँ ठाढ़ अछि
एक आलिंगन लेल—
प्रतीक्षामे
अखबारक बोझ आतंकक दाओसँ
पटकने अछि
बोध करबैछ जे सभटा लोक एक्के ग्रह पर अछि
जेना सिकियाङक अणु-परीक्षण
एक्के पृथ्वीपर होयबाक सम्बन्धें

कोन-ने-कोन बाटसँ
फेफड़ाक रैकपर
राखि जाइछ धुराक मोट तह
कालक सूचक पड़ा रहल
टिकटिकाइत घड़ीक डायल पर।

परसाघाटक कौशिकीसँ

तों नीलमक वृहदाकार खण्ड छह?
नहि छह।
तों स्फीत, दुर्दम वा दुर्निवार आसुरी शक्ति छह?
नहि छह।
तों क्षिप्र आ अतिमानुषी बैलेरिना छह?
नहि छह।
तों जीवितकें मृतक, आ मृतकें जीवित बना क'
एकान्त, निर्जन परतीपर
नग्न आ बर्बर आ कापालिक नृत्य करैत
डाइन छह?
नहि छह।
तोरा कछेरमे झलकैत विस्तीर्ण बालुक विस्तार
अपार
पछबामे उड़ैत, आसमर्द करैत
वायुमण्डलक अयनाकें दू टूक करैत
तों खलखल उच्छल, गौंज दैत, लटपटायत, अपस्याँत
नीलोज्वल फेन-जल
तों की छह?
एटम बम? मृत्यु? महानाश? विश्वयुद्ध?
तों किछु ने छह!
हे कौशिकी!

तों तटबद्ध, नियन्त्रित आ दास छह एकटा पशु-शक्तिक
अपने भौतिक नियमक शृंखलाक बन्दी
अपने निर्णायक नहि, पराभूत, परतंत्र, परशासित
ने जीवन, ने मृत्यु, ने नाश, ने एटम बम।
अन्धशक्ति मात्र!
जकर नियति छैक भौतिक, स्थूल नियम मानवकृत
नाचह आब रिंगमास्टरक संकेत पर
असहाय, पराभूत, बन्दी शक्ति अन्ध
तों स्फीत, दुर्दम आ दुर्निवार आसुरी शक्ति छह?
नहि छह।

सूर्यक मृत्युक प्रक्रिया

सूर्य कोल्हुआ बड़द जकाँ जोतल अछि
ओकर आगाँ अन्हार, ओकर पाछाँ अन्हार
ओकर ऊपर अन्हार, ओकर नीचाँ अन्हार
सूर्य अन्हारक पानिपर गलैत हिमखंड

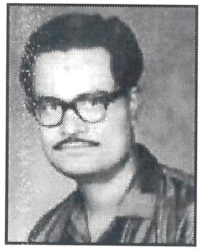
सूर्य कोल्हुआ बड़द जकाँ जोतल अछि
निर्वीर्य, क्रीतदास
ठेहिआयल, मूर्ख
ऋतुचक्र ओकरा टिटकारी दैत ठेलि रहल छैक
बारह मासक बारह टा चाबुकक दाग
ओकरा पीठपर अंकित अछि

सूर्य कोल्हुआ बड़द जकाँ जोतल अछि
दमटुट्टू, असहाय...उकासी करैत
सूर्य मरि जायत
बन्न कोठलीमे औनाइत सूर्य अवश्य मरि जायत

सूर्य कोल्हुआ बड़द जकाँ जोतल अछि
क्षयाणु-भुक्त, म्रियमाण
अन्हार, अन्हार आ अन्हार
पैघ अन्हार छोट अन्हारकें खा जायत
बचि जायत सघनतम आ निस्सन अन्हार
सुन्दर आ शीतल आ तीतल अन्हार
अन्हार नित्य वस्तु थिक
मुदा ओ धूर्त सूर्यकें खेला क'
बेदम क', आ तिल-तिल छटपटाइत
सूर्यकें तमाशा देखैत मार' चाहैत अछि...

मुदा, हम तंग छी एहि शिथिल प्रक्रियासँ
सूर्यक मृत्युसँ तटस्थ छी
जहिया कियो कहत जे अन्हारक पछुलका कोठलीमे
एक टा हाड़ जागल माल
चमौटी बन्हले, ठाढ़े मरि गेल अछि
तहिया हम ने हँसब, ने कानब
मात्र एक टा पैघ निसास छोड़ब।

धूमकेतु



नाम : श्री भोलानाथ झा
उपनाम : धूमकेतु।
स्थान : कोइलख (दरभंगा)
शिक्षा : 'भिख-दुख माङिक' पढ़लौं आ जनकपुरमे चाकरी करैत छी।' अर्थशास्त्रमे एम.ए. कयलाक बाद आर.आर.डी. कॉलेज, जनकपुरधाममे अर्थशास्त्रक प्राध्यापक।
रचना : दूटा उपन्यास 'रने-बने' आ 'हम अहाँ', गोड़ चौदहेक कथा आ 6-7 कौड़ी कविता।
प्रकाशित रचना : (कोनो सूचना नहि—सम्पादक)

वक्तव्य

काव्यक विषय मे कोनो वक्तव्य देबाक लूरि हमरा नहि अछि।... नै थम्हल जाइये तखने हम लिखैत छी। ओना लिखैमे हमरा बड्ड कष्ट होइये।

स्थिति

एकटा समुद्रक अतलतलमे धधकि उठलैक ज्वालामुखी
आर्त्तनाद क' उठलैक ज्वारि
तटशिला पर माथकें पटकि-पटकि
सधि गेलैक—सुखा गेलैक
आ ओही काल रात्रिमे
फूटि गेलैक चन्द्रमा छहोछित्त
ज्योति ओकर टप-टप-टप चूबि-चूबि
लहरि-लहरि पाटि गेलैक
कण-कणमे समा गेलैक-बिला गेलैक

तरंगक पहाड़ चढ़ल नोआकेर भरल नाओ
छहलि गेलैक बूड़ि गेलैक
कालक गर्भसँ जेना भविष्यक भ्रूण निछा गेल होइक

नान्हिञेटा चीत्कार, कनिञेटा हाहाकार
आ फेर सभ शान्त जेना
श्मशानक कंकालकें खड़खड़बैत बिड़रो चल गेलैक
सूर्य धरि छैके
आ धरतीयो घुमिते छैक अपन कील पर
मुदा एक गोलार्ध धसि गेलैक
आ दोसरमे दड़कि गेलैक क्रेटर अतलान्त

स्याह तप्त लावाकेर पमारामे ध्वस्त पोत जकाँ
थरथर थरथराइत क्षितिज डूबि गेलैक
स्वप्न रंगी स्वप्न सनक अनभुआर एकटा मोरनी
ता-थैया नचैत-नचैत फड़फड़ा क' खसि पड़लैक खौलैत अलकतरामे
माटिमे-पानिमे, आकाश-पातालमे
बर्फमे-बसातमे, इजोत-अन्हारमे
जत'कतौ मनुक बेटा बाँचल छैक बेचारा
हुकरैत छैक अपरिहार्य श्वासक भारसँ
कुहरैत छैक घोर आत्मदाहसँ

मरण-बाटे

करेजक धुकधुकीक संग ई आबि गेली
आ धरती पर अबैत देरी आङुर पकड़ा देलैन
तहियासँ अहर्निश जा रहल छी डेगाडेगी
ठंढा, हिम-शीतल मरण-बाट बाटे
आत्महत्याक प्रक्रिया निमाहि रहल छी
(जकरा जीवन कहैत छैक)
जीबि रहल छी

दूध पिया क' माय आ अन्न चिखा क' बाप
पोथी घोंखा क' गुरु आ शोनित चटा क' स्त्री
प्रीतसँ मीत आ रीतिसँ समाज
आ संजीवनीक हेतु अपस्यांत मृत्युंजय
घूलल हरिड़ा जामुन सनक बम भरभरा क'
सामूहिक मरण यज्ञमे सभ सक्रिय छथि
मौगीमे-मुद्रामे-मदिरामे अपनाकें तकैत छथि

हमरा भय नै होइत अछि
हमहीं ओकरा होइत छियै माने
क्षितिजक पलक-कोर पर जेना
खत्तामे डबरिआयल शोणित सनक
सूर्यक थुम्हा देखने हेबै
तहिना हमर, आँखि क्षितिज धरि विस्फारित भ' गेल अछि
आ भूगोलक डगमग डिम्हामे भरल,
सुसुम निर्मल रक्त पारावारमे स्वयंभू (हम)
मकारादिमे अपनाकें तकैत छी
आत्महत्याक प्रक्रिया (जकरा जीवन कहैत छैक)
निमाहि रहल छी।

अहुरिया

गुन पर गुन...
गीरह पर गीरह...
छुच्छ, नग्न आ असल रूपमे की छी
जकरा 'हम' कहै छियै?
जे छी सरिपों से टा निश्चित नै छी
केहन क्रूर वीभत्स भयानक धोखा भेल अछि
आलोकक स्पर्श मात्रसँ सभटा प्रतिमा बिला गेल अछि
विकराल बोध केर धूमकेतु
शत-सहस्र ध'-ध'-ध' धधकैत मरकाठी लेने
चिता-पुंजकें खोरि-खोरि क' ताकि रहल छथि
शेष बचल की?
गीरह पर गीरह पर गीरह...छिटकि गेलैक अछि
गुन पर गुन पर गुन पर गुन...सभ उघरि गेलैक अछि
तहेतह खरकट्टल सभटा ओदरि गेलैक अछि

जाति-वंश आ माय-बाप आ भाय-बहिन केर
बाध-बोन आ टोल-पड़ोसक
ईर्ष्या-द्वेषक, हर्ष-शोक केर
हीत-मीत आ प्रीति-रीति केर
आतप-वर्षा-शीत-वसन्तक
बान्हल सक्कत जनम-गेंठ सभ छिटकि गेलैक अछि
सत्यवान केर श्वेत प्राण-कण
यमक फांससँ छहलि गेलैक अछि
अगुणित छिड़िआयल अस्तित्वक कोनो दोगमे
तहेतह सिसोहल जा क' शेष बँचल की?
शून्यमे फाड़ल अनाकृत चीछ??
आकि जनशून्य, उद्भिजहीन, उत्तुंग हिम-गिरि-कन्दरामे
औनाइत मूक हाक्रोश???

मुक्ति

ओ सभ व्यक्ति थिका व्यास
जिनक जन्म, इछाइन कुहेस पसारि क'
भोगोपरांत तत्क्षण मझधारहिमे
होइत-होइत-होइत छनि धूर्त्तताक वीर्यसँ
बोधिसत्व जकाँ जंगले-जंगल नै बौआइत छथि व्यास
हुनक बोधे हुनक जन्म थिकनि
जन्मे हुनक बोध थिकनि
जन्म लैत देरी भ' जाइत छथि
हीनचेता मांसभक्षी पराशर गिद्धक समाजसँ बाहर
ओना वीर्य-दानक महत्त्व ओ बुझैत छथिन।

सायुज्य

जे अहाँक पूजा करैत छथि
अहाँकें पाथर बुझैत छथि
आ जे ध्यान धरैत छथि
तिनका हेतु अहाँ प्रतिमा छी
इतिहास-पुराण तँ कवि करैत अछि
जे अहाँकें राजमहिषी कहैत अछि
हमरा हेतु अहाँ की माटि-पानि-बसात
कारण हम अहाँक देहकें भोगलहुँ अछि
अहाँक नोरकें पीलहुँ अछि
आ अहाँक स्वासक चिरंतन सुगन्धि
तँ एखनहुँ हमरा प्राणमे बसल अछि।

समाधिस्थ

अश्वत्थ नामक गाम हमर, कापालिक थिक
एकर गन्हाइत जटा-जालमे गराड़ सभ सहसह करैत छैक
हृदय नामक अंग एकर उधकैत छैक मंत्र-बलें
ओना बान्हि देने छैक दशो दिशा उनचासो पवन
आ-जे एकर घोकचल-गिजटाह ठहुरी-फुनगी
कँपैत रहैत छैक अहर्निश कोनो अज्ञात उत्तापसँ
पातक आतंकसँ पात सिहरैत रहैत छैक

हमरा गामक प्रत्येक शाखामे छैक गहींर अन्हार धोधड़ि
आ सभ धोधड़िमे बसैत अछि एकटा क' सनातन शेषनाग
अन्हारमे विष-दृष्टि ओकर लेसर किरण जकाँ चमकैत छैक
ओ बीछि बीछि क' खा जाइत छैक निरीह चिड़इ-चुनमुनीक अंडा

आ हमरा गामक निस्तब्ध वातावरणमे औनाइत रहैत छैक
मात्र मरुछियाहि परुकीक मूक हाक्रोश
एकर अंकमे उमकैत छैक डाकिनी-पिशाचिनी-योगिनी
जे प्रत्येक संभावित भ्रूणकें मंत्र बलें
निछा दैत छैक
आ चानि पर लेस दैत छैक बतिहर
साबर गबैत छैक आ नचैत छैक
भैरवी चक्रमे चक्राकार नङटे

हमरा गाममे रहैत छैक बारहोमास कालरात्रि
शीर्षस्थ छनि काकभुसुण्डीक खोंता
जखनि-जखनि प'ह फाट' लगैत छैक
ई सपुत्रे डारि-पाँखि पसारि लैत छथि
दूरागतक आभासेसँ साकांक्ष,
सोनितायल सिसोहल घेंट हिनक
काल सर्प जकाँ तनतनाय लगैत छैक

हमरा गामक मुरदा जड़ि
कोइला-मोइनिक सड़ल कादोमे डूबल छैक
गाम हमर ओहिमे चकभाउर दैत लेढ़ा रहल अछि
आ गामक मूर्च्छित आत्मा अपन चोंचामे बैसल
पथरायल दृष्टिओ भट्ठा दिश त्राटक लगौने
विपरीत गतिक सम्मोहनमे अपनाकें समाधिस्थ बुझैत अछि।

चारि-चतुष्पदी

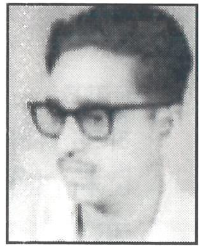
राखि तँ लितौं आँजुरक छिन्न मस्तक
हमहूँ ध'रे पर
मुदा ई तँ फेर चरचरयतैक
आ फेर हँसतैक, वैह ताल।

चालैन लेने अपस्यांत छी
मुदा आब ई आगि मिझायत?
जर' दिऔक आब अइ बजारमे
कीनै जोकरक चीजे ने छैक।

ककरो क्यो चिन्हैत ने सुनैत
ने सुझैत ने बुझैत छैक
अजब धमगज्जर अछि अइ मेलामे
सभक सभ फोटुए लेने फिरैत छैक।

गाछ जँ पातक भार नै थम्हैक
तँ ललका टुस्साकें खोंटैक असंभव प्रयास सँ नीक थिक
'जे बचल-खुचल कुल पीरा पातकें झाड़ि दियैक'—
से बंध्याकरणक हेतु आनल गेलि एकटा स्त्रिगण बजैत रहैक।

श्रीकान्त मिश्र



जन्म स्थान : भरवारा (दरभंगा)
जन्म तिथि : 23 जून 1941 ई.
वर्तमान पता : 57/एन. 5, चकेरी हवाई अड्डा, कानपुर-8
शिक्षा : सामान्य
विदेश-यात्रा : सिंगापुर, हौंगकौंग, आ कौबे
प्रथम प्रकाशित रचना : (कविता) 'जीवन मेला'—वैदेही (दिसंबर '60)
क्रमबद्ध लेखन : दूटा कविता (28 अगस्त '65 क मिहिरमे छपल)
प्रकाशित रचना : हिन्दी, बंगला, मैथिली एवं अंग्रेजी माध्यमे सब विधाक हिन्दी रचना—देशक प्रमुख पत्र-पत्रिकामे, मैथिली रचना—मिहिर, वैदही, मिथिला दर्शन, मिथिला दूतमे, बंगलाक रचना—साप्ताहिक देशमे आ अंग्रेजीक रचना—'कारावान' एवं सैनिक समाचारमे प्रकाशित। पुस्तकाकार कोनो नहि।
अप्रकाशित : प्यासी धरती; निर्जल मेघ (हिन्दी कथा-संग्रह प्रेसमे)।
विशेष रुचि : भ्रमण
व्यवसाय : सम्प्रति वायुसेनाक प्राविधिक विभागमे कार्यरत।

वक्तव्य

मात्र ख्याति प्राप्त करबाक लेल साहित्यिक अराजकताक जन्म देब बौद्धिक भ्रष्टाचार थिक।

एक नव कविता

लगइछ
टाटक फाँकसँ कैल गेल प्रीति
निर्जन गलीमे
सोर पारि रहल अछि हमरा
लगइछ
एकान्तमे लिखल गेल प्रेम-पत्र
बाकसक कोनसँ
क' रहल अछि संकेत
आबक लेल
लगइछ
भालसरिक ओटमे ठाढ़ि
क' रहलि अछि केओ
हमर बाँझ प्रतीक्षा
मुदा आब...
...आब तँ
मुन्हारि साँझकें
दूर अबैत लोकक
अस्पष्ट चेहरा जकाँ लगइछ
तखनुक सब बात।

दूटा प्रतिक्रिया

एक

'इम्प्लायमेंट एक्सचेंजक' देहरिसँ
उदास मुद्रामे घुरइत
ककरहु देखि तिलमिला उठइछ मोन
आ होइछ जे कहि दियैक—
'रे आन्हर युगक कायर, डरपोक!
सुन...
कागतक एहि सम्बलक भरोस छोड़ि
अपन अन्तरतममे सुतल—
शक्तिकें ललकार।'

दू

कोनो कोनटामे
किंवा निर्जन गली-दोगमे
कोनो युगल जोड़ीकें फुसफुसाइत देखि
घृणाक लहरि उठि पड़इछ जे—
जकरामे
रूढ़िवादसँ संघर्ष करबाक सामर्थ्य नहि
से की करत प्रेम
ओ तँ—
फुसिया रहल अछि स्वयं अपनहि
आस्था-विश्वासकें।

परिवर्त्तित

राजमहलक
बदलि देलियैक अछि

रंग ओ रूप हम
पोति गेरुआ रंग कियैक तँ
कविकोकिल नञि औताह आब
फेकि देलियैक अछि
लखिमाक आकुल प्रतीक्षा
कमलाक कात
कोनो दिन बहि जयतैक स्वयं ओ बाढ़िमे
समेटि देलियैक अछि
मात्र एक आँजुरमे
भावुक प्राण सबहिक अनुभूति
ओ तँ छलाह पहिनहिसँ रिक्त,
एकान्त प्रेमी
आब हमहूँ छी—
सम्भव निमहि जाय।

एकटा नव परिभाषा

बीतल कालि—
जेना
आन पुरुषक संग
भागि पड़ायलि स्त्री
किंवा
आर सरल भाषामे
टूटल थर्मामीटरक
छितरायल पारा
जकर कि
पुनः सञ्चय असम्भव।

संयोगाहत हम

आइ
जखन कि
बाँटि रहल प्रीति अछि
रभसि-रभसि धरती क'
सोलहो शृंगार!—
अर्थ
संकेतक
जे बूझि ने सकल छलहुँ
चुप्पे कहि गेल अछि
फागुनक वातास!

संगी
सुधि तोर
लीखि गेल व्याख्या प्रसंग संग
स्नेहमयी भाषामे
पोथीमे प्राणक मोर!

आ आब
जखन कि खूब स्पष्ट भाव तोर
बेकल अछि प्राण आ—
छलकि पड़ैछ नोर!

आभिजात्य

साँझू पहर
गुदरी बाजारक नुक्कड़ पर
भुतिआयलि गामक एक युवती
अपसेयांत भ' ठमकि गेल 'छि
आ
एखनहुँ ओकरा चारू कात
भूकिए रहल छैक
शहरुआ मतिविशेष, बताह कुकूर!

जोह

जखन कि–
कल्पनाक पाँखि पर,
मोनक उड़ि जायब
एतेक नीक लगइछ
तँ–
मिलनक मेलामे
मन-वांछित मूल्य पर
अभिलाषाक बिका जायब
कतेक नीक!

दूटा नव परिभाषा

एक

सम्पादकक डाक–
जेना–
सौन्दर्य प्रतियोगितामे
भाग लेनिहारि सुन्दरि युवतीक
जमघट!

दू

अस्वीकृत कविता–
जेना–
नगरपालिकाक
कूड़ा-करकटक डिब्बामे फेकल
एक फ्यूज बल्व!

एकटा बोध

ई युग
भलमानुषक युग अछि
कियैक तँ जेना प्रत्येक भलपुरुष
अपन शब्दक प्रतीक होइछ
तहिना ई युग
अपन शब्दक प्रतीक अछि
रहैछ सजग अपन प्रत्येक शब्दक प्रति
आ
हमरा लोकनि एहि युगक भलपुरुष

एकर अनर्गलहुँ निर्णय किंवा काजकें
युगबोध बूझि
पतिव्रता सीताकें
नरियाठि रहल छी घरसँ।

आत्मस्वीकृति

हम एकटा बाट छी
आ हमर सांस ओहि बाटक स्वर,
बेरि-बेरि निकलि जाइछ
हमरा ऊपरसँ कतेको लोक,
अनुभव करैत छी हम
बहुत रास पयरक दवाब
मुदा
जखन देखैत छी तँ–
होइछ ने दृष्टिगोचर कोनो पदचिह्न
सम्भव धूलिविहीन छी हम।

रामानुग्रह झा



पिता : स्व. जागेश्वर झा
जन्म स्थान आ पता : सुपौल (सहरसा)
जन्मतिथि : 12 जनवरी 1939 ई.
योग्यता : बी.ए., शास्त्री
प्रथम प्रकाशित रचना : कविता–शरदक साँझ, (मिथिला-मिहिर, 1961)
लेखनारंभ : 1960सँ
प्रकाशित : शताधिक विविध निबन्ध आ आलोचना तथा नव कविता अनेक पत्र-पत्रिका सबमे (पुस्तकाकार कोनो नहि)
अप्रकाशित : अनुक्रम (निबंध-संग्रह), मेघ गीत (मेघदूतक गीतात्मक अनुवाद), आजुक परिवेश आ नव कविता
विशेष रुचि : अध्ययन-अध्यापन आ लेखन
वर्तमान पता : प्रधानाध्यापक, आदर्श माध्यमिक विद्यालय, सुपौल (सहरसा)

वक्तव्य

कविता? *जीवन सापेक्ष सत्यक अनुभूति।*
कवि? *अनुभूतिक सक्रिय भोक्ता, निरपेक्ष माध्यम नहि।*
जीवन? *गतिशील, तैं अनुभूतिक विविधता।*
मूल्यांकन? *विविधतामे एकेटा मापदण्ड अनुचित।*
रचना प्रक्रिया? *चिन्तन, धारणा, विचार, दृष्टि आ भाव—कविताक भव्य भवनक स्तंभ।*
कला? *बिम्ब, प्रतीक, उपमान आदि सब तँ छैके, सजाउ ने, जेना चाही।*

प्रतिशोधक अर्जुन

जीवनमे संघर्ष छैक
अभावक कौरव,
धूर्तक शकुनि,
कपटी जयद्रथ,
षड्यंत्री द्रोण,
जन्मजात युद्धवीर
अभिमन्यु-मोन
आ तन धनुर्वीर अर्जुन—
विघटनकारी शक्तिक
करबा लय उन्मूलन

सुदूरगत अर्जुन,

बाधाक चक्रव्यूह
तोड़बा लय, फोड़बा लय
तरंगित, उमंगित भ'
ओझरायल अभिमन्यु

मानल, अभिमन्यु सूति रहल,
चिर निद्रामे सूति रहल,
किन्तु, बिसरह नहि हे!

कौरव, शकुनि, जयद्रथ, द्रोण—
प्रतिशोधक अर्जुन
एखनहुँ धरि जीवित अछि,
जी...वि...त...अछि।

पातक किलोल : आस्थाक दर्द

बिहाड़िमे उड़ियाइत पातक किलोल
कि क्षणमे वृक्ष भागि जाइछ हमरासँ दूर
कि धूमिल कम्बलसँ वातायनकें
अछि झाँपि देने आन्हर बिहाड़ि ई।

छोट-पैघ सब तरहक, सबहक पलकें
झाँपि रहल अछि, अनास्थाकेर कण कते,
कि दृश्य झलफल, अदृश्य, झलफल मार्ग—
सब अज्ञात, छल जे ज्ञात से अज्ञात तैं।

कोन समय ई? साँझ? दुपहर? वा राति?
भेल पराजय? गतिकेर की आइ काल सँ?

की थिक ई? संक्रमण अथवा विपर्यय?
विध्वंशक सर्किलमे घेरल सबहक प्राण!

छोट-पैघ वृक्षकेर खसल-झड़ल पात
कागजी अस्तित्व ल' अंगदीप पैर पर
प्रार्थना करैछ–'जागह हे ज्योतिपुंज!
हमरा नहि बरु, बुझा दहक बाट बतहा बिहाड़िकें।'

पहिल तारीख

चुल्हा आइ ठंढा,
जरय न जारनि
जरि रहल जरलाहा
लक्ष्मी, सीता, सावित्री
शाप-विरहित नल-दमयंतीकेर
धूल-धूसरित जर्जर काया–
बेटर हाफ।
श्रम-स्वेद-सिक्त सुन्दर सिन्दुर-विन्दु
यमुनाक कछेरमे सरस्वती उमड़ि भेलीह गंगा
विच्छिन्न केश, आर्द्राक मेघ,
सर्दियाह घर-आँगन उजड़ल–
अपर हाफ।
फूलवती गर्भवती कुमारि मन-कुन्तीकेर
बढ़ि रहल कुंठा, थर्मामीटरक पारा
धूम भरल, स्वाती उमड़ल
पल-पल पर पसरल ओस–
साफ-साफ।

व्याकुल बेमन, अनमन सबखन
ऊपरमे आकाश, भरल तारागण
सीता एकसरि बैसि अशोक-वन
ताकि रहल आंगुर पर एकटक
तारीख पहिल, तारीख पहिल–
जागि-जागि।

जनतंत्रक दुर्घटना

फट्! फट्! फट्! फटाक्!!!
जनतंत्रक टंकी फाटि गेल
जनताक मोन पर जमल बर्फ
चेतनाक सूर्यसँ पघिल-पघिल
कैक क्यूसेक्स जल-प्लावन कयल

उठल अछि शब्दक भयंकर बिहाड़ि
गीड़ लेत हमरा सबकें,
किताबक फोहार, अखबारक वर्षा
भाषणक नदी आ बहसक नाला,
सेमिनारी नहर, आश्वासनक बान्ह,
विधानसभाक पोखरि, आ संसदीय डाबर
सब उधिआ रहल अछि
उमड़ि रहल अछि हमरा चारुकात

आ हम सब भरि मुखहर पानिमे दहाइत छी
गाम आ शहर, गली आ सड़क,
खेत आ फैक्ट्री, घर आ ऑफिस–
शब्दक एहि बाढ़िमे

दहाइत भसियाइत सब किछु
परस्पर टकरा क' टूटि रहल अछि—
योजनाक फाइल आ इतिहासक पात
भविष्यक कट्रैक्ट आ विज्ञानक प्रबन्ध
'हम कतय छी? कतय जायब हम?
डल झील कि ट्राम्बेक रिएक्टर
हाजीपीरक चौकी कि ऊटीक जेल?'
से पूछैत छथि श्री...'की औ...?
मनुक्ख आ कि राशन कार्ड?'
उत्तर छैक क्रान्ति आ क्रान्ति
आ बैसैत छथि जाक'
चाहक दोकानमे

एलेक्ट्रिक गर्ल

भारतक एक टा बुढ़बा जादूगर
अनने छल विश्वक मेलामे
सबकें देखएबाक हेतु फ्री
एकटा एलेक्ट्रिक गर्ल

'लोकतंत्रात्मक' मंत्रद्रष्टा
लाठीसँ फोड़ि कपार
नादिरशाह आ हिटलरकें
गाड़ि देने छल अहिंसाक कबूतर
मुदा 'सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न' लोक
उठा देलनि फ्री पास
आ लागू भेल अछि आब
एलेक्ट्रिक गर्लक देखबा लय चमत्कार
केवल हाइ रेट आ स्टुडेन्टस् कन्सेशन मात्र

अपूर्व अछि लागल मेला
लोक सभक ठेलम-ठेला
भरि रातिमे तीन बेरि, तीन शो
तीन खेप बनैत अछि भरि राति
योजना, बजट आ सरकार
सब क्यो चानी काटि रहल अछि
धन्य हे बुढ़बा जादूगर
केहेन अनलह तों एलेक्ट्रिक गर्ल!

मछुमाछीक खोंता आ हम

हमरा सभक भाग्य-भवनमे
लागल अछि बड़की टा मधुमाछीक खोंता
मधुमाछी सब भन-भनाइत अछि
संविधान, प्रजातंत्र, चुनाव आ वोट
घुमक्कड़ि रानी मधुमाछी भेल असोथकित
दिन-राति फ्लाई करैत-करैत
समाजवादी सेज पर बैसल अछि
थाकल-ठेहिआयल करोड़ियाक जर्जर काया
तिरंगाक बाँस लेने ताकि रहल
सतृष्ण आँखियें खोंता, मधु आ मधुमाछी
आ ओम्हर पुबरिया बाधमे उठल अछि भयंकर बिहाड़ि
हड़हड़ा रहल नारियरक गाछ दछिनबरिया बाड़ीक
एह छोड़ू! फुर्सति नहि अछि—
उधारक लेल जाक' बैसबाक अछि दोकनदार लग
पीबाक अछि दू-चारि टा बीड़ी वा सिगरेट
दोकानक भीड़ छँटबाक प्रतीक्षामे।

दूटा लघु कविता

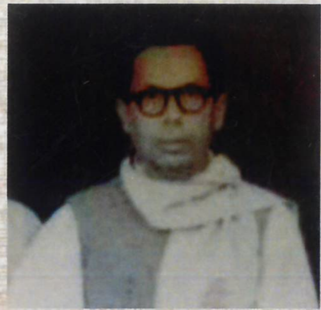
दोस्ती

बिसरि गेल छी, बिसरिये रहल छी
बिसरिये तँ जायब, अप्पन आ आन
दोस्ती भ' गेल अछि
भाड़ाक मकान,
रेन्ट : एक कप चाय आ एक खिल्ली पान।

युद्ध आ शान्ति

सत्य बनल शक्तिक पुजारी
सेनाक मदति पर चलै विश्व-यारी
हे बन्धु हमर! शान्तिक माने
भीषण युद्धक तैयारी
आ युद्धक माने
शान्ति उत्पादक कारखाना
निरन्तर चालू,
मन-मस्तिष्कमे, आ कि वियतनाममे।

• • •



नवकविलोकनि ई मानैत छथि जे जीवन-प्रक्रियाक कोनो व्यवस्था, कोनो सत्य, कहियो आ कतहु अमान्य भ' जाइछ, जे आचरण आ चरित्र, अपना देशक परिवेश, समाज-स्वीकृत मूल्य आ मान्यता आदिक आधार पर निर्मित आ विकसित होइछ। मुदा परिभाषाक वास्तविक व्याकरण-विरूद्ध होइतो नवीन मूल्य आ मान्यता विभिन्न देश ओ समाजक सम्पर्कसँ (जे आइ एकदम घनिष्ठतम भ' गेल अछि) पूर्वस्थापित मूल्यकें, परम्परागत अर्थकें बदलैत रहैछ। ओकर मापदंड आ मानदंड नितान्त परिवर्त्तनशील आ अस्थिर छैक, तें परम्पराक पोखरिक हरियरका-सड़लाहा पानिकें अवगाहन योग्य नहि बूझि क' ओकरा बहा देब' चाहैत अछि आ नवका पानि ओहिमे खसब' चाहैत अछि, जाहिसँ ओ स्वच्छ आ टटका बनल रहैक, से खाहे ओहि सड़लाहा पानिक संग किछु पोसल-पालित रोहु-भुन्नो कियैक नहि बहरा जाउ!

अस्तु, नवकविलोकनि अपन भोगल यथार्थक अनुभूतिक लेल शब्दकें नवीन अर्थवत्ता देबाक लेल प्रतिबद्ध छथि। एतदर्थ क्षण-विशेषमे तीव्र संवेगक सूक्ष्म भाववहनक शाब्दिक अक्षमताकें बूझैत एकदम अनिवार्य, युगानुरूप आपाततः वास्तविक आ नव बोधानुकूल नवीन बिम्ब, नवीन प्रतीक, नवीन उपमान आदिकें नवकवितामे साधन मानल गेल अछि। जनसाधारण द्वारा ई नवीन साधन पूर्ण परिचित आ अभिज्ञात नहि रहलासँ नवकवितामे दुर्बोधता वा दुरुहता उत्पन्न होइत अछि। मुदा एकरा बूझब केवल आवश्यकेटा नहि, हमरा सभक सामाजिक दायित्व थिक, जे नहि भेने हमरा-लोकनि पछड़ले रहि जायब आ इतिहासमे अपराधी मानल जायब।

किसुन संकल्प लोक
सुपौल (बिहार)